

मास्टर्स इन  
मास्टर्स इन कौटिल्य  
राज्यशास्त्र और अर्थशास्त्र (MKPE)

**Study Material**

(For Private Circulation only)

**हिंदू राजा और राजत्व का विचार (MK04)**

भीष्म स्कूल ऑफ इंडिक स्टडीज

[www.bhishmaindics.org](http://www.bhishmaindics.org)

## Contents

यूनिट १ : स्वायंभुव मनु – मानवों का पहला नेता.....	5
१.१ पृथु.....	9
१.२ मनु.....	15
यूनिट २ - प्रमुख इतिहासपूर्व सम्राट.....	18
यूनिट ३ – राजा.....	31
३.१ भावी राजा का प्रशिक्षण.....	31
३.२ स्वयं नियंत्रण.....	33
३.३ राजा के कर्तव्य : .....	35
३.४ राजा की सुरक्षा.....	38
३.५ राजा की सुरक्षा : .....	41
३.६ विद्रोह, बंद, षडयंत्र और देशद्रोह .....	46
३.७ असंतोष का अंदाज लगाना और असंतोष टालना .....	47
३.८ प्रजा में नैराश्य.....	48
३.९ विद्रोह और बंड.....	50
३.१० विश्वासघात .....	56
३.११ उत्तराधिकार.....	58
३.१२ एक राजा की मृत्यु पर उत्तराधिकार का आयोजन.....	61
३.१३ राज-प्रतिनिधि : .....	63
३.१४ राजत्व की असामान्यता : .....	64
३.१५ राजत्व कैसे अस्तित्व में आया? .....	66
३.१६ राजा के उत्तरदायित्व : .....	69
यूनिट ४ : शिशुनाग, नंद और मौर्य वंश .....	72
४.१ शिशुनाग वंश .....	72
४.२ नंद वंश .....	73
४.३ : चंद्रगुप्त .....	78

४.४ मौर्य वंश .....	81
युनिट ५ : शुंग और कण्व वंश.....	84
५.१ शुंग वंश .....	84
५.२ कण्व वंश.....	86
युनिट ६ : सातवाहन राजवंश (आंध्र राजवंश) .....	89
६.१ राजा शूद्रक प्रथम विक्रमादित्य (२३०० – २२०० ईसा पूर्व) और राजा शूद्रक द्वितीय.....	90
(८५६-७५६ ईसा पूर्व) की तिथि .....	90
६.२ सातवाहन सोमदेव के कथासरित्सागर के पुरालेख.....	93
६.३ सातवाहन राजवंश का शासन काल (८२६-३३४ ईसा पूर्व) .....	94
युनिट ७ : गुप्त राजवंश (३३४-८९ ईसा पूर्व) .....	97
७.१ गुप्त वंश का उदय.....	97
७.२ समुद्रगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य .....	100
७.३ गुप्त साम्राज्य का पतन .....	104
७.४ गुप्त वंश का कालक्रम .....	107
युनिट ८ : वाकाटक राजवंश .....	108
८.१ वाकाटक की मुख्य शाखा का कालक्रम ईसापूर्व में .....	112
८.२ वाकाटक की वत्सगुल्मा शाखा .....	113
युनिट ९ - कुषाण वंश.....	115
९.१ कुषाण वंश का मूल .....	115
९.२ प्रारंभिक कुषाणों का कालक्रम (ई.पू. १२३०-१०००).....	118
९.३ कुषाण साम्राज्य का पतन .....	119
युनिट १० : चालुक्य.....	122
१०.१ बदामी के प्रारंभिक चालुक्य .....	122
१०.२ प्रारंभिक चालुक्य शक युग का कालक्रम .....	128
युनिट ११ : राष्ट्रकूट.....	130
११.१ प्रारंभिक राष्ट्रकूटों की वंशावली.....	130

११.२ प्रारंभिक राष्ट्रकूटों की मुख्य शाखा .....	132
युनिट १२ : कलचुरि – चेदि राजवंश .....	133
१२.१ वलखा के महाराजा .....	133
१२.२ त्रिकुटक .....	134
यूनिट १३ : पल्लव राजवंश .....	137
१३.१ उत्पत्ति .....	137
१३.२ पल्लव वंश .....	138
युनिट १४ : चोल वंश .....	142
१४.१ उत्पत्ति .....	142
१४.२ चोलों का कालक्रम .....	143
युनिट १५ : काकतीय राजवंश .....	148
१५.१ काकतीयों का मूल उगम .....	148
१५.२ काकतीय राजाओं के शिलालेख .....	154
युनिट १६ : विजयनगर साम्राज्य .....	156
१६.१ विजयनगर साम्राज्य का उदय : .....	156
युनिट १७ : यादव राजवंश .....	160
१७.१ यादव साम्राज्य का कालक्रम : .....	162
१७.२ शिलालेख .....	163

© Bhishma School of Indic Studies

Website: [www.bhishmaindics.org](http://www.bhishmaindics.org)

1. STRICTLY FOR PRIVATE AND RESCTRICTED CIRCULATION ONLY
2. Pune India CityJurisdiction

## युनिट १ : स्वायंभुव मनु – मानवों का पहला नेता

---

जैसा कि हम पूर्व भाग में देख चुके हैं कि वर्तमान वराह-कल्प के इस स्वायंभू मनु का काल लगभग २६००० पूर्व-काली काल या २९१०१ ई.पू. पुराणों और महाकाव्यों में हमें स्वयंभू या ब्रह्मा के कई संदर्भ मिलते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे सर्वशक्तिमान ईश्वर-विष्णु के नाभि या मध्य भाग से उत्पन्न कमल से निकले हैं। इस ब्रह्मा को मानस-पुत्र भी कहा जाता है जो मानसिक रूप से भगवान का पुत्र है। यह ब्रह्मा कैसे आया और अपनी रचना की प्रक्रिया कैसे शुरू की, इसके बारे में कई और व्युत्पत्तियाँ हैं।

यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि यह स्वायंभुव मनु एक पुरुष हैं और इस कल्प वराह के प्रारंभ में पैदा हुए पुरुषों के पहले राजा या नेता हैं। पूर्व-वराह-कल्प या देवयुग में, देव पुरुषों ने हवाई जहाजों का उपयोग किया और वे अपने निवास स्थान से दूसरी दुनिया में चले गए, पृथ्वी, जो तीव्र गर्मी की बौछारों से त्रस्त थी। वराह-मेघ या स्थिर और निरंतर तीव्र वर्षा-गिरावट से पृथ्वी के ठंडा होने और रहने योग्य होने के बाद, स्वायंभुव मनु दृश्य पर प्रकट हुए, शायद अंतरिक्ष - यान के माध्यम से जिसने उन्हें पृथ्वी पर गिरा दिया। वह अपने जैसा जीव पैदा करना चाहता था और पृथ्वी के लोग। वह इस उद्देश्य के लिए एक पत्नी चाहता था। हरिवंश (३-१४-२२) हमें बताता है:

*शरीरार्धदतो भार्यं समुत्पादितवन सुभम्*

उन्होंने अपने शरीर के आधे हिस्से से एक बहुत ही शुभ और अच्छी पत्नी बनाई।

बाइबिल की कहानी इससे काफी मिलती-जुलती है। यह अभिलेख करता है: "और यहोवा परमेश्वर ने अँडम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और अँडम जीवता प्राणी बन गया... उसके लिए पूरक। इसलिए यहोवा परमेश्वर गहरी नींद में था, आदमी पर गिर गया और जब वह सो रहा था, तो उसने उसकी एक पसली ली और उसके स्थान पर मांस को भर दिया, और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को बनाया जो उसने निकाली थी पुरुष से स्त्री में और उसे पुरुष के पास ले आओ" (उत्पत्ति २-७, २० से २२)।

कौतुहलपूर्ण रूप से भविष्य पुराण बाइबिल में दी गई सृष्टि की प्रक्रिया को संदर्भित करता है:

*"आदमो नाम पुरुष पत्नी हव्यवती तथा*

प्रथम पुरुष का नाम अँडम और उसकी पत्नी का नाम काव्यवती था।" बाइबिल में अँडम की पत्नी का नाम इन्ह दिया गया है।

यह भविष्य पुराण हमें यह भी बताता है कि वैवस्वत मनु अँडम के १६००० वर्ष बाद आया दोनों में १६००० वर्षों का अंतर था। और स्वायंभुव मनु, जैसा कि पहले देखा गया है, केवल ४३ युगों और ४३ x ३६०-१५४८० या लगभग १६००० वर्षों का है। इसलिए बाइबिल के एडम को पुराणों के स्वायंभुव मनु के रूप में लिया जा सकता है। विराट इस मनु से पहले, भगवान ब्रह्मा ने ऋषियों को बनाया था लेकिन वे पृथ्वी के लोगों के प्रति उदासीन थे। इस मनु को ब्रह्मा ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर संतान पैदा करने के लिए नियुक्त किया था। स्वायंभुव मनु को विराट के नाम से भी जाना जाता है - जो इस संसार का सबसे महान और सर्वव्यापक शासक है। अपनी पत्नी सतरूपा से उन्हें दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ प्राप्त हुईं। दो पुत्रों का नाम प्रियव्रत और उत्तानपाद था और तीन पुत्रियों का नाम था : आकुति, देवहूति और प्रसूति। इन तीनों पुत्रियों का विवाह क्रमशः रुचि, कर्दम और दक्ष नामक अन्य शासकों से हुआ। ये तीन रुचि, कर्दम और दक्ष प्रजापति कहलाते हैं जो अपनी प्रजा के रक्षक या मानव जाति के पूर्वज हैं।

प्रसिद्ध दार्शनिक कपिल देवहूति और कर्दम के पुत्र हैं। प्रसूति के माध्यम से, जिसे धारिणी भी कहा जाता है, दक्ष की साठ बेटियाँ थीं। इनमें से आठ का विवाह धर्म से, ग्यारह का रुद्र से और एक सती का विवाह शिव से और अन्य तेरह का विवाह कश्यप से हुआ था। सत्ताईस चंद्रमा को अर्पित किए गए थे। ये सत्ताईस नक्षत्रों के नाम हैं।

ब्रह्म-वैवर्त पुराण में, ये और मनु की आगे की वंशावली और ऋषियों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भगवान ब्रह्मा ने स्वयंभूवा के साथ मरीचि नाम के अन्य प्रजापतियों की रचना की जिनके दिमाग से कश्यप का जन्म हुआ। अत्रि एक और प्रजापति थे जिनकी आँखों से चंद्र (चंद्रमा) का जन्म हुआ। एक अन्य प्रजापति प्रचेतास ने अपने मन के माध्यम से ऋषि गौतम को जन्म दिया। पुलस्त्य एक अन्य प्रजापति ने अपने मन के माध्यम से ऋषि मैत्रा वरुण को प्राप्त किया।

दक्ष की पुत्री सती, पार्वती बन गई और उन्होंने भगवान शंकर से विवाह किया।

कश्यप की देवताओं की माता अदिति और दैत्यों की माता दिति नाम की दो पत्नियाँ थीं। उनकी अन्य पत्नियाँ भी थीं। कद्रू पक्षियों की माता थी और सुरभि गायों की माता थी। सरमा कुत्तों और अन्य चौपायों जानवरों की माँ थी। दानवों नामक तीसरे प्रकार के मनुष्यों का जन्म प्रजापति कश्यप की एक और पत्नी दनु के माध्यम से हुआ था।

अदिति ने इंद्र, आदित्य आदि देवताओं को जन्म दिया। इंद्र की पत्नी शची ने जयंत को जन्म दिया।

सवर्ण या संज्ञ देवताओं के रथ निर्माता विश्वकर्मा की पुत्री थी। उसने अपने पति आदित्य, सूर्य द्वारा सुनैस्कुरा और यम को जन्म दिया। उसने यमुना नदी और कालिंदी इन बेटियों को भी जन्म दिया।

भगवान ब्रह्मा द्वारा बनाए गए ऋषि थे: मरीचि, नारद, प्रचेतस, कर्दम, क्रतु, अंगिरस, भृगु, अरुणी, हांसी (योगिंद्र), वशिष्ठ। यति, पुलह, पुलस्त्य, अत्रि, पंचशिख, अपान्तरतम, वधु, रुचि, रुद्र, सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार। ये सभी ब्रह्मा के प्रत्यक्ष वंशज हैं। ये सभी व्यक्ति, पूर्व कल्प के देवता हो सकते हैं, जो स्वयंभुव मनु के साथ अपने वायुयानों के माध्यम से पृथ्वी पर आए थे।

ऊपर दिए गए नामों से पता चलता है कि स्वायंभुव मनु के काल में इन महानुभावों ने लोगों को पृथ्वी पर शासन करने और प्रशासन स्थापित करने में सहायता प्रदान की थी। पालन के लिए उचित अनुष्ठान भी स्थापित किए गए ताकि आम आदमी इनका सावधानीपूर्वक पालन करे और आनंद प्राप्त करे और अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण तरीके से जी सके।

मनु स्वायंभुव ने वेदों को पुनर्जीवित किया और प्रशासनिक और कर्मकांड की स्थापना की प्रक्रियाओं के रूप में वे पहले कल्प में देखे गए थे

तैत्तिरीय संहिता में इसके बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है –

*“एषा वै प्रथमा रात्रिः संवत्सरस्य यद् उत्तराफाल्गुनि*

यह वर्ष की पहली रात है जब वसंत विषुव उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में है।”

१९८६ ई. में भी बसंत विषुव इसी नक्षत्र में था। इससे पता चलता है कि २७ नक्षत्रों का एक पूरा चक्र १९८६ ई. में पूरा हो चुका था। इसकी सबसे पुरानी तिथि कब थी? ७२ वर्ष प्रति डिग्री की दर से यह १९८६ से पहले ३६०x७२ – २५९२० वर्ष के लिए काम करेगा। इस अवधि की गणना २५८६८ वर्षों में की जाती है ताकि विषुव पूर्वकाल अपने पूर्ण चक्र को पूरा कर सके। इसका अर्थ है कि तैत्तिरीय संहिता कथन द्वारा इंगित स्थिति वर्तमान समय से २५८६८ वर्ष पूर्व या २५८६८-१९८६-२३८८२ ईसा पूर्व है। स्वायंभुव मनु का प्रारम्भ काल है २९१०१, ऊपर दिखाया गया है। बाल गंगाधर तिलक का विस्तृत जांच के बाद मत था कि वैदिक काल में वर्ष का प्रारंभ वसंत विषुव से होता था।

इससे पता चलता है कि स्वायंभुव मनु ने अपने आगमन के बाद वेदों और अन्य साहित्य को पुनर्जीवित किया था और यज्ञ अनुष्ठान की प्रक्रिया निर्धारित की थी और इसे बड़े पैमाने पर मनाया गया था। लगभग २३८८२ ई.पू. वैदिक संहिताओं की रचना भी की गई थी। यदि हम उन दिनों की लगभग ४०० वर्षों की जीवन प्रत्याशा को ध्यान में रखते हैं, तो यह कहा जा सकता है कि लगभग १०-१५ पीढ़ियों या लगभग ५ से ६ हजार वर्षों के भीतर, उन दिनों के लोगों की स्थिति सभ्यता की अत्यधिक विकसित अवस्था थी। कृषि कार्य उस समय का सामान्य पेशा था। सामान्य रूप से लोगों ने एक सुखी और संतुष्ट व्यवस्थित जीवन का आनंद लिया।

नक्षत्रों (नक्षत्रों), सप्तर्षियों (सात संतों - उर्सा प्रमुख नक्षत्र) को दिए गए नाम इस काल के ऋषियों, महापुरुषों और महिलाओं के हैं।



अगले चार मनु भी स्वायंभुव मनु के वंशज हैं। ब्रह्माण्ड (१-२-३६-६५) ऐसा कथन करता है। वो कहता है:

---

*स्वारोचिसश्कोत्तमो अपि तमसो रैवतस्तथा।*

*प्रियव्रतानवाय ह्येते चत्वारो मनवः स्मृताहि।*

---

चार मनु अर्थात् स्वरोचिष, उत्तम, तमसा और रैवत प्रियव्रत के वंशज थे।" हमने देखा है कि प्रियव्रत स्वायंभुव मनु के दो पुत्रों में से बड़े थे। वह महान पराक्रमी व्यक्ति थे। स्वरोचिष मनु चौदह मनु में दूसरे स्थान पर थे। प्रथम मनु स्वायम्भुव की पुत्री अकुति का पुत्र था। उसका विवाह प्रजापति रुचि से हुआ था। उत्तम, तमसा और रैवत प्रियव्रत के तीन पुत्र थे। वे क्रमशः तीसरे, चौथे और पांचवें मनु बने।

ध्रुव उत्तानपाद के पुत्र थे जो स्वायंभुव मनु के दूसरे पुत्र थे। उन्होंने तपस्या की और जीवन की समग्र दृष्टि, आध्यात्मिक और लौकिक के बीच सामंजस्य का उदाहरण पेश किया। ध्रुवतारे को जो आकाश में लगभग स्थिर है अर्थात् अनादिकाल से एक ही स्थान पर देखा जाता है, ध्रुव का नाम मानव-जाति के लिए उनकी अद्वितीय सेवा के स्मरण में दिया जाता है। हालाँकि यह तारा भी लगभग ९०९० वर्षों में थोड़ा सा चलता है और इसे ध्रुव-संवत्सर कहा जाता है जैसा कि पहले कहा गया है।

पंक्ति में छठा चक्षुष मनु भी अपनी पुत्री के माध्यम से स्वायंभुव मनु से संबंधित है। पृथु राजा को चक्षुष मनु की पंक्ति में पाँचवाँ बताया गया है। वंशावली है: १. चक्षुष मनु, २. वृ, ३. अंग, ४. वेन, ५. पृथु।

## १.१ पृथु

पृथु प्राचीन काल के सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक है। दर्ज किए गए इतिहास में वह पहला अभिषिक्त राजा है शतपथ ब्राह्मण (५-३-५-४) दर्ज करता है: "पृथुर्वै न्यो मनुष्याणां प्रथमो अभिषिषिचे, - वेना का पुत्र पृथु पहला राजा था जिसे (लोगों द्वारा) ताज पहनाया गया था।" हरिवंश (१-५-२९) कहता है:

“आदि राजा तदा राजा पृथुर्वैन्यः प्रतापवान्। वेना का पुत्र पहला पृथु और बहुत शक्तिशाली और न्यायप्रिय राजा था।” ब्रह्माण्ड पुराण टिप्पणी (१-२-३३-१०८) अंगात् सुनीतापत्यं वै वेन्मेकं व्यजायत अंग से सुनीता का जन्म वेना से हुआ था”

पृथु के पिता वेन विकृत प्रतिभा के व्यक्ति थे। वह धार्मिक मार्ग का पालन नहीं करते थे और अपनी प्रजा के कल्याण के लिए प्रयास करते थे। वह दूसरों की पत्नियों का अपहरण करते थे - उन दिनों दुर्लभ बात, खासकर शासकों के बीच। उन्होंने कृषि खेती की उपेक्षा की और अपने विषयों के बीच सभी प्रकार के दोषों को प्रोत्साहित किया।

मुनियों और पुरुषों के नेता उससे नाराज हो गए और उसके शरीर से विशेष रूप से उसके हाथ से, बड़े प्रयासों से, उन्होंने पृथु को एक व्यापक कंधे और एक बहुत ही उज्ज्वल युवक प्राप्त किया। (मत्स्य पुराण ९.४ से १०)। तब लोगों ने उन्हें (वेना) पदच्युत कर दिया और उनके स्थान पर उनके पुत्र पृथु को उनके राज्याभिषेक कर के राजा के रूप में स्थापित किया। पृथु के जन्म की कथा बड़ी विचित्र है। इसका मतलब यह हो सकता है कि अपने बेटे को स्थापित करने और खुद जंगल में सेवानिवृत्त होने में एना का हाथ था।

इस पृथु ने कई कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत की और बहुत बड़े पैमाने पर कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने घरों और महलों का निर्माण किया और गांवों और कस्बों की स्थापना की। अपने दिनों में, उसने ऊपर आकाश में और नीचे पहाड़ों और नदियों में अलग-अलग सितारों को नाम दिया। उन्होंने चिकित्सा, इतिहास, भूगोल, सैन्य, राजनीतिक अर्थव्यवस्था आदि विज्ञानों को भी प्रोत्साहित किया। इस पृथु के नाम पर इस पृथ्वी का नाम पृथ्वी रखा गया। यह पृथ्वी मानो उनकी प्रिय पुत्री थी।

वह धनुर्विद्या के प्रवर्तक थे “*पृथुस्त्युत्पादयामास धनुराद्यमरिदंमः* - पृथु ने अपने शत्रुओं को वश में करने के लिए पहला धनुष और बाण निर्मित किया।” उन्होंने अपनी प्रजा के लिए विभिन्न अवसरों पर मनाए जाने वाले अनुष्ठानों का भी आयोजन किया। इसके लिए पुरोहिताई का सृजन किया गया। पुजारियों में अंगिरस ब्राह्मण प्रमुख थे। यह अंगिरस बेशक पहले महान ऋषियों में से नहीं थे, जिनका जन्म मनु स्वायंभुव

के साथ हुआ था। यह एक पारिवारिक नाम है। इस परिवार ने कई संत और प्रख्यात पुजारी पैदा किए। इसी प्रथम अंगिरस ने अग्नि के प्रयोग की खोज की थी।

पृथु को "राजा - प्रजनुरन जनत" की उपाधि मिली - उन्होंने अपने लोगों के कल्याण के लिए प्रयास किया प्रजा, इसलिए उन्हें राजा कहा जाता था।" उनके समय के दौरान अदालत के अधिकारी पसंद करते थे सुता (इतिहास के इतिहासकार), मगध (दरबारी इतिहासकार) कैराना और (दरबार के गायक) बनाए और नियुक्त किए गए। उनके समय से ही नियमित इतिहास लिखा जाने लगा।

उन्होंने रास्ते, राजमार्ग और तालाब बनवाए। पशु प्रजनन, खनन की कला और वाणिज्य को बढ़ावा दिया। भौतिकी और रसायन विज्ञान जैसे विज्ञानों को प्रोत्साहित किया गया। वह पहला राजा था जिसने अपने प्रशासन को संगठित आधार पर स्थापित किया। उनके उत्तराधिकारियों ने इसका अनुसरण किया और इसमें सुधार किया। वे ऋग्वेद के कुछ ऋचाओं के द्रष्टा भी हैं।

### **उनका काल :**

उनका काल निर्धारित करना कठिन है। उसने चाक्षुष मन्वंतर के दौरान शासन किया। यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि मनु अपने समय के बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति थे और सभी पहलुओं में मानव जाति की प्रगति के गति-नियंत्रक थे। जब वे जीवित थे तब वे शासक थे, लेकिन स्वर्ग में निवास के लिए उनके जाने के बाद, अन्य शासकों ने उनका अनुसरण किया। पृथु इस कल्प के पहले अभिषिक्त राजा थे, फिर भी उन्हें मनु नहीं माना जाता है। चाक्षुष अपने समय का नेता था और पृथु ने अपने मनु द्वारा जो कुछ भी निर्धारित किया था उसमें बड़ी सफलता हासिल की।

पृथु चाक्षुष छठे मनु से पाँचवें स्थान पर था। प्रथम मनु के काल का प्रारंभ २९१०१ ई. पू. और वैवस्वत मनु की (१०८०० कलि + ३१०१ =) १३९८१ ईसा पूर्व, दोनों के बीच का अंतर १५१२० वर्ष है, पृथु कहीं १३९८१ ईसा पूर्व के करीब है।

वैवस्वत मनु को कुल १४ मनुओं में सातवें स्थान पर दिखाया गया है। लेकिन जैसा कि हम अभी देखेंगे, वह शायद उन सबके बीच आखिरी हैं।

अन्य सात मनु हैं (१) मेरु सावर्णि, (२) दक्ष सावर्णि, (३) ब्रह्म सावर्णि, (४) धर्म सावर्णि, (५) रुद्र सावर्णि, (६) रौच्य और (७) भौत्य। पुराण हमें बताते हैं कि उनका आना अभी बाकी है। वे भविष्य के मनु हैं।

लेकिन पांच सावर्णी मनु ब्रह्माण्ड पुराण के बारे में कहता है:

---

*सावर्णमनवस्तात पंच तांश्च निबोध मे।*

*परमेष्टिसुतास्तात मेरुसावर्णतां गताः।*

*दक्षस्येते दौहित्राः प्रियायाः तनयः नृपः।*

---

हे राजा, मेरे द्वारा सावर्णि मानुष के विषय में समझ लो। वे अपनी बेटी प्रिया के माध्यम से दक्ष प्रजापति के पोते हैं।" वायु-पुराण में यह भी कहा गया है कि वे दक्ष के पुत्र रोहिता के पुत्र हैं। यह दर्शाता है कि चार सावर्णी मनु में से कुछ रोहिता के पुत्र थे और कुछ प्रिया के रोहिता स्वयं को आठवां मनु मेरु सावर्णि (वायु ४-१००-५८,३०) कहा गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सातवें मनु की सूची में वैवस्वत और अन्य के रूप में। आठवें के बाद के प्रति-लेखकों ने यह मान लिया कि वैवस्वत सातवें थे और अन्य उनके बाद आए। वैवस्वत को सप्तम कहने का कारण केवल सुविधा थी। सभी सावर्णी मनु वैवस्वत के पिता विवस्वान से सीधे जुड़े हुए थे। यदि हम स्वयंभुव और वैवस्वत के बीच समय की दूरी को ध्यान में रखते हैं, तो यह कम से कम १५१२० मानव वर्ष है। स्वायंभुव के बाद आने वाले पहले चार स्वरोचिसा, उत्तम, तमसा और रैवत, स्वायंभुव के पुत्र प्रियव्रत के वंशज थे। दूसरों को रुचि और दक्ष जैसे प्रजापति कहा गया।

स्वयंभुव के साथ मुख्य प्रजापति भी ब्रह्माद्वारा निर्मित थे।

---

*“भृग्वंगिरो मरीचींश्च पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्।*

*दक्षमत्रिं वसिष्ठं च निर्ममे मानसान् सुतान्। ब्रह्माण्ड १-२-१-१८*

---

भृगु, अंगिरस, मरीचि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, अत्रि और वसिष्ठ ब्रह्मा द्वारा अपने मन (मानसिक इच्छा) के माध्यम से बनाए गए नौ ऋषि थे। - दोनों को ब्रह्मा ने अपनी मानसिक प्रक्रिया के माध्यम से बनाया। ब्रह्मा ने भी उसी तरह, धर्म, रुचि, रुद्र के माध्यम से बनाया।

ब्रह्मा ने जीवों के साथ ब्रह्मांड को सात प्रक्रियाओं के माध्यम से बनाया, (१) मानसिक, (२) आंखों के माध्यम से - सूर्य और सितारों की तरह (३) सरस्वती की तरह वाणी के माध्यम से, (४) नारद की तरह श्रवण के माध्यम से, (५) नाक के माध्यम से - फूलों में सुगंध के समान, (६) अण्डज - पक्षियों के समान और (७) मनुष्य - कमल की वनस्पति के माध्यम से नर और मादा तत्व के मिलन से उत्पन्न हुआ है। कश्यप भी ब्रह्मा द्वारा निर्मित एक अन्य प्रजापति हैं।

तो चाक्षुष मनु के बाद जो ध्रुव के पौत्र रिपु के पुत्र थे (हरिवंश २-१५), रौच्य और भौत्य मानुस आए।

---

*“चाक्षुषस्यान्तरे अतीते प्राप्त वैवस्वतस्य*

*रुचेः प्रजापतेः पुत्रो रौच्यो नामाभवत् सुतः। वायु - १००- ५४*

---

चाक्षुष मनु के समय के बाद और वैवस्वत मनु से पहले रुचि प्रजापति के पुत्र रौच्य मनु का उदय हुआ।”

इसी प्रकार रौच्य मनु के तुरंत बाद भौत्य मनु भी आए। वायु पुराण में एक और कथन है कि विवस्वान् सूर्य के वैवस्वत नाम के दो पुत्र हुए। वे हैं मनु वैवस्वत और दूसरे यम (के देवता मृत्यु), वैवस्वत।

अब यह स्पष्ट हो जाएगा कि सभी मनु वैवस्वत मनु से पहले के थे - केवल यम वैवस्वत के समकालीन थे।

कृत, द्वापर, त्रेता और कलि की गिनती काल्पनिक गणना है, जो इस विचार पर आधारित है कि वर्तमान कल्प के बाद का पहला युग सदाचारी लोगों का था। कालान्तर में अवनति प्रारम्भ हुई और कलियुग में यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई, तदनुसार कलियुग भी ३१०१ (कलि प्रारंभ वर्ष) – १२०० (कलि काल) = १९०१ ई. पू. लेकिन अनादि-अनन्त गणना के अनुसार, हम कहते हैं कि कलि निरंतर है और यह ३१०१ ईसा पूर्व से ४३२००० मानव वर्षों तक जारी रहेगा।

मनु वैवस्वत के शासन की अवधारणा भी प्रतीकात्मक है। सच तो यह है कि वर्तमान कल्प वैवस्वत से १५१२० वर्ष पहले शुरू हुआ है जो कलि से १०८०० के आसपास विकसित हुआ।  $(१५१२० + १०८००) =$  लगभग २६००० वर्ष कलि से पहले के कुल वर्ष हैं, जब से वर्तमान कल्प शुरू हुआ है। बी.सी. कल्प-वर्ष का प्रारंभ  $२६००० + ३१०१ = २९१०१$  होगा या इसके पूर्व  $२९१०१ + १९९२$  ई. ३१०९३ होगा।

मनु और मन्वंतर की अवधारणा भी मनु कहे जाने वाले शासकों की या मनु-वंश की नहीं है। क्योंकि १५१२० वर्षों के दौरान पुराणों के अनुसार भी ५२ से अधिक पीढ़ियां बीत चुकी थीं। यह गणना देती है :  $१५१२० \div ५२ = २९०$  वर्ष मोटे तौर पर प्रति पीढ़ी। चाक सुष मनु और वैवस्वत के बीच मनु में कहा गया है कि १२ पीढ़ियां बीत चुकी थीं। इसका अर्थ होगा  $१२ \times २९० = ३४८०$  या ३५०० वर्ष चक्षुष मनु और वैवस्वत मनु के बीच बीत चुके थे।

ऋग्वेद १-१५८-६ में हमारे पास यह कथन है: "दीर्घतमो ममतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे दिर्घतमो - ममता का पुत्र दीर्घतम १००० वर्ष तक जीवित रहा और फिर ब्रह्मलोक पहुँचा," ऋग्वेद में मनुष्य के जीवन को सामान्य रूप से १०० वर्ष होने का उल्लेख है। दीर्घतमा एक उल्लेखनीय अपवाद था और वह वास्तव में १००० वर्षों तक जीवित रहा था। और इन १५१२० वर्षों के दौरान मनु केवल १४ बताये गये हैं। मनु की अवधारणा उन व्यक्तियों के बारे में होनी चाहिए जिन्होंने मानव जाति की भलाई के लिए कुछ उत्कृष्ट

परिवर्तन किए थे। अपने जीवनकाल के दौरान, वे शासक हो सकते हैं लेकिन अन्यथा उनका प्रभाव स्वायंभुव और वैवस्वत के बीच बना रहा।

स्वायंभुव मनु और चाक्षुष मनु के बीच, यह कहा गया है कि ४० पीढ़ियां बीत चुकी थीं। यदि हम एक पीढ़ी के लिए २९० वर्षों का औसत लें तो पहले मनु और चाक्षुष के बीच की अवधि  $40 \times 290 = 11600$  वर्ष और चाक्षुष और वैवस्वत के बीच की अवधि लगभग  $12 \times 290 = 3480$  वर्ष है। पृथु चाक्षुष से ५ पीढ़ी बाद का था। तो पृथु का काल प्रथम मनु से  $11600 + 5 \times 290 = 13040$  या  $9100 - 13040 = 16040$  और चाक्षुष मनु का  $29100 - 11600 = 17500$  इसवी।

## १.२ मनु

(१) स्वयंभुव प्रथम मनु हैं यह एक निर्विवाद तथ्य है। उसके बाद (२) स्वरोचिसः, (३) उत्तम, (४) तामसा (५) रैवत और (६) चाक्षुष आए।

छठा पहले के बाद ४० पीढ़ियों तक फलता-फूलता रहा। इनका काल कल्प प्रारम्भ के ११६०० वर्ष बाद का है। पहले पांच मनु एक के बाद एक त्वरित उत्तराधिकार में दिखाए गए हैं। जैसा कि हमने ऊपर देखा, ये मनु राजवंशों के संस्थापक नहीं थे, न ही ये वास्तव में शासक थे। वे विधि-निर्माता थे। उन्होंने उस समाज के साथ अपने संबंधों में मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए नियम और कानून निर्धारित किए जिसमें वह रहता था। उनके उत्तराधिकारी पर पहले के प्रभाव की निरंतरता को ऐसे लिया जाता है जैसे कि यह पिता और पुत्र का रक्त संबंध था जैसा कि हम आमतौर पर समझते हैं।

(७) रौच्य (८) भौत्य, (९) मेरु सावर्णी (उसे वैवस्वत के पिता विवस्वान का भाई कहा जाता है) (१०) दक्ष-सावर्णि स्वयंभुव मनु के दामाद प्रजापति हैं। प्रजापति प्रचेतस के पुत्र होने के कारण उन्हें प्रचेतस भी कहा जाता है। जाहिर है कि यद्यपि यह पुराणों में उपलब्ध वंश है, वास्तव में इस दक्ष मनु को स्वयंभुव से कई पीढ़ियों तक हटाया जाना चाहिए। (११) ब्रह्मा-सावर्णी कश्यप प्रजापति हैं, कश्यप को परमेष्ठी या स्वयं ब्रह्मा भी कहा जाता है। (१२) धर्म सावर्णि मनु वह प्रजापति धर्म है। इसके बाद मनु आए (१३) वैवस्वत और उनके भाई (१४) यम - सावर्णि मनु को श्राद्धदेव भी कहते हैं।

अंतिम दो वे हैं जिन्होंने मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए आखिरी बार नियम निर्धारित किए हैं।

भगवान वेदव्यास उन कठिनाइयों से अवगत थे जिनका सामना हम इतिहासकार करते हैं। इन मनुओं के कालक्रम से यह स्पष्ट होता है कि इन सबका सीधा संबंध स्वायंभुव मनु से है और इसलिए इनके बीच १५१२० मानव वर्षों की दूरी इतनी अधिक प्रतीत होती है कि इन पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। हरिवंश पुराण २-५१ से ५६ एक स्पष्टीकरण (गोरखपुर संस्करण) देता है।

जनमेजय ने पूछा: "हे! वैशम्पायन, (वैशम्पायन इस हरिवंश पुराण को अर्जुन के पौत्र, परीक्षित के पुत्र जनमेजय, पांडव नायक को सुना रहे थे)। आपने देवों, दानवों, गंधर्वों और राक्षसों की रचना का विस्तार से वर्णन किया है। दक्ष प्रजापति का जन्म कैसे हुआ, यह भी आपने बताया है।"

"हे! निर्दोष ऋषि! आपने मुझे बताया है कि दक्ष ब्रह्मा के दाहिने हाथ के अंगूठे से पैदा हुए थे और उनकी पत्नी उनके बाएं हाथ से पैदा हुई थी।" ब्रह्माण्ड पुराण में दक्ष की पत्नी को स्वयंभुव मनु की पुत्री प्रसूति बताया गया है। स्वायंभुव मनु स्वयंभू हैं। हरिवंश का कथन है कि यह पुत्री प्रसूति उनके बायें हाथ से जन्मी स्वयंभू पुत्री है। तो विरोधाभास को हल करने के लिए कहा जा सकता है।

"फिर आप कैसे कहते हैं कि दक्ष प्रचेतास के पुत्र थे? दक्ष को मनु की पुत्री का पुत्र बताया। उन्हें आगे चांद के ससुर के रूप में वर्णित किया गया है। हे महातपस्वी, आपने घोर तपस्या की है। कृपया मेरे इन संदेहों को एक ठोस तरीके से हटा दें।"

वैशम्पायन ने उत्तर दिया: "हे राजा! सृजन और विघटन सभी प्राणियों के लिए स्वाभाविक है। ऋषियों के साथ-साथ विद्वानों को भी इन पर कोई संदेह नहीं है।"

"हे पुरुषों के नेता! दक्ष और अन्य समय-समय पर बनाए जाते हैं और वे बार-बार अस्तित्व में रहते हैं। कृपया इस सत्य को याद रखें। विद्वानों को इसमें कोई संदेह नहीं है।"

"इसी प्रकार इनमें से पहले या बाद का प्रश्न ही नहीं उठता। गहन और अनवरत काम और इनसे पैदा हुआ प्रभाव, इन पूर्व ऋषियों और बाद के लोगों के बीच संबंध का कारण था (५६)।"



"यह दक्ष-प्रजापति द्वारा शुरू की गई सृष्टि प्रक्रिया की व्याख्या है",

ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे किसी भी बुद्धिमान पाठक को यह स्पष्ट होना चाहिए कि जिन संदेहों ने उन पर हमला किया, वे जनमेजय द्वारा उठाए गए संदेह भी थे, जो हमसे लगभग ५००० साल पहले पनपे थे। विद्वान द्वारा दिया गया उत्तर यह है कि, ये नाम और निर्माण की प्रक्रिया एक प्राचीन पुरातनता से संबंधित हैं। पिता और पुत्र को अब भी वही नाम दिया जाता है। तब भी वही प्रतिरूप मौजूद था। एकमात्र उपन्यास बिंदु यह है कि शुरुआत में सृष्टि शुरू करने वाले पहले कुछ कैसे पैदा हुए थे। उत्तर यह है कि उनमें से बहुत से स्वयंभू थे। शायद पहली सृष्टि प्रक्रिया में बीज स्वर्ग से गिराए गए हों या सृष्टि के भगवान ने उन्हें अपने में से बनाया हो। एकमात्र कठिनाई जो हम अनुभव करते हैं वह यह है कि केवल कुछ नामों की दी गई वंशावली संक्षिप्त है। बाद में यह कहा जाता है कि प्रथम मनु और अंतिम मनु के बीच की ५२ पीढ़ियाँ बीत चुकी थीं और फिर भी उनके बीच लगभग १५०५० मानव वर्ष बीत चुके हैं। हो सकता है कि शुरुआती दो से तीन हजार वर्षों के दौरान सभी ग्यारह मनु एक के बाद एक पृथ्वी पर अपना कार्यकाल कर रहे हों। चक्षुष का कार्यकाल इस कल्प के प्रारंभ से ११६०० वर्ष का प्रतीत होता है और वैवस्वत और यम का  $११६०० + ३५०० = १५१००$  वर्ष के बाद इस कल्प का हो सकता है। प्रशासनिक और अन्य सभी भौतिक और सामाजिक विज्ञानों के आधारभूत नियम निर्धारित करने वाले पहले व्यक्ति होने के नाते, उनके नाम पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारे पास आते रहे हैं। ये बार-बार दोहराए गए, वायु पुराण, "पुनरुक्तत बहुतत्त्व न वक्ष्ये तेषु विस्तारम् - क्योंकि एक ही नाम बार-बार दोहराया जाता है, ये कई हैं, इसलिए मैं इनका विवरण यहां देने से बचता हूँ।"

हालाँकि, ध्यान देने योग्य बात यह है कि अंतिम मनु वैवस्वत के बाद, इन मनु के नाम बाद के अभिलेखों में प्रकट नहीं होते हैं। इस पूर्व-ऐतिहासिक काल के दौरान इतिहास रचने वाले एकमात्र व्यक्ति पृथु हैं। उसके बारे में काफी कुछ विवरण उपलब्ध हैं। इन्हें पहले दर्ज किया जा चुका है। पृथु वर्तमान से १७९२३ वर्ष पहले (१५९८०+१९९२) जीवित रहे।

## यूनिट २ - प्रमुख इतिहासपूर्व सम्राट

भारत के इतिहासपूर्व काल में, महान राजाओं की एक परंपरा का निर्माण हुआ। उनके बारे में पौराणिक वृत्तांत अक्सर किंवदंतियों में लिपटे रहते हैं। फिर भी उनकी प्रतिष्ठा उनके माध्यम से चमकती है, जैसा कि निम्नलिखित चयन में देखा जा सकता है, एक व्यापक अवलोकन के लिए कालक्रम और वंश के संदर्भ के बिना वर्णानुक्रम में दिया गया है:

### भगीरथ :

किसी भी क्षेत्र में विशाल प्रयासों के लिए अक्सर भारतीय साहित्य में प्रयोग की जाने वाली भगीरथ प्रयास की अभिव्यक्ति अयोध्या में शासन करने वाले इक्ष्वाकु वंश के दिलीप के पुत्र राजा भागीरथ से हुई है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भागीरथ के पूर्वज राजा सगर के ६०,००० पुत्र थे, जो ऋषि कपिला के क्रोध से भस्म हो गए थे। उनके आध्यात्मिक मोचन का एकमात्र तरीका गंगा नदी को स्वर्ग लोक से नीचे लाना और उसे राख के ऊपर प्रवाहित करना था। बाद के कई राजाओं ने कोशिश की लेकिन असफल रहे। अंत में, भगीरथ ने भगवान महादेव शिव को प्रसन्न करने के लिए दीर्घ और गंभीर तपस्या की तब शिव प्रसन्न हुए और गंगा को स्वर्ग से नीचे लाने और पानी के प्रवाह को अपनी जटा में रखने के लिए सहमत हुए। वहां से नदी पराला, पाताल लोक में राख के ऊपर बहती थी। जैसे ही भगीरथ ने गंगा को उतारा, नदी को भागीरथी कहा जाने लगा। किंवदंती से परे, इसका मतलब यह है कि यह भगीरथ का जबरदस्त प्रयास था जिसने उच्च हिमालय में बहने वाली नदी को अपने राज्य में भूमि की सिंचाई के लिए प्रवाहित किया।

### भरत :

भरत राजा ऋषभ का पुत्र था। उन्होंने जिस देश पर शासन किया वह उनके बाद भारतवर्ष या भारतवर्ष कहलाया। पौराणिक वृत्तांतों के अनुसार बहुत प्राचीन सम्राट प्रियव्रत ने अपने आठ पुत्रों के बीच अपने साम्राज्य को विभाजित किया था, जिनमें से आग्नीध्र को जम्बू द्वीप दिया गया था। उनकी मृत्यु पर जम्बू द्वीप को नौ राज्यों में विभाजित किया गया था, जिसमें से उनके सबसे बड़े पुत्र नाभि को हिम नामक भूमि मिली थी। नाभि का पुत्र ऋषभ और ऋषभ का पुत्र भरत था। दूसरा भरत दुष्यंत और शकुंतला का पुत्र था,

जिसे सर्वदमन के नाम से भी जाना जाता है। वह एक आदर्श राजा थे और उन्होंने इतने लंबे समय तक शासन किया कि जिस भूमि पर उन्होंने शासन किया वह भारत कहलाने लगी।

### **बृहदबल :**

बृहदबल कोशल के एक शक्तिशाली राजा और राम के ३१ वें वंशज थे। वह कौरवों के पक्ष में भारत युद्ध में लड़े थे और अभिमन्यु द्वारा युद्ध में मारे गए थे।

### **दशरहा :**

दशरहा यदु वंश का एक महान राजा था जो इतना प्रसिद्ध था कि उसके वंश को दशरहा कहा जाता था। चूंकि श्रीकृष्ण का जन्म इसी वंश में हुआ था, इसलिए उन्हें कभी-कभी दशीरहा भी कहा जाता है। महाभारत में, सभा पर्व, यादव नेताओं की एक सभा को दशरही यादव महिलाओं के रूप में जाना जाता है, जिसमें राजा कुरु की पत्नी शुभांगी और पांडु की पत्नी कुंती को भी दशरही कहा जाता था।

### **दशरथ :**

श्री राम के पिता राजा दशरथ एक महान राजा थे जिनका वास्तविक नाम नेमी था। एक बार, असुरों के साथ युद्ध के दौरान, उन्होंने अपने रथ को युद्ध के मैदान में १० अलग-अलग बिंदुओं पर इतनी तेजी से तैनात किया कि उन्हें दशरथ के नाम से जाना जाने लगा। खगोलविदों के अनुसार १२ साल की अवधि के लिए पूरे विश्व में अकाल पड़ने वाला था जब (शनि) रोहिणी नक्षत्र की कक्षा में प्रवेश करता है। लेकिन अब शनि कभी रोहिणी की कक्षा में प्रवेश नहीं करता। यह एक वरदान के कारण है जो शनिदेव ने दशरथ को दिया था।

दशरथ कोशल के राजा थे और उनकी राजधानी अयोध्या थी। लेकिन इतिहासकारों के अनुसार प्राचीन काल में उस नाम के दो राज्य थे। पहला दशरथ द्वारा शासित राज्य था, जिसकी राजधानी अयोध्या में सरयू के तट पर थी। दूसरा भानुमंत का राज्य था, जिसकी पुत्री कौशल्या दशरथ की प्रमुख रानी थी। बाद के साहित्य में इन्हें उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल कहा गया। राम ने उत्तर कोशल को लव को और दक्षिण कोशल को कुश को दिया। लव ने अपनी राजधानी को शरिवती में स्थानांतरित कर दिया और कुश ने कुशवती नामक एक नई राजधानी की स्थापना की। कुछ स्रोतों के अनुसार अयोध्या को राजधानी के रूप

में छोड़ दिया गया था, लेकिन अन्य स्रोतों के अनुसार इसे फिर से बसाया गया और कुश ने इसे अपनी राजधानी बनाया।

### **ध्रुव :**

ध्रुव राजा उत्तानपाद की पहली पत्नी सुनीति के बड़े पुत्र थे। उनकी दूसरी पत्नी सुरुचि का उत्तम नाम का एक पुत्र था। राजा सुरुचि पर अत्यधिक आसक्त था और उसने सुनीति और उसके पुत्र की उपेक्षा की। एक बार, जब बालक ध्रुव को उसकी सौतेली माँ ने अपने पिता की उपस्थिति में डांटा और उसकी गोद में बैठने से रोका तो वह इतना निराश हो गया कि उसने जंगल में जाकर घोर तपस्या की। जब भगवान विष्णु उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें एक वरदान देना चाहा तो ध्रुव ने कहा कि मुझे ऐसा स्थान दो जहाँ से कोई मुझे धक्का न दे सके। इस प्रकार परमेश्वर ने उसे स्वर्ग में स्थिर स्थान दिया। इसलिए ध्रुव का अर्थ है निश्चित, स्थायी, और उनके नाम के तारे को ध्रुव नक्षत्र (ध्रुव तारा) के रूप में जाना जाता है, जब ध्रुव बड़े हुए और राजा बने तो उन्होंने कई वर्षों तक धर्म के उच्चतम सिद्धांतों के अनुसार अपने राज्य पर शासन किया।

### **दिलीप :**

दिलीप इक्ष्वाकु वंश के कुलीन राजाओं में से एक थे और अपनी प्रजा के बीच बेहद लोकप्रिय थे। उन्हें खट्वांग के नाम से भी जाना जाता था।

### **दिवोदास :**

दिवोदास नाम आमतौर पर ऋग्वेद और पुराणों में पाया जाता है। पहले राजा का नाम दिवोदास अतिथिगवा था, जो उनके उदार आतिथ्य के कारण प्रसिद्ध थे। वह कुछ स्रोतों के अनुसार, राजा सुदास के पिता या दादा थे, जिन्होंने ऋग्वेद में वर्णित दाशराज्ञ युद्ध लड़ा था। वेदम मणि (पौराणिक विश्वकोश) के अनुसार दिवोदास अतिथिगवा काशी के राजा थे। हालाँकि, अन्य स्रोतों के अनुसार, काशी के राजा, एक अन्य दिवोदास, चंद्र वंश के एक सहायक परिवार के थे। इस परिवार की वंशावली इस प्रकार है: चंद्र, बुद्ध, पुरुरव, आयुष, (15 क्रमिक राजाओं के बाद) काश, दीर्घतपस, धन्वन्तरि, केतुमान, भीमरथ, दिवोदास। काश के अनेक पुत्र हुए, जिन्हें सामूहिक रूप से काशी कहा गया। इसलिए काश के शासनकाल से वाराणसी

को काशी कहा जाने लगा। हालाँकि दिवोदास के धन्वंतरि नाम के पूर्वज थे, लेकिन उन्हें स्वयं धन्वंतरि का अवतार माना जाता था, जो देवताओं के चिकित्सक थे।

### **दुष्यंत :**

दुष्यंत एक महान सम्राट थे, जिनका राज्य समुद्र तक फैला हुआ था। उनका शासन इतना बुद्धिमान था कि प्रजा संपन्न थी और कोई बीमारी या अपराध नहीं था। "यहां तक कि ऋतुओं ने भी उचित क्रम में मार्गक्रमण किया।" (वेदम मणि।) "जैसे समुद्र तूफानी नहीं हो रहा है, और पृथ्वी की तरह बड़े धैर्य के साथ हर चीज में भाग ले रहा है, दुष्यंत ने देश पर शासन किया।" (आदि पर्व, अध्याय ६८।) यह महान पुरु राजा शकुंतला के पुत्र भरत के पिता थे।

### **हरिश्चंद्र :**

सूर्य वंश के एक प्रतिष्ठित वंशज, त्रिशंकु के पुत्र, राजा हरिश्चंद्र, अपनी सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। अपना वचन निभाने के लिए और सत्य के लिए उन्होंने अपना पूरा राज्य विश्वामित्र को उपहार में दे दिया। जब वह अपने कर्ज को चुकाने के लिए पर्याप्त नहीं था, तो उसने अपनी पत्नी चंद्रमती, अपने बेटे लोहिताश्व को बेच दिया और अंत में शेष राशि का भुगतान करने के लिए खुद को बेच दिया। फिर उन्होंने जलते घाट पर एक चांडाल के सहायक के रूप में नौकरी की। अंत में, सत्य के प्रति उनकी अटूट भक्ति के पुरस्कार के रूप में, दिव्य त्रिमूर्ति उनके सामने प्रकट हुए, उनके राज्य को बहाल किया, और उन सभी वरदानों की वर्षा की, जैसा कि एक पौराणिक कथा में वर्णित है। एक और हरिश्चंद्र भी थे, जो अति प्राचीन काल के सम्राट थे। उनकी कहानी पद्म पुराण में वर्णित है। यह निश्चित नहीं है कि हरिश्चंद्र कहे जाने वाले दो राजा एक ही व्यक्ति थे।

### **हस्ति :**

हस्ति चंद्र वंश के राजा सुहोत्रा का पुत्र था, लेकिन उसकी माता सुवर्णा इक्ष्वाकु (सौर) वंश की थी। उन्होंने अपने नाम पर हस्तिनापुर शहर की स्थापना की (हस्तिना पुरा, "हस्तिन द्वारा निर्मित शहर")। यह महाभारत काल की प्रसिद्ध राजधानी थी। आदिपर्व में एक अन्य राजा हस्ती का भी उल्लेख है, जिनका जन्म भी चन्द्रवंश में हुआ था।

### **इक्ष्वाकु :**

इक्ष्वाकु मनु वैवस्वत के पुत्र थे और अयोध्या के महान शाही राजवंश के संस्थापक थे। वह इतने शानदार राजा थे कि श्री राम, जो उनके वंशज थे, उनको इक्ष्वाकु-कुलावतंस कहा जाता था अर्थात "इक्ष्वाकु परिवार का आभूषण"। वह इतिहासपूर्व काल के पहले बाढ़ के बाद के राजा थे। आमतौर पर यह माना जाता है कि बाढ़ १०,००० ईसा पूर्व से पहले आई थी। और उसके बाद एक लंबा हिमयुग आया जो शायद कई सदियों तक रहा होगा। तो विद्वानों की राय में इक्ष्वाकु की तिथि लगभग ९९०० ई.पू. हो सकती है।

### **जह्नु :**

जह्नु पुरु राजा अजामीढ का पुत्र था। आध्यात्मिक-चित्त होने के कारण उन्होंने अपने बेटे बलाकाश्व के पक्ष में अपना राजपाट त्याग दिया, एक संन्यासी बन गए और तपस्या की। एक पौराणिक कथा के अनुसार, गंगा नदी, जो भगीरथ के अनुरोध पर पृथ्वी पर उतरी थी, जह्नु के आश्रम को जलमग्न करने के लिए गई थी। जह्नु ने क्रोधित होकर नदी को पी लिया, लेकिन भगीरथ के अनुरोध पर गंगा देवी को अपने कान से बाहर निकाल दिया। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा। वास्तव में इसका मतलब यह है कि गंगा के प्रवाह में बाधा डालने वाले शिलाखंडों को सबसे पहले राजा जह्नु ने हटाया था ताकि यह खाद्य फसलों को उगाने के लिए मैदानी इलाकों को पानी दे सके।

### **कुरु :**

राजा संवरण के पुत्र राजा कुरु का जन्म पुरु वंश में हुआ था। उन्हें अपनी प्रजा से प्यार था क्योंकि उन्होंने उनके लिए खाद्यान्न उगाने के लिए जंगलों को खेती के तहत लाया। उनके समय से पुरु वंश, पौरव, को कुरु वंश, कौरव कहा जाने लगा। महाभारत काल के कौरव और पांडव दोनों ही इस परिवार रेखा के थे। तो पांडव भी असल में कौरव ही थे। एक स्रोत के अनुसार जो भूमि कुरु अब पानीपत के आसपास विकसित हुई है, उसे कुरु-क्षेत्र कहा जाने लगा। एक अन्य स्रोत के अनुसार राजा ने पवित्र सरस्वती और दृष्टद्वती नदियों के बीच एक व्यापक यज्ञ हल (वैदिक बलिदान करने के लिए परिसर) का निर्माण किया, जिसे बाद में कुरु-क्षेत्र के रूप में जाना जाने लगा। यह कमोबेश हरियाणा के आधुनिक कुरुक्षेत्र जैसा ही है। बहुत प्राचीन काल में यह वैदिक संस्कृति का हृदय था, और इसे ब्रह्मवर्त के नाम से भी जाना जाता था।

आमतौर पर यह माना जाता है कि कुरुक्षेत्र युद्ध का मैदान था जहाँ महाभारत युद्ध लड़ा गया था। हालाँकि, इस बिंदु पर विद्वानों में मतभेद हैं।

### **कुश :**

श्री राम के पुत्र कुश ने उनके बाद कुशावती नामक एक नई राजधानी से कोशल साम्राज्य के दक्षिण आधे हिस्से पर शासन किया। राम के दूसरे पुत्र लव ने राज्य के उत्तरी आधे हिस्से पर शरावती से शासन किया, जो उनके लिए बनाई गई राजधानी थी। कुश के वंश में १९ वंशज थे, जिसके बाद कलियुग के आगमन पर सौर वंश का अंत हो गया।

### **मांधाता :**

मान्धाता इक्ष्वाकु वंश के एक महान राजा थे और उन्होंने इतने सारे राज्यों पर विजय प्राप्त की कि वे महान प्रसिद्धि के सम्राट बन गए। महाभारत दूर देशों के आठ राजाओं के नाम देता है जिन्हें उसने अपने अधीन कर लिया था। उनका प्रभुत्व न केवल पूरे भारत में बल्कि अफगानिस्तान और बलहिका क्षेत्रों में भी फैला हुआ था। तिब्बत में भी पवित्र माने जाने वाले एक पर्वत का नाम उनके नाम पर गुरुला मांधाता रखा गया है। फलस्वरूप पुराणों ने उनके साम्राज्य को इतना विस्तृत बताया कि उसमें सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। कुलकर्णी ने उनका काल लगभग ७५०० ई.पू. रखा है, जबकि अन्य विद्वानों के अनुसार यह ७५०० ई.पू. हो सकता है।

मान्धाता ने अपने महान साम्राज्य का सदाचार और सच्चाई और न्याय के अनुसार शासन किया। उन्होंने हजारों गायों का उदार उपहार दिया और 100 अश्वमेध यज्ञ किए। मान्धाता उतने ही वीर थे जितने धर्मपरायण। कुछ स्रोतों के अनुसार उन्हें त्रसदस्यु कहा जाता था क्योंकि उनके दस्यु शत्रु उनसे डरते थे, लेकिन अन्य स्रोतों के अनुसार त्रसदस्यु उनके पोते का नाम था, उनके शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना द्रुह्युओं के साथ उनकी लड़ाई थी। उनके हाथों उनकी हार ने द्रुह्युओं के पश्चिम की ओर प्रवास की शुरुआत की, जो सफल सहस्राब्दी में, यूरोप में पहुंचे और फैल गए।

### **नहुष :**

चंद्र वंश के संस्थापक पुरुरवा के पोते नहुष एक शक्तिशाली सम्राट थे। उनकी विजय इतनी महान थी कि उन्हें देवों के राजा, इंद्र का ताज पहनाया गया था। जैसा कि पुरुरवा का विवाह असुर राजा स्वर्भानु की बेटी प्रभा से हुआ था, उसका पोता नहुष देवों और असुरों दोनों का राजा बन गया। लेकिन, जैसा कि किंवदंती है, वह अपनी शक्ति पर इतना घमंडी हो गया कि उसने महान ऋषि अगस्त्य का अपमान किया, जिन्होंने उसे सांप बनने का श्राप दिया था। बाद में युधिष्ठिर नाम के एक धर्मपरायण राजा ने उन्हें श्राप से मुक्त किया। यह युधिष्ठिर पांडव राजा नहीं है।

### पृथु:

पृथु प्राचीन काल के सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक थे। उनके पिता राजा वेण एक अनैतिक अत्याचारी थे, इसलिए ऋषियों के नेतृत्व में लोगों ने उन्हें अपदस्थ कर दिया और उनके पुत्र पृथु को ताज पहनाया। वह दर्ज इतिहास में पहला ताजपोशी करने वाला राजा है। उन्होंने इतने व्यापक पैमाने पर कृषि पद्धतियों का परिचय दिया कि उन्हें पहला आर्य राजा माना जाता है, जो कि कृषि के प्रवर्तक राजा थे। पृथु ने शहरों और गांवों की भी स्थापना की, सड़कों का निर्माण किया और भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, सैन्य विज्ञान आदि जैसे विज्ञानों को प्रोत्साहित किया। पृथु राज्य और सरकार को संगठित करने वाले पहले राजा थे। उसके समय में सूत (इतिहासकार), मगध (दरबारी इतिहासकार), चारण (दरबार के गायक) जैसे दरबारी अधिकारी बनाए गए और नियुक्त किए गए। उनके समय से ही नियमित इतिहास लिखा जाने लगा।

उसके सम्राट बनने के बाद, पृथ्वी के लोग जो भूखे थे, उसके पास भोजन के लिए आए। जब उसे पता चला कि पृथ्वी बोए गए सभी बीजों को निगल रही है, तो उन्हें बढ़ने देने के बजाय (पृथ्वी पर रहने वाले दुष्ट लोगों से क्रोधित होकर), वह उस पर हमला करने और उसे दंडित करने वाला था। हालाँकि, पृथ्वी एक गाय के रूप में उसके सामने प्रकट हुई, माफी माँगी और उससे अनुरोध किया कि वह उसका दुध निकाले और जो चाहे प्राप्त करे। पृथु, ऋषियों, देवों, दैत्यों, गंधर्वों और अन्य लोगों ने भी उसे 'दूध' दिया और जो कुछ भी वे चाहते थे, प्राप्त किया। इस प्रकार मिला "दूध" था: कृषि फसलें, वेद, सोम रस, शक्ति, संगीत, श्राद्ध समारोहों के लिए उपयुक्त प्रसाद, योग शक्तियाँ इत्यादि। दूसरे शब्दों में, पृथ्वी (या निर्मित दुनिया) ने सभी लोगों को सब कुछ दिया। उस दिन से पृथ्वी को पृथ्वी या पृथिवी, सम्राट पृथु की पुत्री के रूप में जाना जाने



लगा। पृथु को पूरी दुनिया से इतना प्यार था कि "जब उन्होंने समुद्र से यात्रा की तो पानी स्थिर हो गया, और जब उन्होंने भूमि पर यात्रा की तो पहाड़ उसके लिए रास्ता बनाया। भारत के इतिहास में पृथु के शासनकाल की अवधि को एक स्वर्ण काल माना जाता है।" (वेटम मणि, पुराणिक विश्वकोश।)

### **पुरु:**

ययाति के पुत्र राजा पुरु इतने प्रसिद्ध हुए कि चंद्रवंश जिससे वे संबंधित थे, उनके बाद पौरव कहलाने लगे। पुराणों के अनुसार, ययाति के पुत्रों में केवल पुरु ही थे, जो अपनी युवावस्था अपने पिता को देने के लिए तैयार हो गए। पुरु की युवावस्था का आनंद लेने के बाद ययाति ने उन्हें अपने राज्य के स्पष्ट उत्तराधिकारी के रूप में ताज पहनाया।

### **पुरुषोत्तम:**

वैवस्वत मनु की पुत्री इला के पुत्र पुरुषोत्तम ने जैसा कि पहले कहा गया है, प्रसिद्ध चंद्र वंश की स्थापना की। वायु पुराण कहता है (२.१५) वह १२८ द्वीपों का शासक था। पुरुषोत्तम हस्तिनापुर में एक राज्य के संस्थापक भी थे, जो महाभारत काल की प्रसिद्ध राजधानी बन गया।

### **रघु :**

सूर्य वंश (सौर जाति) के एक प्रसिद्ध राजा और इक्ष्वाकु वंश के एक प्रतिष्ठित वंशज, रघु, श्रीराम के परदादा थे। उनके बाद राजवंश को ही रघु वंश के नाम से जाना जाने लगा। रघु ने ९९ यज्ञ किए, और अंतिम, अश्वमेध, यज्ञ के लिए अपने घोड़े को छोड़ दिया। उसका घोड़ा, उसके पीछे उसकी सेना के साथ, पहले दक्षिण भारत, फिर पश्चिम भारत और फिर उत्तर में सिंधु प्रदेश तक गया। वहां से राजा रघु उरु प्रदेश (ईरान-इराक), पिरसिका (फारस), कहोशल-गंधीरा (अफगानिस्तान), कान्यकुब्ज (उज्बेकिस्तान रूस) और हरिवर्ष के लिए अपने विजयी दौड़ पर आगे बढ़े। फिर पूर्व की ओर मुड़कर रघु त्रिविष्टप (तिब्बत) गए, फिर बिरहमलोक (बर्मा) गए, और अंत में पश्चिम की ओर मुड़कर अयोध्या लौट आए। इसके बाद उन्होंने विश्वजीत यज्ञ किया, जो विश्व विजय का प्रतीक था। एक विजेता के रूप में रघु को माना जाता है। क्षत्रिय उन्हें याद करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि वे युद्ध में पराजित नहीं होंगे। अनुशासन पर्व के अनुसार, रघु उन महान राजाओं में से हैं, जिन्हें हर दिन सुबह और शाम को याद किया जाता है।

## सगर :

सगर एक शक्तिशाली राजा था और उसने एक विजयी दौरा किया जिसमें उसने हेबाया राजा को पराजित किया और उसके महिष्मती राज्य पर कब्जा कर लिया। उन्होंने शकों और यवनों को भी अपने अधीन कर लिया, जिन्होंने इक्ष्वाकु वंश के राजा, अपने पिता बाहु को बाहर निकालने में हैहयों की मदद की थी। एक बार राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ शुरू किया था, लेकिन यह पूरा नहीं हो सका क्योंकि घोड़ा दक्षिण-पूर्वी समुद्र के पानी में गायब हो गया था। पुराणों का कहना है कि सगर के ६०,००० पुत्र थे जो घोड़े को खोजने गए थे। "शायद वे ६०,००० इंजीनियर और अन्य उच्च अधिकारी थे जो उस घोड़े का पता लगाने में लगे थे जो समुद्र से परे भूमि से गायब हो गया था या समुद्र से पुनः प्राप्त की गई कुछ भूमि थी। वे सभी उद्यम में नष्ट हो गए होंगे।" (एस. डी. कुलकर्णी, गौरवशाली युगः स्वायंभुव मनु से शकारी शालिवाहन) समुद्र (सिगरा) का नाम सगर से पड़ा है। सिगरा अब बंगाल में हुगली नदी के मुहाने पर एक द्वीप का नाम भी है। राजा सगर के पुत्रों के बारे में कहा जाता है कि यहीं पर वे कपिल मुनि के श्राप से भस्म हो गए थे और बाद में भगीरथ की तपस्या के कारण मुक्ति प्राप्त की थी। सागर का अर्थ है "सगर का जन्म"। यह द्वीप अब एक प्रमुख तीर्थस्थल है जिसे (गंगा-) सागर कहा जाता है।

सगर का पुत्र असमंजस, दुष्ट था और प्रजा को परेशान करता था, इसलिए अपने जीवन के संध्याकाल में उसने अपने पौत्र अंशुमान को राजगद्दी सौंप दी। यहाँ तक कि उसने असमंजस को अपने महल से बाहर निकाल दिया। उन्हें सुबह और शाम को याद किए जाने वाले राजाओं में से एक माना जाता है। (अनुशासन पर्व।)

## सुदास:

सुदास आद्य-ऐतिहासिक राजाओं में सबसे महत्वपूर्ण राजाओं में से एक थे, क्योंकि उनके समय में ही दाशराज्ञ युद्ध लड़ा गया था। ऋग्वेद में इस महान युद्ध का वर्णन है, जिसे दाशराज्ञ, दस राजाओं की लड़ाई कहा जाता है, जो न केवल दुनिया की सबसे पुरानी दर्ज की गई लड़ाई है, बल्कि ऋग्वेद में दर्ज की गई सबसे समकालीन राजनीतिक घटना भी है। यह लड़ाई त्रित्सु (पौरव) के बीच लड़ी गई थी। एक ओर राजा सुदास और दूसरी ओर सम्राट छायामन की ओर से दस समुदायों के मुखियाओं का एक संघ। ये दस समुदाय थे: पख्ता, भालिना, अलीना, शिव, विशनिन, सिम्यु, भृगु, पृथु और परशु। सामूहिक रूप से उनमें दो

समूह के नाम थे - अनु और द्रुह्यु। इस युद्ध में पराजित द्रुह्यु राजा का नाम अंगारा था। अगला द्रुह्यु राजा, जिसका नाम गांधार था, उत्तर-पश्चिम में चला गया और गिंधार देश को अपना नाम दिया। पुराण, जो ऐतिहासिक साथी हैं ऋग्वेद के ग्रंथों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इन द्रुह्युओं के प्रमुख वर्ग उत्तर की ओर दूर देशों में चले गए।

इनमें से एक समुदाय जो व्यावहारिक रूप से यूरोप की सीमाओं को छूने वाले क्षेत्रों में फैला था, सेल्ट्स के रूप में जाना जाने लगा, और सेल्टिक भाषा बोलता था। ईसाई युग से पहले पिछली शताब्दियों में सेल्टिक स्पेन से लेकर ब्रिटेन तक यूरोप के एक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती थी। ये प्राचीन सेल्ट मूल रूप से ड्यूड थे, जिन्हें डूहियस के साथ पहचाना जा सकता है। यह महान युद्ध, जो लगभग ६५००/७००० वर्ष ई. पू. (वर्तमान से पहले) को वैदिक भारत के अंतर्राष्ट्रीय इतिहास की शुरुआत के लिए परिभाषित संदर्भ बिंदु माना जा सकता है। हालाँकि, लगभग, जैसा कि पहले कहा गया है, ६०० साल पहले मान्धाता नाम के एक और महान इक्ष्वाकु राजा ने भी द्रुह्युओं के साथ युद्ध किया था, जिससे समकालीन इंडिका का पश्चिम की ओर पलायन हुआ (राजाराम के अनुसार, मान्धाता की लड़ाई के लगभग एक हजार साल बाद दाशराज्ञ युद्ध हुआ था) )।

### शांतनु :

शांतनु राजा प्रतिप के दूसरे पुत्र थे। वह राजा बना क्योंकि उसके बड़े भाई देवापी ने सिंहासन त्याग दिया और ऋषि बन गया। (देवापी ने ऋग्वेद के कुछ अंतिम ऋचाओं की रचना की।) शांतनु महान पराक्रमी थे और सत्य के प्रति समर्पित भी थे। कहा जाता है कि उन्होंने एक हजार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ किए। वह भोर और सांझ के समय स्मरण किए जाने के योग्य राजाओं में से एक है। उन्हें शांतनु (शम = अच्छा, तनु = शरीर) कहा जाता था क्योंकि वे दोनों हाथों से जो कुछ भी छूते थे, वे युवा दिखते थे। महाभारत में वर्णित उनके अन्य नाम भरत, भरतगोप्त, भरतसत्तम, कौरव्य, कुरुसत्तम और प्रतिप भी हैं।

### सुद्युम्ना :

सुद्युम्न न्याय की गहरी भावना के साथ एक आध्यात्मिक अंतःकरण वाला राजा था। एक पौराणिक कथा के अनुसार उनके समय में लिखिता और शंख नाम के दो भाई थे, दोनों सन्यासी थे, जो अपनी-अपनी कुटिया में एक-दूसरे के पास रहते थे। एक बार लिखिता को भूख लगी लेकिन उसने खाना नहीं खाया। अतः

वह शंख की कुटिया में चला गया। शंख बाहर गया हुआ था, लेकिन लिखिता को उसकी कुटिया में कुछ सब्जी मिली और उसने अपनी भूख मिटाने के लिए उसे खा लिया। जब शंख वापस लौटा और उसे इस बारे में पता चला तो उसने कहा कि मालिक की अनुमति या ज्ञान के बिना कुछ भी लेना चोरी है, इसलिए लिखिता को राजा के पास जाना चाहिए और उसे इसकी सूचना देनी चाहिए। लिखिता राजा को देखने गई, जिसने उसे सम्मान के साथ प्राप्त किया, लेकिन जब लिखिता ने उसे बताया कि उसने क्या किया है उसने साधु के दोनों हाथ काटने का आदेश दिया, यह चोरी की सजा थी। जब लिखिता वापस लौटी तो शंख राजा सुद्युम्न की न्याय की भावना के साथ-साथ लिखिता की धर्मपरायणता से प्रसन्न हुआ और उसने अपने हाथों को बहाल करने के लिए अपनी योग शक्ति का इस्तेमाल किया।

### **त्रसदस्यु :**

त्रसदस्यु राजा पुरुकुत्स के पुत्र और महान सम्राट मांधाता के पोते थे। उन्हें त्रसदस्यु कहा जाता था क्योंकि वे दस्युओं के आतंक थे, लेकिन यहाँ दस्यु का अर्थ केवल "लुटेरों और शत्रुओं" से है (स्वामी हर्षानंद, कन्साइज हिंदू एनसाइक्लोपीडिया)। त्रसदस्यु प्रतिदिन प्रातःकाल स्मरण किये जाने योग्य महान् राजा थे। बाद में उन्होंने संन्यास स्वीकार कर लिया और राजर्षि बन गए।

### **उशीनारा :**

उशीनारा चंद्र वंश के एक प्रतिष्ठित राजा थे, जो उदार होने के साथ-साथ न्यायी भी थे। वह भोज साम्राज्य का राजा थे और उन्हें इंद्र के समान महान माना जाता था। महाभारत (अरण्य पर्व, अध्याय १३१) में उनके पुत्र राजा शिबि और कबूतर की कहानी भी उनके बारे में बताई गई है।

### **यदु :**

यदु राजा ययाति के ज्येष्ठ पुत्र थे। चूंकि उसने अपनी युवावस्था के बदले में अपने पिता का बुढ़ापा लेने से इनकार कर दिया, इसलिए उसने अपने पिता के उत्तराधिकारी होने का अधिकार खो दिया। इसके बाद उन्होंने अपने स्वयं के राजवंश की स्थापना की, जो यदु/यादव ("यदु के") वंश के रूप में प्रसिद्ध हुआ। श्री कृष्ण यादव कुल के सबसे शानदार वंशज थे, पुराणों में यदु नाम के दो अन्य राजाओं का भी उल्लेख है।

## ययाति :

ययाति ने अपने पिता नहुष को गद्दी पर बैठाया। वे वेदों के ज्ञाता थे। उनकी दो पत्नियां थीं, देवयानी और शर्मिष्ठा। देवयानी असुरों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री और असुर राजा वृषपर्व की पुत्री शर्मिष्ठा थीं। असुरों के साथ अपने संबंधों के बावजूद उन्होंने अंतिम, बारहवें, देवासुर संग्राम में देवों की ओर से लड़ाई लड़ी।

## राम :

इतिहासपूर्व भारत के महान राजाओं की आकाशगंगा में, बिना किसी संदेह के सबसे महान राम थे। राम पुरुषोत्तम थे, मनुष्य में परम उत्कृष्टता, और एक शासक के रूप में उन्होंने अपने राज्य को अच्छे आचरण के ऐसे उच्च मानकों के साथ प्रशासित किया कि राम राज्य का अर्थ सुशासन हो गया है।

### राम जन्म तिथि -

राम एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे, और रामायण को विशेष रूप से इतिहास कहा गया है। वैदिक साहित्य के साथ-साथ पुराणों में राम के जन्म की तारीखों और उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को निर्धारित करने में मदद करने के लिए पर्याप्त खगोलीय डेटा है, हालांकि इस तरह के पुराने इतिहास की तारीख सटीक नहीं हो सकती है और यह विद्वानों के मतभेदों के अधीन होगा। पौराणिक गणना आम तौर पर राम की तिथि लगभग ४६०० ई.पू. दर्शाती है। ज्ञानकोश (मराठी) इसे अनुसार ४९३६ ई.पू. है। राम के जीवन की तारीखों के एक शोधकर्ता पुष्कर भटनागर के अनुसार, उन्होंने "तारामंडल" नामक एक यूएस-निर्मित सॉफ्टवेयर प्राप्त किया है, जिसे वाल्मीकि द्वारा बताए गए राम के जन्म के समय ग्रहों के विन्यास का सटीक विवरण दिया जाता है। राम के जन्म का वर्ष ५११४ ईसा पूर्व ए न्यू लुक (आ. - एन महालिंगम) के अनुसार, राम का जन्म ४४३९ ईसा पूर्व में हुआ था, उनका निर्वासन ४४१४ ईसा पूर्व में हुआ था, और उनका राज्याभिषेक ४४०० ईसा पूर्व में हुआ था।

### पुरुषोत्तम राम -

राम अत्यंत रूपवान और असाधारण रूप से बलशाली थे। जबकि वह विभिन्न हथियारों और मिसाइलों के उपयोग में अत्यधिक कुशल थे और एक तीरंदाज के रूप में उनकी सटीकता अद्वितीय थी। इसलिए राम-बाण (राम का बाण) शब्द का अर्थ किसी भी क्षेत्र में एक अचूक उपाय है। वे अनेक अस्त्रों के

प्रयोग में निपुण थे। वेदमणि ने ४६ की एक सूची दी है, जो, वे कहते हैं, उनमें से कुछ थे। राम भी शास्त्रों के ज्ञाता और ललित कलाओं के ज्ञाता थे।

सत्य का अवतार -

इन सबसे ऊपर, राम सत्यवादिता के अवतार थे। एक बार जब उन्होंने अपना वचन दिया, तो उन्होंने इसे हर कीमत पर रखा। अपने पिता दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए गए वचन की सच्चाई को बनाए रखने के लिए, राम ने एक पल की हिचकिचाहट के बिना अपने पुत्र भरत के पक्ष में सिंहासन पर अपना अधिकार छोड़ दिया। उनके पिता दशरथ, (जो अपने ही वचन के बंदी थे), ने राम से उनकी अवज्ञा करने का आग्रह किया, और उन्हें कैद भी कर लिया! भरत ने उन्हें सिंहासन वापस देने की पेशकश की और उनसे वापस लौटने की विनती की। यहां तक कि ऋषि वशिष्ठ ने भी उन्हें ऐसा करने की सलाह दी थी। लेकिन राम ने न केवल अपने पिता के वचन का पालन किया बल्कि अपने संकल्प की सत्यता का पूरा विश्वास दिलाया।

रावण के साथ युद्ध में राम हमेशा नैतिक मूल्यों के अनुसार लड़े। रावण के साथ पहले ही टकराव के दौरान, राम ने उसे इतनी दृढ़ता से पीटा कि वह उसे आसानी से मार सकता था। लेकिन धर्म के प्रति उनका समर्पण इतना दृढ़ था कि उन्होंने रावण को सुरक्षा के लिए पीछे हटने और संभलने की अनुमति दी। यहां तक कि मारीच, एक राक्षस और एक दुश्मन, ने राम की महानता को श्रद्धांजलि अर्पित की और घोषित किया कि वे विग्रहवान धर्म थे, "धर्म व्यक्ति"।

वैदिक विद्वानों नटवर झा और नवरत्न राजाराम द्वारा लगभग २००० सिंधु मुहरों की व्याख्या के दौरान उन्होंने पाया कि उनमें से कुछ में राम के संदर्भ हैं। मुहरें हैं जो कांता-राम की बात करती हैं, अर्थात् "प्रिय राम"। एक मुहर कहती है कि समत्वी सा हा राम, जिसका अर्थ है "राम ने सभी के साथ समानता का व्यवहार किया।" यह रामायण की एक प्रतिध्वनि है, जो कहती है, आर्य सर्व समाश्चैव सदैव प्रियदर्शनः, अर्थात्, "आर्य जिनके लिए सभी समान थे, और जो सभी के प्रिय थे। राम द्वारा एक सफल अग्नि अनुष्ठान करने का भी एक संदर्भ है। और दूसरा राम के समुद्र को सफलतापूर्वक पार करने के लिए, दोनों का उल्लेख रामायण में मिलता है।

## युनिट ३ – राजा

"राजा और उसकी शासन व्यवस्था राज्य के सभी घटकों को एकसाथ समाहित करती है।"

"जो राजा अपनी प्रजा का रक्षण करने का कार्य न्याय्य पद्धति से करता है; वह न्याय के अनुसार स्वर्ग प्राप्त करता है और जो राजा ऐसा नहीं करता, प्रजापर अन्याय करता है उसे सजा भुगतनी पड़ती है।"

"जो राजा धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के उपदेशों के अनुसार नहीं चलता वह खुद ही अन्याय से अपने राज्य का नाश करता है"

[अर्थशास्त्र में 'राजा' का प्रयोग अक्सर राज्य को इंगित करने के लिये किया जाता है क्यों की राज्य में सभी घटकों का समावेश होता है।]

### ३.१ भावी राजा का प्रशिक्षण

#### स्वयं अनुशासन का महत्व

तत्त्वज्ञान, वेदत्रयी और अर्थशास्त्र ये तीन शास्त्र उनके विकास के लिये राज्यशास्त्र पर अवलंबित है। [ क्यों की एक न्याय्य शासन व्यवस्था के बिना ज्ञान साधना या कोई व्यवसाय करना संभव नहीं है ]

न्याय व्यवस्था पर आधारित शासन व्यवस्था; जो जीवन की सुरक्षितता, लोगों का क्षेमकल्याण आश्वस्त करती है; प्रत्यक्ष में राजा के स्वयं अनुशासन पर निर्भर रहती है।

अनुशासन दो प्रकार का होता है - उपजत (जो जन्म से ही प्राप्त होता है) और प्राप्त किया हुआ। सूचनाएँ और प्रशिक्षण से सिर्फ उसी व्यक्ति में अनुशासन लाया जा सकता है जो उनसे लाभ पाने की क्षमता रखता हो। जिनमें स्वयं अनुशासन नहीं होता वो इससे लाभ नहीं उठा पाते।

प्रशिक्षण से सिर्फ वही लोग अनुशासन प्राप्त करते हैं जिनमें आगे बतायी गयी क्षमताएँ या कौशल्य होते हैं - गुरु या शिक्षक की आज्ञा का पालन करना, नया सीखने की चाहत और क्षमता जो ज्ञान प्राप्त किया है वह धारण । याद करने की क्षमता, जो सिखाया गया है वह समझने की क्षमता, उस पर विचार - चिंतन करने की क्षमता और अंतिमतः प्राप्त किये हुए ज्ञान पर विचार विमर्श कर अंतिम निर्णय पर आने की

क्षमता । जिनमें ऐसी बौद्धिक क्षमताओं का अभाव है उन्हें प्रशिक्षण से किसी भी मात्रा में लाभ नहीं हो सकता। जो राजा होगा उसे अधिकारी गुरु से शास्त्र सीख कर अनुशासन प्राप्त करना होगा और उसे कठोरता से जीवन में उतारना होगा।

### राजकुमार का प्रशिक्षण

एक राजकुमार (जो आगे चलकर राजा बनने वाला हो) उसे मुंडण समारोह होने के बाद (जन्म से तीन साल बाद) वर्णमाला और अंक गणित सिखना चाहिए। (पवित्र धागा पहनने का विधी) मौंजीबंधन (राजकुमार ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश करता है) होने के बाद उसे आधिकार प्राप्त गुरु से तत्वज्ञान और तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। राज्यशासन के अलग अलग विभागों के प्रमुखों से अर्थशास्त्र और राज्यशास्त्र के सैद्धांतिक प्रतिपादकों से और प्रत्यक्ष राज्यकारभार चलाने वाले राजकारणी लोगों से राज्यशास्त्र सीखना चाहिए। उम्र की सोलह साल तक उसे ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उसके बाद दुसरा मुंडण विधी कर के उसे शादी करनी चाहिए। मर्दानगी प्राप्त होने और विवाह होने के बावजूद भी राजकुमार की शिक्षण प्रक्रिया रुकती नहीं है।

स्वयं अनुशासन का विकास होने की दृष्टि से राजकुमार को हमेशा उससे बड़े ज्ञानी लोगों के साथ रहना चाहिये क्यों की उन्ही लोगो में उसके अनुशासन की जडे होती है। उसका प्रशिक्षण कार्यक्रम ऐसा होगा।

दिन के पहले भाग में उसे पैदल सैनिक जैसे युद्ध कला हाथी, घोड़े, रथ और शस्त्रास्त्रों का प्रशिक्षण लेना चाहिए।

दिन के दूसरे भाग में उसे इतिहास पढ़ना होगा।

उर्वरित दिन और रात के समय दूसरे दिन के नये पाठों की तैय्यारी करनी चाहिए और जो उसे समझ नहीं आया है उसे वारंवार पढ़ना चाहिए ।

ज्ञानप्राप्त व्यक्ति से सुनकर प्राप्त किया ज्ञान, स्वयं प्रयोग से प्राप्त किया ज्ञान और योगशास्त्र का प्रशिक्षण लेने के बाद ही किसी भी व्यक्ति का स्वयं नियंत्रण अच्छा हो जाता है। ज्ञान प्राप्त करने का इतना विस्तारित अर्थ है।



जो राजा ज्ञानी, अनुशासन पर चलने वाला, विषयों के न्यायपूर्ण शासन के लिए समर्पित और हमेशा सभी प्राणिमात्रों के कल्याण के लिये कटिबद्ध होता है वह बिना किसी विरोध के सारी पृथ्वी के वैभव को प्राप्त होता है।

## ३.२ स्वयं नियंत्रण

### छः शत्रुओं का त्याग

ज्ञान की सभी शाखाओं का इंद्रियों पर संयम रखने की क्षमता पाना यही एकमेव उद्देश है।

स्वनियंत्रण, जो स्वयं अनुशासन और ज्ञान की नींव है; वह हवस, क्रोध, हाव, दंभ, उद्धटता और मुख की कठीणता इन दुर्गुणों का त्याग करके प्राप्त होता है।

शास्त्रों के अनुसार जीवन जीने का मतलब श्रवण, स्पर्श, दृष्टी, स्वाद, और सूंघने द्वारा मिलने वाले सारे सुखों का ( इंद्रियों द्वारा प्राप्त भोग से अधिक सुखों) त्याग करना।

एक राजा; भले ही वो पृथ्वी के चारों कोनों पर राज्य करता है, अगर स्वनियंत्रण नहीं कर सकता और खुद को इंद्रियों द्वारा प्राप्त सुखों के अधीन कर देता है; वह नाश हो जाता है। उपर उल्लेखित दुर्गुणों के शिकार हुए और नाश हुए राजाओं के उदाहरण से १.६.५.- १० श्लोक भरे पड़े हैं: दंडक्य, भोजराजा और करला, विदेह राजा जिन्होंने ब्राह्मण कन्या की चाह रखी, जनमेजय और तळजंघा ब्राह्मणों के प्रति क्रोध दिखाने के लिये, इला सुविरस के इला और अजबिंदू का पुत्र हाव के कारण, रावण और दुर्योधन दुसरो के पत्नी की चाह में या राज्य का हिस्सा प्राप्त करने की चाह में खुद की दंभ की अभेद्यता के कारण, दम-बोधभाव और हैहय के अर्जुन उनकी उद्धटता के कारण, वातापी और कृष्णी (अगस्त्य और द्वैपायन के बारे में) मूर्खता से भरी कठीणता की वजह से। ये सभी और ऐसे कई; 'स्व नियंत्रण न होने की वजह से इन छः ( हवस, क्रोध, लालच, दंभ, उद्धटता और कठीणता) शत्रुओं का भक्ष्य बनकर अपना राजपद या राज्य खो बैठे। इसके विपरीत, जमदग्नी और अंबरीष; जिन्होंने इंद्रियों पर विजय प्राप्त की थी, राजाओं ने पृथ्वी पर बहुत लंबे कालावधी तक राज्य किया।

### राजर्षि: एक बुद्धिमान राजा :

राजर्षि अर्थात जो ऋषि की तरह बुद्धिमान है। वह होता है जो

- स्वनियंत्रण रखता है और जिसने प्रलोभनों पर विजय प्राप्त किया है।
- ज्ञानी जनों के सहवास में रहकर बुद्धि की प्रगती करता हो।
- गुप्तहेरों पर नजर रखता हो।
- जो लोगों की सुरक्षितता और कल्याण में निरंतर तत्पर हो।
- जो लोगों द्वारा धर्मपालन के बारे में निगरानी रखता हो और खुद के अधिकार और उदाहरण द्वारा सुनिश्चित करता हो।
- सभी ज्ञानशाखाओं का ज्ञान प्राप्त करते रहकर खुद की अनुशासन का विकास करते रहता हो।
- लोगों को समृद्ध बनाकर और उनका कल्याण कर खुद को लोकप्रिय बनाता हो।

ऐसे अनुशासित राजा ने

- दूसरों की पत्नी से दूर रखता हो
- दूसरों की संपत्ति हड़पना न चाहता हो
- अहिंसा का पालन करता हो
- दिवास्वप्न, मिथ्या अवडंबर, मुखों की संगती इन चीजों में दूर रहता है।
- हानिकारक लोग और हानिकारक गतिविधियों से दूर रहता हो।

राजा को इंद्रिय सुखोंसे वंचित रहकर खुद को तपस्वी जैसा जीवन जीने की कोई जरूरत नहीं है। जब तक वह अपने राजधर्म का उल्लंघन कर अपने भौतिक कल्याण को होनी जा पहुँचती हो ।

मानवी जीवन के तीन उद्देश : धर्म, अर्थ, काम एक दूसरे पर अवलंबित है और तीनों की समानरूप से अर्चना करनी चाहिये। किसी एक को दिया गया जादा महत्त्व उस उद्देश को और दूसरे उद्देशों को हानी पहुँचाता है।

कौटिल्य तथापि कहते हैं: वित्त अर्थ (अर्थशास्त्र) सबसे जादा महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्म और काम दोनोही उसपर निर्भर है।

जो मार्गदर्शक और पुरोहित राजा को अच्छे बर्ताव के बारे में चेतावनी देते हैं और मर्यादा लांघने के बारे में चेतावनी देते हैं उनका राजर्षि ने सम्मान करना चाहिये है जो एक अंकुश के रूप में राजासे अपने कर्तव्यों के बारे में याद दिलाता हो और जब राजा गलती करता है तब एकांत में उसे सावध करता हो।

सिर्फ न्यायी राजा को ही प्रजा से निष्ठापूर्वक समर्थन मिल सकता है। अगर राजा न्यायी है तो प्रजा, दुसरे राजा से हमला होने पर अपने राजा का मौत तक साथ देगी अगर वो कमजोर है तो भी। इसके विपरीत, राजा बलवान है लेकिन अन्यायी है तो प्रजा आक्रमण होनेपर बलवान और अन्यायी राजा को गिर पाड़ेगी या आक्रमक राजा के साथ जाएगी। राजधर्म में जिते हुए राजा और प्रजा के साथ न्याय्य व्यवहार अपेक्षित है। विश्वासघाती जागीरदार से छुटकारा मिल सकता है लेकिन विजेता को पराभूत राजा की संपत्ति, पुत्र और बीवीयाँ इनका लालच नहीं करना चाहिए उलटा, उन्हें उचित सम्मान और पद देने चाहिये।

### ३.३ राजा के कर्तव्य :

अगर राजा शक्तिवाली है तो उसकी प्रजा भी उतनी ही शक्तिशाली रहेगी। अगर राजा अपने कर्तव्य करने में ढीला हो, आलसी हो तो प्रजा भी ढीली और आलसी रहेगी और राजा की संपत्ति में कमी आएगी। इसके सिवा आलसी राजा सहजता से शत्रुओं के हाथ लगेगा। इसलिए राजा को हमेशा शक्तिशाली और कार्यरत रहना चाहिए।

दो घंटे के राजा दिन और रात के देड घंटेके आठ हिस्से करेगा और अपने कर्तव्य नीचे दिए गए सारणी के अनुसार करेगा।

सूर्योदय के बाद का पहला देड घंटा	संरक्षण, उत्पन्न और खर्चों के तपशील लेना
सूर्योदय के बाद का दूसरा देड घंटा	लोगों की शिकायते, शहर के और ग्राम लोगों की याचिकाए सुनना
सूर्योदय के बाद का तिसरा देड घंटा	स्नान, भोजन, अभ्यास राजस्व/ आय और मानवंदना स्वीकार करना, मंत्रियों की नियुक्ती करना, अन्य उच्च

	अधिकारियों की नियुक्ति और उनमें महत्वपूर्ण कार्यों का प्रदान करना
दोपहर के बाद का पहला देड घंटा	पत्र लिखना और उनको भेजना, समुपदेशक, मार्गदर्शकों के साथ सभा संमिलित करना, गुप्तहेरोंसे जानकारी प्राप्त करना
दोपहर के बाद का दूसरा देड घंटा	वैयक्तिक मनोरंजन चिंतन के लिये समय
दोपहर के बाद का तिसरा देड घंटा	सैन्य की समीक्षा और परीक्षण, प्रमुख सैन्य अधिकारी से विचार विमर्श

**संध्या प्रार्थना से दिन का अंत होगा**

सूर्यास्त के बाद का पहला देड घंटा	गुप्तहेरों से बातचीत
सूर्यास्त के बाद का दूसरा देड घंटा	स्नान, भोजन अभ्यास
मध्यरात्री के बाद का पहला देड घंटा	शयन कक्ष में जाकर संगीत सुनना और सोना
मध्यरात्री के बाद का दूसरा देड घंटा	प्रातः कालीन संगीत सुनकर जागना तथा राजकीय विषयोंपर चिंतन और आज करने वाले कार्यों के बारे में नियोजन
मध्यरात्री के बाद का तिसरा देड घंटा	मार्गदर्शकोंके साथ विचार विमर्श और गुप्तहेरों को भेजना
सूर्योदयपूर्व देड घंटा	धार्मिक घरेलू वैयक्तिक काम काज, गुरु से मिलना पुरोहित राजवैध, खानसामा और ज्योतिषी से मुलाकात

सूर्योदय के समय ( गाय, बछड़ा और बैल ) गौशाला का चक्कर लगाकर दरबार में प्रवेश करना है। राजा को २४ में से साडेदस घंटे उसके निजी काम के लिये जैसे स्नान और भोजन के लिये तीन घंटे, मनोरंजन के लिये देड घंटा, रात के छह घंटे जिसमें राज चार साडेचार घंटे सोने के लिए, सूर्योदय से पहले का देड घंटा वैयक्तिक जरूरतों के लिये और राजमहल की गतिविधियों के लिए।

हरदिन के १२ में से राजकीय कार्यों के लिये समय : देड घंटा लोगों की याचिकाए सुनना, तीन घंटे संरक्षण, तीन घंटे गुप्त मुलाकाते एवं विचार विमर्श और बचे चार साडेचार घंटे राज्य का शासन कार्य करने के लिये।

राजा उसकी क्षमता के अनुसार ( उपर दिया गया समयपत्रक केवल मार्गदर्शक है।) समयपत्रक में बदलाव कर सकता है और अपने कर्तव्य कर सकता है।

दरबार में राजा ने याचिकाकर्ताओं को दरवाजे पर राह देखते हुए नहीं खड़ा करना चाहिए। तत्परता से उनसे मिलना चाहिए। जब राजा लोगों के लिए उपलब्ध नहीं होता है और (सिर्फ) अपने पसंदीदा / करीबी लोगों के साथ दिखाई देता है तो गलत फैसले लिये जाते हैं। लोग क्रोधित हो जायेंगे और उसके शत्रु के पास जाएंगे। इसलिए राजा को निम्न लिखित क्रम में लोगों से मिलना चाहिए। कोई जादा महत्त्वपूर्ण और तत्काल अतिआवश्यक ना होने पर।

भगवान और देवता, तपस्वी, विधर्मी, ब्राह्मण ( वेदों के अभ्यासक ) गाय, पवित्र स्थल, नाबालिग, वृद्ध, बीमार अपंग असहाय्य लोग, औरते। राजा को सभी अति आवश्यक बातों को, मामलों को सुनना चाहिए। उन्हें स्थगित नहीं करना चाहिए क्यों की स्थगित करना उन्हें जादा जटिल और कभी कभी निपटाने के लिए अशक्य बना देता है।

वेदों के अभ्यासक और संन्यासीयों के मामलों पर राजाको योग्य आदरसत्कार कर निर्णय लेना चाहिए। ऐसी सुनवाई पवित्र अग्नी के सामने गुरु और धर्मोपदेशकों की उपस्थिती में करनी चाहिए।

संन्यासी और जादूटोना करने वालों के साथ राजा को अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। क्यों की ये लोग जल्दी गुस्सा हो जाते हैं। ये सभी कार्य कभी भी अकेले में नहीं सुनने चाहिए। परंतु तीन वेदों के ज्ञानी लोगों के साथ सुनने चाहिए।

ब्राह्मण धार्मिक व्रत लेते हैं, बलि चढ़ाते हैं, जो ये काम करते हैं, उन्हें उनका शुल्क देते हैं और दीक्षा समारोह से गुजरते हैं। वैसेही राजा को कार्यतत्परता का व्रत लेना है। काम करते उसके कर्तव्यों की समाधान कारक पूर्ति ही उसकी यज्ञ में आहुती चढ़ाना है, निष्पक्षता से कार्यकर्तव्य करना ही उसका फल है। उसका राज्याभिषेक ही उसका जीवनभर का दीक्षा समारोह है।

प्रजा के सुख और क्षेमकल्याण में ही राजा का सुख और क्षेमकल्याण होता है। जो अपने को आनंद देता है उसे सिर्फ अच्छा नहीं समझना चाहिए बल्कि प्रजा को जो फायदेमंद है उसे राजाने अच्छा समझना चाहिये।

अर्थव्यवस्था को कार्यरत रखने के लिए राजा सदा तत्पर रहेगा। संपत्ती का मूल वित्तीय गतिविधियाँ होती हैं। उनके अभाव में भौतिक तणाव निर्माण होता है।

फलदायी आर्थिक गतिविधियों के अभाव में चालू विकास और भविष्य की प्रगती का नाश होता है।

उत्पादक अर्थशास्त्रीय गतिविधियोंको संचालित कर के राजा अपने उद्देश्य और धन की विपुलता प्राप्त कर सकता है।

### 3.4 राजा की सुरक्षा

यह विभाग करीबी कुटुंब सदस्य जैसे रानी और राजपुत्र द्वारा जान से मारे जाने के धोके में लिये जानेवाली सावधानी के अलावा वैयक्तिक सुरक्षा और राजनिवास को सुरक्षित रखने के साधनों का भी समावेश है।

#### शाही निवास

वास्तुविशारदों ने शिफारस किये हुए जगह पर राजा का शाही निवास होगा। शाही निवास दीवार से सुरक्षित होगी, दीवार के नीचे खाई होगी। शाही निवास में प्रवेशद्वार होंगे जो सुरक्षारक्षकों द्वारा सुरक्षित रखे जायेंगे। विभिन्न उद्देश्यों के हेतू नीचे दिए गए वर्णन के अनुसार विभिन्न सभागृह होंगे।

राजा का खुद का कक्ष वास्तु के बीचोबीच होगा जिसे अक्सर आपत्कालीन बाहरी दरवाजे होंगे। जब कोई आकस्मिक धोखा हो जाये तो निकलने के लिये। नीचे दिए गए नमूनों में से कोई भी स्वीकारा जा सकता है।

१) तीन भूमिगत मंजिलों में संरक्षित खजाना

२) दीवारों में छिपे मार्ग के साथ एक भूलभुलैया के बीच

३) एक भूमिगत कक्ष ( दीवार में छिपी एक सीढ़ी से उपरी रहने के स्थान से जुड़ा हुआ) जिसमें एक गुप्त भूमिगत मार्ग है जो पास के मंदिर की ओर जाता हो जिसमें बाहरी मार्ग भगवान की लकड़ी की छबी से छिपाया गया हो।

४) एक दीवार में छिपी एक सीढ़ी के साथ एक उपरी मंजिल में एक आपातकालीन निकास के साथ एक खोखले खंभे था एक छिपे हुए जाल के दरवाने के पीछे निर्माण के प्रकार को वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर भिन्न किया जा सकता है। जबतक की महल के हमले से खुद को बचाने की आवश्यकता होती है ये ध्यान में रखा जाए।

कौटिल्य, रहस्यमय स्वभाव के कारण, आग, सर्प और जहर जैसे धोखे टालने के लिए बहुत से भूमिगत उपाय बताते हैं राजवाड़े से बाहर निकलने के लिए।

साप और अन्य जहरों से आवासीय वसाहते सुरक्षित रखनी चाहिए। पौधे जो जहर का प्रभाव रोखाते हैं उन्हें लगाना चाहिए। मोर जैसे साँप को मारने वाले पक्षी और मुंगूस जैसे प्राणी और जहर के अस्तित्व के बारे में सूचना तोता, श्राईक बगुला जैसे पक्षियों को पालना चाहिये।

### **राजमहल की अन्य इमारतें**

राजा के खुद के कक्ष के पीछे अन्य इमारतें कुछ इस प्रकार की रचना में बनवायी जाएगी।

शाही स्त्रियों के कक्ष, प्रसूती कक्ष, इनफर्मरी, पानी के हौद और पौधे

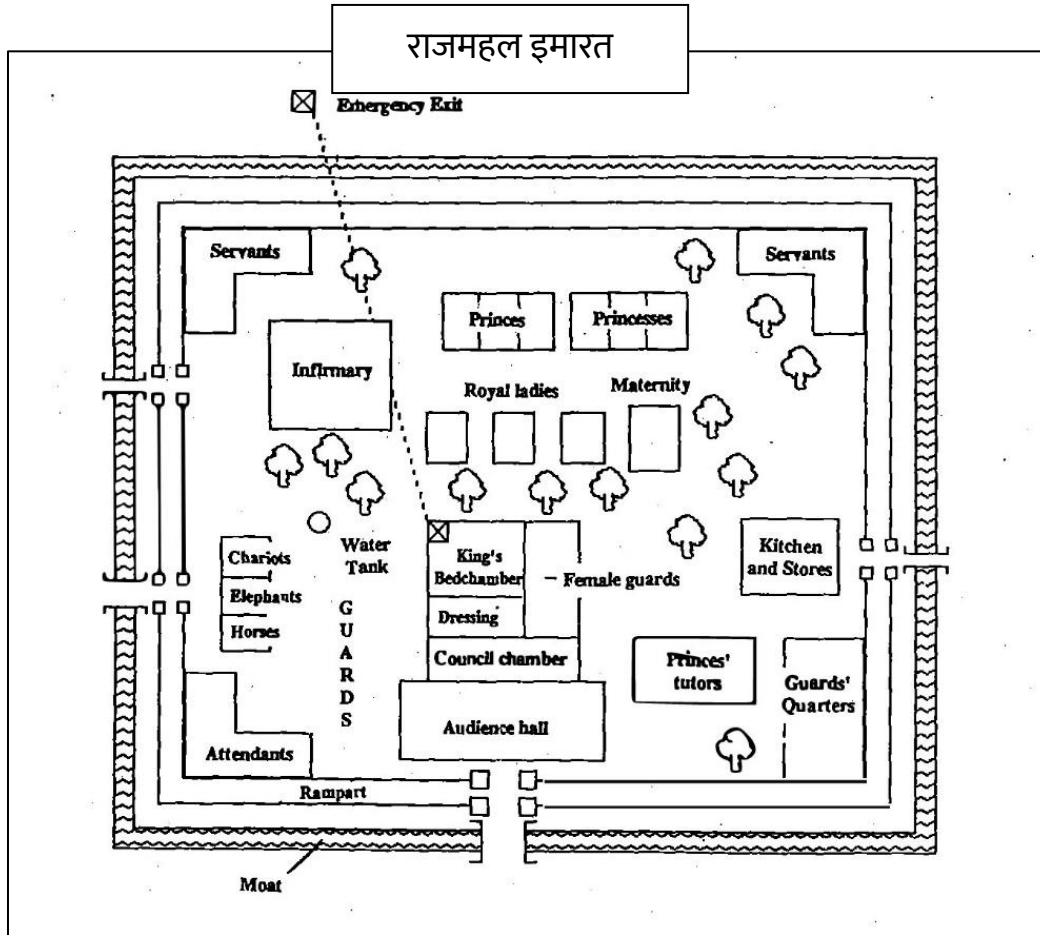
राजकुमार और राजकन्याओं के कक्ष इस गट के इमारतों के पीछे होनी चाहिये।

राजा के कक्ष के सामने राजा के लिये प्रसाधन कक्ष, परिषद कक्ष, सुनवाई कक्ष और राजपुत्र के शिक्षण का कक्ष होने चाहिये। कक्ष के सुरक्षारक्षकों को इमारतों के बीच बीच में स्थान दिया जायेगा।

### हालचाल नियंत्रण

रहिवासी कक्षों में हर कोई अपने अपने दिये हुए कक्ष में रहेगा। और कोई भी दूसरे के कक्ष में प्रवेश नहीं करेगा। बाहर के लोगों से अंदर का कोई भी व्यक्ति संपर्क नहीं करेगा।

राजमहल के अंदर आनेवाली और बाहर जानेवाली हर चीज आते और जाते वक्त जाँची परखी जानी चाहिये। उस हर चीज की नोंद रखी जायेगी और योग्य मोहर लगाकर उचित स्थानपर भेज दी जाएगी।





### ३.५ राजा की सुरक्षा :

जैसे की एक राजा उसके राज्य की और प्रजा की सुरक्षा के लिए गुप्तहेरों की नियुक्ति करता है, उसी प्रकार उसे खुदकी सुरक्षा के लिए भी गुप्तहेर तैनात करने चाहिए।

राजा जब अपने कक्ष में सो रहा होता है, महिला तीरंदाज रक्षक पास के कक्ष से उसका रक्षण करेगी। जाग जाने के बाद दूसरे कक्ष में वैयक्तिक परिचारकों से, तिसरे कक्ष में बौने, कुबड़े और किरातों से और चौथे कक्ष में मंत्री और निकटवर्तियों से मिलेंगे। द्वारों का रक्षण सुरक्षा रक्षकों द्वारा किया जायेगा।

अपने व्यक्तिगत साहाय्यक के रूप में राजा उन्हीं लोगों को काम पे रखेगा या नियुक्त करेगा जिनके पिता, दादा शाही कुटुंब में सेवा दे चुके हैं। जो नजदिकी रिश्ते से बंधे हुए हो या सेवा में जिनकी निष्ठ जांची परखी गयी हो।

शाही निवास या राजा की सुरक्षा हेतू कभी भी परदेशी लोगों को; जिनकी सेवा को पुरस्कार के योग्य नहीं समझा गया है, नहीं नियुक्त किया जायेगा। और दुष्ट बुद्धी रखने वाले अगर वो इसी देश के लोग हैं तो भी उन्हें नियुक्त नहीं किया जाना चाहिये।

मुख्य खानसामा, अच्छी तरह से सुरक्षित जगह में स्वादिष्ट खाने के पदार्थों की रसोई पर निगरानी रखेगा। राजा सिर्फ ताजे पके पदार्थ अग्नि को आहुती देने और पक्षियों को खिलाने के बाद खायेगा।

राजवैद्य और जहर पर इलाज करने वाले तज्ज्ञ राजा का परीक्षण करेंगे। राजवैद्य उसके साहाय्यकों द्वारा शुद्धता का परिक्षण करने के बाद और उनसे चखने बाद ही राजा कोई दवा का सेवन करेगा। इसी प्रकार से राजा कोई भी पानी या मद्य दूसरों द्वारा चखने के बाद ही पियेगा।

अच्छी तरह से नहाने के बाद और साफसुथरे कपड़े पहनकरही राजा के नाई और सेवक राजा की सेवा करेंगे। उनको उनके काम की चीजें संबंधित अधिकारियोंसे मोहोरबंद स्थिती में मिलनी चाहिये।

राजा के महिला नोकरवर्ग जिनकी एकरूपता सिद्ध है, या तो खुद काम करेगी या काम पर निगरानी रखेगी। स्नानगृह के कर्मचारी, बिछाना लगानेवाले लोग, धोबी, हार बनानेवाले माली इ., वे राजा को कपड़े और हार, काजल और तेल, सुगंधी उबटन, इत्र और ऐसी सभी चीजें जो राजा के स्नानगृह में श्रृंगार के लिये

इस्तेमाल होती हो वो सब खुद पर जाँच परखने के बाद ही राजा को दी जाएगी। कोई भी बाहरी व्यक्ति से प्राप्त चीज़ इसी तरह परीक्षा करने के बाद ही स्वीकार होगी।

राजा का मनोरंजन करनेवाले अभिनेता और कलाबाज कला का प्रदर्शन करते वक्त कोई शस्त्र, आग या जहर का इस्तेमाल नहीं करेंगे।

संगीतकारों के वाद्य हमेशा महल के कक्ष में ही रहेंगे। इसी तरह सारे रथ और हाथी घोड़ों पर डालने वाले झूल झूल वस्त्र महल के कक्ष में ही रहेंगे।

राजा किसी वाहन या प्राणी की तभी सवारी करेगा जब कोई विश्वसनीय सेवक उसपर हो। किसी नाँव पर राजा तभी जाएगा जब नैय्या चालक विश्वसनीय हो अगर नैय्या कोई दूसरा व्यक्ति चलानेवाला हो तो राजा कभी भी उसपर नहीं जाएगा। या जब तूफान हो तब भी नहीं जाना चाहिये। राजा के सैनिक हमेशा रक्षण के लिये पानी के पास खड़े होने चाहिये।

धोकादायक मछलियाँ और मगरमच्छ को निकालकर सुरक्षित किए गए पानी में ही राजा को तैरने के लिए जाना चाहिये। किसी उद्यान में भी टहलने के लिये राजा तब जायेगा जब वहा सर्प वगैरा न हो। जंगलो में शिकार के लिए वहीं जाना चाहिये जहाँ जंगली जानवर, शत्रू और लुटेरों का डर ना हो।

कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें राजा को ने कभी अकेले में बरी मिलना चाहिए। पवित्र साधू के साथ तभी मिलना चाहिये जब शस्त्रसहित रक्षक पास हो। परदेश के दूतों के साथ मंत्रीगणों के साथ ही मिलना चाहिये। खुद शस्त्रास्त्र पहनकर ही घोड़े, हाथी या रथ पर बैठकर ही राजा को सैनिकों की पलरण का परीक्षण करना चाहिये। पैदल कभी नहीं।

राजा जब गढ़-किले में प्रवेश करता हो या उससे कहीं दूर जाता हो तब रस्ते के दोनों तरफ सुरक्षा रक्षक और ढोल पिटने वाले होने चाहिए। शस्त्र धारण करने वाले लोग और साधू, बैरागी ( क्योंकि उनके भेस में जासूस हो सकते हैं) ऐसे लोगों से राजा का रास्ता साफ होना चाहिए। भीड़ में राजा को कभी नहीं जाना चाहिए। उत्सव, त्योहार, यात्रा में भी दस सैनिकों के संरक्षण में ही जाना चाहिये।

## रानी और राजकुमार से संरक्षण :

राजा अपने राज्य का तभी रक्षण कर पाएगा जब वो खुद अपने नजदीकी लोगों से सुरक्षित रहे जैसे उसकी रानीयों और बच्चे ।

### रानी

ऐसे बहुत सारे किस्से हैं जिसमें राजा का रानी के हाथो या रानी के महल में कत्ल कर दिया गया हो। भद्रसेन को उसके खुद के भाई ने रानी के कक्ष में मार डाला इसी प्रकार करुष को उसके पुत्र ने अपनी माँ के पलंग के नीचे छुपकर मार डाला था।

अन्य कई रानीयों ने पती को खाने में जहर मिलाकर मार डाला या किसी जहरीले रत्न या गहनो के साथ या गुप्त हथियार से । राजा को हमेशा ऐसे खतरों से सावध रहना चाहिये और ऐसे धोखों को टालना चाहिए।

राजा रानी को उसके कक्ष में तभी मिलने जाएगा जब विश्वसनीय वृद्ध दाई उसे आश्वस्त करे की रानी से उसे कोई धोखा नहीं है। राजा ने रानी को मुंडण किए हुए साधू या उलझे बाल वाले साधुओं से मिलने नहीं देना चाहिए। दूसरे राज्यों से आए बाजीगर, जादूगर या महिला नौकरों से रानी के मिलने पर रोक लगानी चाहिए।

कुटुंब के सदस्यों ने भी रानी से नहीं मिलना चाहिए, सिवाय ऐसे प्रसंग जब वो बच्चे को जन्म दे रही हो या बीमार हो । रानी को सेवा देनेवाली गणिकाएं खुद स्नान कर साफ सुधरे कपड़े पहनकर रानी के पास आएगी।

रानी के वैयक्तिक साहायकों की एकाग्रता पर ८० साल वृद्ध द्वारा नजर रखनी चाहिए। या ५० साल की वृद्धा जो किसी सेवक की माँ हो ) या निवृत्त सेवक या किन्नर हो । ये सब निरीक्षक राजा के हित में अपने कार्य करेंगे।

## राजपुत्र

राजपुत्रों के बारे में विभिन्न मतप्रवाह है: भारद्वाज कहते हैं राजपुत्र; केकडे जैसे अपनी ही थैली को खाते हैं, वैसे होते हैं। राजा को राजपुत्र से खुद को उसके जन्म से ही सुरक्षित रखना चाहिए। अगर उनमें स्नेह की कमी हो उन्हें मार देना ही बेहतर होगा।

मारना दुष्टतापूर्ण है विशालाक्ष कहते हैं; गलती से किसी निष्पाप की तिम करूँ जान जा सकती हैं। उन्हें एक जगह पर निगरानी में रखना क्षत्रिय को मारने से बेहतर है।

पराशर के शिष्य कहते हैं, ये एक साप को पालने जैसा है। (सीमाबद्ध किया हुआ) राजपुत्र सोचेगा की उसके बापने यह डर की वजह से किया और वह बाप को अपने प्रभाव में लाएगा। उसे किसी सीमावर्ती किले में भेज देना बेहतर है।

पिसुना कहते हैं, यह लढनेवाले मेढ़े को घसीटकर लाना है जो केवल वापस भागेगा; अपने को क्यों दूर रखा गया ये जानने के बाद वो अपने पिता के खिलाफ सैन्य के अधिकारी से संधान करेगा। दूसरे राजा के किले पर उसे अपने राज्य से दूर रखना ही अच्छा है।

"यह किसी बछड़े को बंधक के रूप में देने जैसा है। कौनपदत कहते हैं, जिस राजा को राजकुमार सौपा गया हो वह अवश्य ही पिता का दूध दुहना शुरू करेगा। राजपुत्र को अपनी माँ के रिश्तेदारों के साथ रहने के लिए भेजना अच्छा।

"वात व्याधी कहते हैं, यह निश्चित रूप से समागमन का झंडा उठाते राजपुत्र की ओर से संबंधों को बिगड़ना तय है। सुख में मग्न रखने से उसका नाश हो ही जाएगा, सुखासीन पुत्र पिता का मत्सर नहीं करेगा।

कौटिल्य इन सबसे सहमत नहीं है। राजपुत्र के जनमसे ही उसके साथ संशयपूर्ण बर्ताव करना मौत जीने जैसा है। एक शाही कुटुंब; विना अनुशासित राजपुत्रों के साथ जैसे दीमक लगे लकड़ी का खंभा गिरता है वैसे नष्ट हो जाएगा। अपने राजपुत्र को राजा के खिलाफ होने की हर संभावना टालनी चाहिए।

जब रानी गर्भधारणा के लिये तैयार होती है तब राजा ने पुरोहितों से इंद्र और बृहस्पति को चढ़ावा चढ़ाना चाहिए।

जब रानी गर्भवती हो, उसके आरोग्य की निगरानी करनी चाहिए और विशेष वैद्यकों की नियुक्ति कर उसकी सुरक्षित प्रसूती होनी चाहिए।

जनमके बाद पुरोहित आवश्यक शुद्धी क्रिया करेंगे।

योग्य उम्र का हो जाने के बाद राजपुत्र का विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण होना चाहिए।

कुछ मार्गदर्शकों का ये भी कहना है की इतने सारे सुरक्षा के इंतजाम के बावजूद राजपुत्र की निष्ठा परखनी चाहिए। अंभी सूचित करता है की राजपुत्र को शिकार, जुगार, मद्य, स्त्री जैसे आमिष दिखाकर ललचाना चाहिए। उसे राज्य कब्जे में लेने को गुप्तहेरों द्वारा कहना चाहिए। अन्य गुप्तहेरों को उसे राजा विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न करना चाहिए।

कौटिल्य कहता है; एक निष्पाप मन पर दुष्ट विचार डालने जैसा बड़ा कोई पाप या गुनाह नहीं है। जैसे एक साफ पृष्ठभाग पर जो भी छाप लगेगा वैसा ही चित्र उमड़कर आएगा। वैसे उमड़ा मन के राजपुत्र को जो भी सिखाया जाएगा वही वो सच मान लेगा। इसलिए राजपुत्र को सही धर्म और अर्थ क्या है इसका ज्ञान देना चाहिए ना की क्या अनैतिक है और भौतिक हानीकारक।

राजपुत्र को ललचाने के बावजूद और गलत हानीकारक सूचनाओं के बजाय गुप्तहेरों को उसका निष्ठा व्यक्त कर संरक्षण करना चाहिए। अगर यौवन के उत्साह में वो किसी दूसरे की पत्नी की ओर कामना से देखता है तो गुप्तचरोंको ऊँची जाती का भेष धारण करने वाली गंदी भयानक स्त्री से अकेले में रात में मिलवाकर डरा देना चाहिये। अगर उसे मद्य का आकर्षण होता है तो उसे दूषित मद्य दिखाकर दूर करना चाहिये। अगर उसे जुवा खेलना आकर्षित करता है तो धोखाधड़ी करने वाले जुआरीयों के साथ उसे घृणा निर्माण करनी चाहिए। अगर उसे शिकार करने की चाह हो तो साथीदारों द्वारा उसे महामार्ग के लुटेरों का डर दिखाना चाहिए।

अगर वो अपने पिता के खिलाफ होता है तो गुप्तचरोंने उसका विश्वास संपादन कर लेना चाहिए। और बाद में राजा पर हमला करने से उसे घृणा आनी चाहिए। राजपुत्र को उन्होनें ऐसे कहना चाहिए की अगर वो इसमें कामयाबी न हासिल करता है तो उसका कत्ल कर दिया जाएगा। अगर वो सफल होता है तो लोग उसका निषेध करेंगे और इस पिता की वध का पाप करने से उसे नरकवास प्राप्त होगा।

## सजाएँ

राजा और शाही संपदा के विरुद्ध किए गए गुनाहों के लिये

१) शाही रथ घोड़े या हाथी पर सवारी	एक हाथ और एक पाँव काटना या ७०० पण दंड
२) राज को गाली देना या राजा के बारे में झूठी अफवाह फैलाना	जीभ खिंचना
३) शाही हाथी घोड़े पर सवारी या उसकी चोरी शाही रथपर सवारी या चोरी	पटकने से मौत
४) रानी के साथ यौन संबंध रखना	जिंदा उबालने से मौत

## ३.६ विद्रोह, बंड, षडयंत्र और देशद्रोह

देशद्रोह, नमकहरामी, विद्रोह और बंड ये राजा के लिए हमेशा उपस्थित रहनेवाले धोखे हैं। राजा राज्य का अवतार होने के कारण, उसे खत्म करना राज्य पर कब्जा करने का सबसे अच्छा साधन है। हर किसी से ये धोखा है।

राजा और रानी के करिबी लोग, राजकुमार जिसे राजसिंहासन हड़पना है, पुरोहित, सांसद मंत्रिगण, सैन्य का प्रमुख कोई भी नमकहरामी कर सकता है। ग्रामजन बंड कर सकते हैं। सीमांत क्षेत्र का अधिकारी राज्य से अलग होना चाह सकता है। आदिवासी प्रमुख और जागीरदार राजा की अधिपत्य से मुक्त होना चाहते हैं। ये सब संभाव्य बंडखोर लोग अकेले या आपस में मिलकर सत्ता पलट सकते हैं या शत्रूराजा से मिल सकते हैं। राजा जब किसी युद्ध की वजह से राज्य से, राजधानी से दूर गया हो तब उसकी अनुपस्थिति में विद्रोह की संभावनाएँ रहती हैं।

जनता में किसी कारण असंतोष हो तो वह विद्रोह का कारण हो सकता है। राजा को ये सलाह दी जाती है कि वो असंतोष होने का अंदाज लगाए और उसे निपटाने के लिए उचित कदम उठाए। लोगों के क्षेमकल्याण को कौटिल्य बहुत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। अगर लोग निर्धन बन जाते हैं तो वो लालची और विद्रोही बन सकते हैं।

लोगों की निर्धनता बढ़ाने वाली और उनमें असंतोष पैदा करने वाली १६ योजनाओं की यादी (७.५.१९-२६) में दी है और मीमांसा (७.५ २७-३७) में दी है।

### ३.७ असंतोष का अंदाज लगाना और असंतोष टालना

साधू-संन्यासी के भेस में गुप्तहेरों को ढूंढ लेना चाहिये। कौन सुखी है और कौन असंतुष्ट है, यह जान लेना जा चाहिए।

- राजा के ऊपर धान्य, पशु और पैसे के लिये अवलंबित लोग
- राजा को सम्पन्नता और प्रतिकूल परिस्थितियों में मदद करनेवाले
- क्रोधित लोग या प्रदेश को नियंत्रित करने या नियंत्रित करने में मदद करनेवाले लोग
- शत्रु और जंगली चोरों को पीछे हटानेवाले लोग

संतुष्ट लोगों को जादा सम्मान और संपत्ति देकर उनकी प्रशंसा की जाए। असंतुष्ट लोगों को समझौता करके आनंदीत किया जा सकता है। अगर यह काम नहीं करता और वे असंतुष्ट ही रहते हैं तो उन्हें कर और जुर्माना वसूल करने के काम लगा देना चाहिए। ताकि उन्हें जनता के क्रोध का सामना करना पड़े। जब लोग उनसे घृणा करने लगेंगे तो उन्हें या तो उनके खिलाफ एक लोकप्रिय विद्रोह भड़काकर या गुप्त दंड देकर समाप्त कर दिया जाएगा।

उन्हें खदानों या कारखानों में काम के लिये भेजा जाए और उनके बीबी बच्चों पर कड़ी नजर रखी जाए ताकि शत्रु द्वारा उनका इस्तेमाल ना हो सकें।

असंतुष्ट लोगों को कभी एक साथ मिलने का मौका नहीं देना चाहिए। या पास के राजकुमार, जंगल अधिकारी, राजा के करिबी रिश्तेदारों से हाथ मिलाने के अवसर नहीं देने चाहिए क्योंकि वे तख्त पलट सकते हैं और असंतुष्ट राजकुमार भी। अगर ये धोखा है तो उनके बीच मतभेद के बीज बोने से निपटाया जा सकता है।

९.३.९-३४ में तख्तापलट को एक विशेष मामले के रूप में निपटाया जाता है। विद्रोह राज्य के घटकों के भीतर, राज्य के केंद्र में या बाहरी क्षेत्रों में राजधानी से दूर हो सकता है। इसे हृदयभूमी या बाहरी क्षेत्रों में

उकसाया जा सकता है। जिससे चार शक्यता पैदा होती है जिनका तार्किक विश्लेषण ९.५.४-३२ में दिया गया है।

युद्ध पर जो दसवा खंड या पाठ है उसमें आंतरिक विश्वास घात के दुश्मन राजा द्वारा उकसाने का वर्णन किया गया है। राजा को दुश्मन द्वारा प्रेरित विश्वासघात के खिलाफ सावधान रहना है। उसे यह भी सलाह दी गई है की दुश्मन जैसे लोगों के समान तोड़फोड़ का अभ्यास करें।

गलत योजनाओं की कार्यवाही जो इस करार के तत्त्व और तरीकों से मेल नहीं खाते; विद्रोह को जन्म दे सकती है। असंयमित बर्ताव (अत्याधिक मद्यपान, स्त्रियों के सहवास की कामना) एक शैतानी प्रथा है जो अपने ही लोगों को विद्रोह करने के लिये उकसाती है।

बिना हिचकिचाहट, राजा को अपने शिबीर में और शत्रु के खिलाफ धोखेबाजों को गुप्त सजा देने के तरीके अपनाने चाहिए। किंतु राजा को इसके तुरंत परिणाम और आगे हो सकनेवाले परिणामों का खयाल करना चाहिए।

### ३.८ प्रजा में नैराश्य

अब लोग दरिद्री होते हैं तो वे लालची हो जाते हैं। जब वे लालची होते हैं तो वे निराश हो जाते हैं। और जब वे निराश होते हैं तब या तो वे शत्रु के पास जायेंगे या खुद राजा को मार डालेंगे।

जब राजा निम्नलिखित में से कोई काम करता है तो दारिद्र्य लालच और नैराश्य प्रजा में बढ़ने का धोखा होता है

- १) अच्छे लोगों को दुर्लक्षित कर बुरे लोगों को कृपा करता है
- २) अयोग्य व्यवस्थाएँ लाकर हानी पहुँचाता है।
- ३) योग्य और न्याय्य व्यवस्थाओं की ओर ध्यान न देता हो
- ४) धर्म का खंडन और अधर्म को बढ़ावा देता हो
- ५) जो करना चाहिए वो ना करता हो और जो नहीं करना चाहिये वो करता हो।
- ६) जो नहीं देना चाहिए वो देता हो और जो न्याय्य या उचित ना से वो माँगता हो ।



७) जिन्हें सजा मिलनी चाहिए ऐसे लोगों को छोड़ देता हो और जिन्हें सजा नहीं मिलनी चाहिये उन्हें सजा देता हो

८) जिन्हें गिरफ्तार नहीं करना चाहिये उन्हें गिरफ्तार करता हो और जिन्हें कैद करना चाहिये उन्हें गिरफ्तार करने में असफल होता हो

९) फिजूल के खर्च करता हो और फायदेमंद उद्योग सेवाएँ नष्ट करता हो

१०) चौरों डकैतों से लोगों का रक्षण ना कर पाता हो और खुद ही लोगों को लूटता हो

११) जो काम करने चाहिए वो ना करता हो और दूसरों ने किए काम को गालियाँ देता हो।

१२) जनता के नायकों को हानी पहुँचाता हो और सम्मान पात्र लोगों का अपमान करता हो।

१३) की गई सेवा का मूल्य न अदा करता हो

१४) जो तय हुआ है; करार का अपना हिस्सा ना उठाता हो

१५) अपने आलस्य और लापरवाही से लोगों के संपत्ति का नाश करता हो

एक राजा ; जो पैतृक धन का अपव्यय करता है, स्वयं का धन खर्च करता है या कंजूसी करता है वो गलत नीतियाँ अपना रहा है।

इसलिये राजा कभी भी ऐसे काम नहीं करेगा जिनसे जनता में गरीबी, लालच और नैराश्य बढ़ेगा और अगर ऐसा होता भी है तो वो दूर करने के लिये तत्परता से उचित उपाययोजना अंमल में लाएगा।

प्रजा में निराशा होने के परिणाम क्या होते हैं?

गरीब लोग जबरन वसूली और उनके संपत्ति के विनाश से डरते हैं। वे तत्काल शांति, युद्ध या स्थलांतर चाहते हैं। युद्ध पर खर्चा कम हो, जीत के बाद धन की आशा या दुःख से बचाव, विभिन्न प्रकारों के संबंध में धन या अनाज की कमी के कारण आई गरीबी अधिक गंभीर होती है, क्योंकि ये राज्य में हर चीज के लिए खतरा पैदा करती है। जानवरों और आदमी की कमी को पैसे और अनाज से पूरा किया जा सकता है।

लालची लोग असंतुष्ट रहते हैं और शत्रू के बहकाने में आसानी से फंस जाते हैं। इस समस्या का समाधान आसान है।

अगर कुछ प्रमुख लालची हैं तो उन्हें शत्रू की संपत्ति का हिस्सा देने का वादा कर कर संतुष्ट किया जा सकता है या उन्हें निकालकर छुटकारा पा सकते हैं।

जब राजा पर शत्रू का आक्रमण होता है तो विद्रोह में, असंतुष्टी में वृद्धि होती है। नेताओं को दबाकर असंतोष का मुकाबला किया जा सकता है।

नेताओं के बिना लोगों को अधिक आसानी से काबू में रखा जा सकते हैं। दुश्मन के उकसाने के प्रति कम संवेदनशील होते हैं और विद्रोह सहन करने में कम सक्षम होते हैं। जब नेताओं को कब्जे में लिया जाता है तो लोग विखंडित, संयमित और विपत्तियों का सामना करने में अधिक सक्षम हो जाते हैं।

### ३.९ विद्रोह और बंड

राजा को आंतरिक तथा दूरस्थ क्षेत्रों में खतरों का डर रहता है खासकर जब वो कोई अभियान शुरू करने वाला हो। आंतरिक विद्रोह किसी राजपुत्र, पुरोहित, रक्षाप्रमुख या एक मंत्री के नेतृत्व में हो सकता है। बाहरी क्षेत्र; बाहरी विद्रोह में किसी प्रांत का प्रमुख, सीमा चौकी का प्रमुख, जंगल जाती का प्रमुख, जागीरदार राजा के नेतृत्व में होता है।

एक आंतरिक विद्रोह बाहरी क्षेत्रों के विद्रोह से अधिक खतरनाक है क्योंकि यह किसी के आस्तित्व में एक सांप को पालने जैसा है।

पार्षदों और मंत्रियों के बीच विद्रोह किसी भी अन्य प्रकार के आंतरिक विद्रोह की तुलना में अधिक बड़ी समस्या है। इसलिए, राजा खजाने और सेना को अपने नियंत्रण में रखे।

विद्रोह से बचाव: एक राजा जो [विजय के] अभियान पर जाने वाला है, उसे अपने साथ [बंधक के रूप में] ले जाना चाहिए: i) आंतरिक विद्रोह के संदेह के मामले में, संदिग्ध व्यक्तियों और ii) सीमांत विद्रोह के संदेह के मामले में संदिग्ध लोगों की पत्नियाँ और बच्चे।

आंतरिक विद्रोहों पर काबू पाना: एक राजा को एक अभियान पर तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक कि उसने विद्रोह को दबा नहीं दिया, एक राजप्रतिनिधि नियुक्त नहीं किया और राजधानी को विभिन्न प्रकार के सैनिकों और कई अलग-अलग प्रमुखों के अधीन नहीं रखा। यदि विद्रोह राजा के स्वयं के दोषों के कारण है, तो वह उन्हें ठीक करेगा, यदि विद्रोह उसकी किसी गलती के कारण नहीं है, तो इसे विद्रोही की शक्ति और अपराध की गंभीरता के अनुसार निपटा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक विद्रोही युवराज को मौत के घाट उतार दिया जाएगा, यदि राजा का एक और गुणी पुत्र है; अगर (हालांकि, विद्रोही) युवराज इकलौता बेटा है, तो उसे कैद होगी। एक पुरोहित, उसका अपराध कितना भी बड़ा हो, [निष्पादित नहीं किया जाएगा लेकिन] निर्वासन या कारावास से दंडित किया जाएगा।

निकट कुटुम्बियों द्वारा विद्रोह: राजा को अपने पुत्र, भाई या निकट कुटुम्बी के विद्रोह को बलपूर्वक दबा देना चाहिए। यदि उसके पास ऐसा करने के लिए साधनों की कमी है, तो राजा विद्रोही को [रखने] की अनुमति दे सकता है जो उसने जब्त कर लिया था और उसके साथ एक संधि में प्रवेश कर सकता था, ताकि उसे शत्रुओं में शामिल होने से रोका जा सके। एक उत्पीड़क बल, एक पड़ोसी राजा या एक जंगल के सरदार की सेना को उसके खिलाफ भेजना बेहतर है और जब विद्रोही इनसे लड़ने में व्यस्त हो, तो उस पर एक अलग दिशा से हमला करें। वैकल्पिक रूप से, एक असंतुष्ट राजकुमार के खिलाफ इस्तेमाल के लिए अनुशंसित साधनों को नियोजित किया जाना चाहिए। [आखिर में,] दुश्मन के किले के अंदर देशद्रोह भड़काने के लिए सुझाए गए साधनों का इस्तेमाल विद्रोही के खेमे में विद्रोह पैदा करने के लिए भी किया जा सकता है।

मंत्रियों आदि द्वारा विद्रोह: एक मंत्री या रक्षा प्रमुख द्वारा आंतरिक विद्रोह और एक प्रमुख द्वारा बाहरी क्षेत्रों में एक विद्रोह से [ऊपर वर्णित लोगों के समान] तरीकों से निपटा जाएगा। संदिग्ध मंत्रियों के मामले में पहले सुलह की कोशिश की जाएगी। राजद्रोह का, यदि यह सफल हो जाता है, तो अन्य (तीन) तरीकों का उपयोग अनावश्यक हो जाता है। [इसी तरह,] देशद्रोही मंत्रियों को उपहारों के साथ खुश करने की कोशिश की जानी चाहिए ताकि पहले किसी अन्य तरीके का उपयोग करना अनावश्यक हो।

बाहरी क्षेत्रों में जंगल प्रमुखों आदि द्वारा विद्रोह: [एक सीमावर्ती क्षेत्र के एक सेनापति, एक जंगल प्रमुख या एक जागीरदार राजा द्वारा किए गए विद्रोह चरित्र में भिन्न होते हैं क्योंकि वे राजा से स्वतंत्रता प्राप्त करने की अधिक संभावना रखते हैं।] निम्नलिखित तरीकों से इनका सफलतापूर्वक दमन कर सकते हैं। एक के

विद्रोह को उसके खिलाफ दूसरे को खड़ा करके निपटा जा सकता है। यदि विद्रोही किसी किले में मजबूती से जमा है, तो उसे पड़ोसी राजा, जंगल के सरदार, कुटुम्बी या पक्ष से बाहर के राजकुमार का उपयोग करके वश में किया जाएगा। (यदि यह संभव नहीं है, तो) विद्रोही को एक सहयोगी बनाया जाना चाहिए, ताकि उसे दुश्मन के पास जाने से रोका जा सके। [यदि आवश्यक हो,] विद्रोही और दुश्मन के बीच कलह बोलने के लिए गुप्त एजेंटों का उपयोग किया जाएगा। एजेंट विद्रोही को यह कहके उकसाएगा (i) शत्रु राजा केवल अस्थायी रूप से उसका उपयोग कर रहा था और एक बार उसका उद्देश्य पूरा हो जाने पर उसे त्याग देगा (उसे अभियानों पर भेजकर, उसे एक कठिन स्थान पर तैनात करके या उसे उसके परिवार से दूर भेजकर) या (ii) यदि विद्रोह विफल हो जाता है, तो दुश्मन राजा या तो उसे बेच देगा या राजा के साथ अपनी शांति बना लेगा, विद्रोही को उसके भाग्य पर छोड़ देगा। यदि विद्रोही सहमत होता है [दुश्मन में शामिल नहीं होने के लिए], तो उसे सम्मान से पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यदि वह मना करता है, तो गुप्त एजेंट खुद को प्रकट करेगा और विद्रोही को अपने ही योद्धाओं द्वारा इनाम के वादे के साथ या अन्य एजेंटों का उपयोग करके मार डाला जाएगा।

एक राजा एक शत्रु के खिलाफ विद्रोह भड़काएगा, लेकिन उन लोगों को अपने खिलाफ दबा देगा। उसे समझना चाहिए कि एक दुश्मन अपने क्षेत्र में विद्रोह कैसे भड़का सकता है, उसी तरह की तकनीकों को अपनाकर जो वह खुद दुश्मन के खिलाफ इस्तेमाल करेगा।

## विद्रोह के प्रकार

[चूंकि एक विद्रोह या तो आंतरिक या बाहरी क्षेत्रों में उत्पन्न हो सकता है, चार तार्किक संभावनाएँ हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि यह कहाँ उत्पन्न होता है और कहाँ उकसाया जाता है। चार प्रकार, उनकी सापेक्ष गंभीरता और उनसे निपटने के तरीके नीचे दी गई तालिका में दिखाए गए हैं।

प्रकार	प्रवर्तन	उकसानेवाला	गंभीरता	निपटाना	पद्धत
१	आंतरिक	बाहरी	कम गंभीर	उकसानेवाला	सुलह उपहार
२	बाहरी	आंतरिक	दूसरा कम से कम	उकसानेवाला	मतभेद बल
३	बाहरी	बाहरी	दूसरा ज्यादा से ज्यादा	प्रवर्तक	मतभेद बल

४	आंतरिक	आंतरिक	सबसे ज्यादा	प्रवर्तक	चारों
---	--------	--------	-------------	----------	-------

ऊपर से यह देखा जा सकता है कि दो क्षेत्रों के बीच एक क्रॉस विद्रोह एक ही क्षेत्र के भीतर उकसाने और उकसाने की प्रवर्तन करने में कम गंभीर है; एक पूर्ण आंतरिक विद्रोह सबसे गंभीर है।]

एक बुद्धिमान राजा के विभिन्न प्रकारों की प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझने से निम्नलिखित के प्रति सावधान रहना होगा: (i) बाहरी क्षेत्रों के विद्रोही बाहरी क्षेत्रों में अन्य विद्रोहियों के साथ जुड़ते हैं, (ii) आंतरिक क्षेत्रों के विद्रोही आंतरिक क्षेत्रों में अन्य लोगों के साथ जुड़ते हैं। (iii) दो क्षेत्रों में एक साथ साजिश रचने वाले संभावित विद्रोही। वह हमेशा अपने पास के लोगों और उन दोनों से रक्षा करेगा जो दूर-दराज के इलाकों [राज्य के] में हैं।

चार प्रकार के विद्रोहों में से, एक [पूरी तरह से] आंतरिक विद्रोह से पहले निपटा जाएगा।

उपरोक्त आदेश इस योग्यता के अधीन है कि एक मजबूत व्यक्तित्व द्वारा उकसाया गया विद्रोह [हमेशा] एक कमजोर व्यक्ति द्वारा शुरू किए गए विद्रोह से कहीं अधिक गंभीर होता है, चाहे वह कहीं भी हो।

प्रकार १ और २ - पार-क्षेत्रीय: जो प्रतिक्रिया देता है उससे निपटना यही इन दो प्रकारों पर सफलतापूर्वक काबू पाने का तरीका है। भड़काने से ज्यादा उकसाने वाले ही (षड्यंत्र की) सफलता को संभव बनाते हैं; क्योंकि, अगर उकसाने वालों को वश में कर लिया जाए, तो भड़काने वालों के लिए दूसरों को लुभाना मुश्किल हो जाएगा। एक अलग क्षेत्र में साजिश रचने के लिए भारी प्रयास की आवश्यकता होती है और यह [स्वयं] राजा के लिए एक फायदा है।

प्रकार १: इस मामले में, (देश के भीतर रहने वाले उत्तरदाताओं के) राजा को या तो सुलह या उपहारों के साथ प्रसन्न करना चाहिए।

प्रकार २: इस मामले में, राजा को या तो [कोशिश करनी चाहिए] मतभेद बोना चाहिए या बल प्रयोग करना चाहिए। [असहमति बोलने के दो तरीके हैं] (i) गुप्त एजेंट, उन लोगों के दोस्त के रूप में प्रस्तुत करते हुए (बाहरी क्षेत्रों में) जो कि उकसावे के शिकार होने की संभावना रखते हैं, उन्हें यह कहते हुए आंतरिक भड़काने

वालों के इरादों पर संदेह करना चाहिए कि राजा, वास्तव में, बाद वाले को बाहरी क्षेत्रों में उन लोगों को वश में करने के लिए एजेंटों के रूप में उपयोग करना, (ii) एजेंट कार्य कर सकते हैं जैसे कि वे स्वयं देशद्रोही थे और फिर दो समूहों के बीच असंतोष बोते हैं। बल प्रयोग के दो तरीके हैं: (i) हत्यारों को उकसाने वालों से दोस्ती करने के लिए भेजा जा सकता है और उन्हें हथियारों या जहर से मार दिया जा सकता है और (ii) उकसाने वालों को (राजधानी में) आमंत्रित किया जा सकता है और फिर मार दिया जा सकता है।

प्रकार ३ और ४: इन दो प्रकार की साजिशों पर सफलतापूर्वक काबू पाने का तरीका है भड़काने वाले से निपटना। क्योंकि जब देशद्रोह का कारण दूर हो जाएगा, तो कोई देशद्रोही नहीं रहेगा। यदि कोई केवल उकसाने वालों को हटाता है, तो दूसरे भी ऐसा हो सकते हैं [भड़काने वालों का शिकार होकर]।

प्रकार ३: जहां भड़काने वाले और उकसाने वाले दोनों बाहरी क्षेत्र में हैं वहाँ असंतोष बोना और बल का प्रयोग यही सही तरीके है। [विरोध:] गुप्त एजेंट उकसाने वालों पर संदेह कर सकते हैं, जिसका अर्थ है कि वे वास्तव में राजा के एजेंट थे जो उन सभी को वश में करना चाहते थे। [बल:] हत्यारों को उत्तरदाता के सैनिकों में घुसपैठ करनी चाहिए और उन पर [चुपके से] हथियारों, जहर और अन्य साधनों से हमला करना चाहिए; फिर, अन्य गुप्त एजेंटों को उत्तर देने वाले पर अपराधों का आरोप लगाना चाहिए।

प्रकार ४ : आंतरिक रूप से साजिश के मामले में, राजा को [चार] साधनों में से किसी एक का उपयोग करना चाहिए, जो उपयुक्त हो। वह सुलह का उपयोग कर सकता है यदि भड़काने वाला कार्य करता है जैसे कि वह संतुष्ट नहीं है (या वास्तव में ऐसा किए बिना असंतुष्ट कार्य करता है)। खुशी और दुख के अवसरों पर, उसकी वफादारी की सराहना करने के बहाने या उसके कल्याण के बारे में विचार करने के बहाने उसे उपहार दिए जा सकते हैं [इस प्रकार उसे प्रसन्न करना]। एक जासूस, एक दोस्त के रूप में प्रस्तुत करके उसे चेतावनी दे सकता था कि राजा उसकी वफादारी की परीक्षा लेने वाला था, और उसे सच बताना चाहिए। षड्यंत्रकारियों को एक दूसरे को यह बताकर विभाजित करने का प्रयास किया जा सकता है कि दूसरी व्यक्ति राजा को जाकर बातें बता रहा है। गुप्त सजा के विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता था।

## खलनायक और ईमानदार साजिशकर्ता

[गदर और विद्रोहों का मुकाबला करने के लिए, विशेष रूप से आंतरिक और बाहरी क्षेत्रों के बीच साजिशों को भड़काने वाले की प्रेरणा को समझना आवश्यक है, जो एक ईमानदार आदमी या खलनायक हो सकता है। कौटिल्य का तर्क है कि एक भड़काने वाले का इरादा केवल एक समय के लिए उपयोग करना है जो राजा से छुटकारा पाने के लिए प्रतिक्रिया देता है और बाद में उत्तर देने वाले को खुद को खत्म कर देता है। एक ईमानदार साजिशकर्ता से उसकी जायज मांगों को पूरा करते हुए, उसके साथ एक समझौता करके निपटा जाएगा; खलनायक से बलपूर्वक निपटा जाएगा।]

एक राजा गुप्त रूप से किसी को भी जीतने की कोशिश करेगा जो विद्रोह शुरू कर सकता है या मार गिरा सकता है। वह उसके पास जाएगा जो अपने वचन के प्रति सच्चा है, जो राजा को उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करने या उसे कठिनाइयों से बचाने में सक्षम है। वह पहले इस बात का निर्णय करेगा कि वह मनुष्य सीधा है या दुष्ट। ईमानदार पुरुष समान स्थिति में दूसरों के लिए षड्यंत्र करते हैं [जबकि खलनायक केवल अपने लाभ के लिए ऐसा करते हैं।]

राजा एक सीधे आदमी के साथ एक संधि करेगा [और इसे रखेगा।] खलनायक के साथ एक संधि इस उद्देश्य से की जाएगी कि राजा उसे मात दे सके।

बाहरी क्षेत्रों के खलनायक निम्नलिखित इरादों से विद्रोह करने के लिए आंतरिक रूप से उकसाते हैं। वह अपेक्षा करता है कि, यदि विद्रोह सफल हो जाता है, तो भीतर का व्यक्ति खलनायक को राजा के रूप में स्वीकार कर लेगा, जिससे खलनायक को राजा की मृत्यु का दोहरा लाभ मिलेगा और राज्य प्राप्त होगा। यदि, हालांकि, विद्रोह विफल हो जाता है, तो राजा आंतरिक विद्रोही को मार डालेगा, जिसके परिणामस्वरूप विद्रोही का परिवार और समर्थक खलनायक के पास आ जाएंगे। राजा द्वारा दंडित किए जाने के डर से मृत साजिशकर्ता के समान स्थिति में अन्य लोग भी एक बड़ा षड्यंत्रकारी गुट बन जाएंगे। भले ही वे विद्रोही न हों, राजा को उन पर संदेह होगा और उन्हें एक-एक करके निंदा करने वाले पुरुषों द्वारा [नकली] पत्रों के माध्यम से उन्हें फंसाया जा सकता है और समाप्त किया जा सकता है।

आंतरिक खलनायक बाहरी क्षेत्रों में निम्नलिखित इरादों के साथ विद्रोह करने के लिए उकसाता है। जबकि खलनायक राजा के खजाने को हड़प लेता है और राजा की सेना को नष्ट कर देता है, वह दूसरे

षड्यंत्रकारी को राजा को मारने के लिए प्रेरित करता है। या, खलनायक अपनी सेना को उलझाने, अपनी शत्रुता को गहरा करने और इस तरह उसे खलनायक के नियंत्रण में लाने के लिए बाहरी क्षेत्रों में दुश्मनों या जंगल जनजातियों के साथ युद्ध में उलझाएगा; तब, खलनायक या तो साथी-साजिशकर्ता को धोखा देकर राजा को खुश करेगा या खुद राज्य को जब्त कर लेगा। एक बार नियंत्रण में आने के बाद, खलनायक अपने साथी-साजिशकर्ता को भी कैद कर सकता है और इस प्रकार अपनी भूमि के साथ-साथ राजा की भूमि भी प्राप्त कर सकता है, या, वह साथी-साजिशकर्ता को यात्रा का भुगतान करने के लिए आमंत्रित कर सकता है और जब वह भरोसे के साथ जवाब देता है, तो उसे मार डाला; या, जब वह अपने मूल स्थान से दूर हो, तो अपने क्षेत्र को अवशोषित कर सकता है।

### ३.१० विश्वासघात

[इसकी तीन संभावनाएं हैं:

(i) पूरी तरह से एक राज्य के घटकों के भीतर देशद्रोह,

(ii) शत्रु द्वारा उकसाया गया विश्वासघात और

(iii) आंतरिक राजद्रोह द्वारा शत्रुतापूर्ण विश्वासघात

पहले दो को 'सरल' प्रकार कहा जाता है और तीसरा, "मिश्रित"]

दो [स्वतंत्र] प्रकार के (सरल) विश्वासघात हैं [दोनों के बीच मिलीभगत से जटिल नहीं]: आंतरिक विश्वासघात और दुश्मन द्वारा विश्वासघात। (९.६.१)

राजा शहर और जनपद के लोगों को गद्दारों द्वारा राजद्रोह में भ्रष्ट होने से रोकने के लिए बल [यानी, सुलह, उपहारों के साथ तुष्टीकरण और असंतोष बोना] को छोड़कर सभी साधनों का उपयोग करेगा। क्योंकि, बड़ी संख्या में लोगों के खिलाफ बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि अगर इस्तेमाल किया जाता है, तो यह वांछित परिणाम नहीं दे सकता है और प्रतिकूल भी हो सकता है। हालाँकि, राजा रिंग-लीडर्स के खिलाफ गुप्त दंड के किसी भी तरीके का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र होगा।

खतरों से निपटने के चार साधनों में से, [सुलह, उपहारों से प्रसन्न करना, मतभेद बोना और बल का प्रयोग], क्रम में पहले एक विधि को नियोजित करना आसान है। एक पुत्र, एक भाई या एक रिश्तेदार के



मामले में, उपयुक्त तरीके सुलह और उपहार के साथ प्रसन्न करना है। शहर के लोगों के मामले में, ग्रामीण इलाकों के लोग या सेना, नेताओं को उपहारों के साथ खुश करना या उनमें असंतोष बोना लड़ाई के तरीके हैं। पड़ोसी राजकुमारों या जंगल प्रमुखों के मामले में, सही तरीके असंतोष बोना और बल प्रयोग करना हैं। यह आदेश अनुलोम है [प्राकृतिक और, इसलिए, अनुशंसित]; यदि विधियों का उपयोग उल्टे क्रम में किया जाता है (साम से पहले दान या भेद से पहले दंड) तो यह प्रतिलोम (अप्राकृतिक) है।

## गुप्त तरीके

उच्च अधिकारी, जो राजा के अधीन सेवा से लाभान्वित होते हैं, वे अपनी मर्जी से या दुश्मन के साथ मिलकर राजा के प्रति शत्रुतापूर्ण हो सकते हैं। उनसे गुप्त एजेंटों का उपयोग करके या उनके द्वारा बहकाए जाने के खतरे में लोगों को जीतकर निपटा जाना चाहिए। शत्रु नगर के लिए सुझाए गए तरीकों को भी अपनाया जा सकता है।

कभी-कभी, देशद्रोही उच्च अधिकारी, (जो राज्य को नुकसान पहुँचाते हैं), को खुले तौर पर निपटा नहीं जा सकता है क्योंकि वे शक्ति से भरे हुए हैं या क्योंकि वे एकजुट हैं। गुप्त तरीकों से ऐसे लोगों को दबाना राजा का कर्तव्य है। तीन प्रकार के गुप्त तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है- रिश्तेदारों का उपयोग करना, फंसाना और एक दूसरे के खिलाफ खेलना।

गद्दार अपने सैनिकों के साथ युवराज या रक्षा प्रमुख के सामने आत्मसमर्पण कर सकता है। उन्हें तुरंत देशद्रोही को कुछ एहसान दिखाना चाहिए लेकिन बाद में उसके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। राजा तब एक कमजोर सेना और [चुने हुए] हत्यारों (जैसा कि गुप्त तरीकों के तहत वर्णित है) के साथ गद्दार को मार देगा।

देशद्रोहियों के पुत्रों में से जो नष्ट हो गए थे, जो बेवफा नहीं हैं, वह पितृसत्ता प्राप्त करेगा।

इस प्रकार [देशद्रोही] पुरुषों द्वारा किए गए खतरों से मुक्त राजा के पुत्रों और पौत्रों द्वारा राज्य का आनंद लेना जारी रहेगा।

[देशद्रोही विभिन्न प्रकार के कपटपूर्ण तरीकों से राजस्व एकत्र करने के लिए भी उचित खेल हैं, हालांकि कौटिल्य वितीय कठिनाई के चरम मामलों में और राजस्व के पूरक के अन्य सभी साधनों को समाप्त करने के बाद ही इनकी सिफारिश करते हैं।

### ३.११ उत्तराधिकार

(कौटिल्य ने शाही वंश के महत्व पर काफी जोर दिया है। (७.११.२८) में कहा गया है कि प्रजा एक मजबूत राजा को भी छोड़ देगी, अगर वह शाही खून का नहीं है। जन्म की कुलीनता को छंदों में भी संदर्भित किया गया है ( ८.२.२०, २३) जो अगले खंड में अनुवादित है। शाही वंश को जारी रखने के लिए पुत्रों के महत्व को बड़े पैमाने पर था।

जबकि ज्येष्ठ पुत्र सामान्य रूप से सिंहासन का उत्तराधिकारी होता है, यदि वह पद धारण करने के लिए अनुपयुक्त होता है तो उसे उपेक्षित किया जा सकता है। हालांकि, किसी अन्य उत्तराधिकारी को वहाँ होना चाहिए जो राजशाही के वंश की निरंतरता को सुनिश्चित कर सके। अध्याय (१.७) और (१.८) असंतुष्ट राजकुमारों के साथ-साथ राजा द्वारा अन्यायपूर्ण व्यवहार करने वाले योग्य लोगों से भी निपटते हैं।

एक महत्वपूर्ण अध्याय, (५.६), प्राकृतिक कारणों से या युद्ध के मैदान में राजा की मृत्यु की स्थिति में क्रमबद्ध उत्तराधिकार से संबंधित है क्योंकि संक्रमण के ऐसे समय में राज्य की अखंडता को खतरा होने की संभावना है, मुख्य पार्षद ने राजकुमारों, अन्य रिश्तेदारों, मंत्रियों, विद्रोही प्रमुखों और पड़ोसी राजाओं (५.६) से खतरों को टालने की जिम्मेदारी भी राज-प्रतिनिधि का पद के दिलचस्प विषय से संबंधित है, जब मुख्य पार्षद को न केवल प्रतिनिधि के रूप में बल्कि युवा के संरक्षक के रूप में भी कार्य करना होता है। राजकुमार, मुख्य पार्षद का पदनाम, जैसे कि, अर्थशास्त्र में मौजूद नहीं है, हमें यह मानना होगा कि पार्षदों में सबसे वरिष्ठ सबसे सम्मानित उत्तराधिकार का प्रबंधन करता है।]

### राजपुत्र

पुत्र तीन प्रकार के होते हैं। एक बुद्धिमान पुत्र वह है जो सिखाए जाने पर धर्म और अर्थ को समझता है और उनका अभ्यास भी करता है। आलसी पुत्र वह होता है जो जो कुछ उसे सिखाया जाता है उसे समझता है परन्तु उसका पालन नहीं करता। दुष्ट वह है जो धर्म और अर्थ से घृणा करता है और [इसलिए] बुराई से भरा हुआ है।

यदि राजा का इकलौता पुत्र दुष्ट निकला हो तो उसके लिए पुत्र उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए अथवा पुत्रियों द्वारा पौत्र उत्पन्न करना चाहिए।

### उत्तराधिकार के नियम:

जब तक कोई संकट न हो, ज्येष्ठ पुत्र का उत्तराधिकार प्रशंसनीय है।

एकमात्र पुत्र, यदि वह दुष्ट है, [किसी भी परिस्थिति में] सिंहासन पर स्थापित नहीं किया जाएगा।

एक बूढ़े या बीमार राजा को अपनी पत्नी से निम्नलिखित में से किसी एक से संतान प्राप्त होगी: उसकी माँ का रिश्तेदार, एक करीबी रिश्तेदार [उसी गोत्र का] या एक गुणी पड़ोसी राजकुमार। कई पुत्रों वाला राजा [राज्य के] सर्वोत्तम हित में कार्य करता है, यदि वह किसी दुष्ट को उत्तराधिकार से हटा देता है।

संप्रभुता [कभी-कभी] शाही परिवार [सामूहिक रूप से] पर हस्तांतरित की जा सकती है। एक [कुलीन वर्ग] परिवार को जीतना मुश्किल है और अराजकता के खतरों से मुक्त होने के कारण, इस धरती पर हमेशा के लिए जीवित रह सकता है।

### असंतुष्ट पुत्र

गुप्त एजेंट राजा को सूचित करेंगे यदि कोई पुत्र असंतुष्ट है (और एक विद्रोही बनने की संभावना है)। यदि राजकुमार इकलौता पुत्र है, तो उसे कैद कर लिया जाएगा। यदि एक राजा के कई पुत्र हैं, तो असंतुष्ट राजकुमार को सीमांत या कहीं और [जहां उसके शक्तिशाली होने का कोई खतरा नहीं है] भेज दिया जाएगा। उन क्षेत्रों से बचना जहां वह अशांति पैदा कर सकता है या जहां लोग उसे एक देशी पुत्र के रूप में अपना सकते हैं, या अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए सौदेबाजी काउंटर के रूप में उसका उपयोग कर सकते हैं। यदि असंतुष्ट पुत्र में अच्छे व्यक्तिगत गुण हैं, तो उसे रक्षा प्रमुख या उत्तराधिकारी बनाया जाएगा [अपने पिता के खिलाफ विद्रोह किए बिना अपने उत्तराधिकार का आश्वासन देने के लिए]।

एक बेटे के साथ अन्याय: [ऐसा कभी-कभी हो सकता है, कि अच्छे गुणों वाले और राजा के उत्तराधिकारी के योग्य राजकुमार के साथ उसके पिता ने अन्याय किया हो। ऐसे मामले में:] एक अनुशासित राजकुमार, जिसे परेशान किया जाता है और अयोग्य कार्य दिए जाते हैं, [फिर भी] अपने पिता का पालन करेगा, जब तक कि काम ऐसा न हो कि उसके जीवन को खतरा हो जैसे की (ii) जिससे लोग को उसके खिलाफ भड़क

जाए या (ii) जघन्य पापकृत्य में शामिल होना। तथापि, यदि उसे कोई सार्थक कार्य दिया जाता है, तो वह कुशल अधिकारियों की सहायता लेगा और अधिकारियों की देखरेख में उत्साह के साथ कार्य करेगा। यदि राजा अब भी उससे प्रसन्न नहीं है और किसी अन्य बेटे या किसी अन्य पत्नी [उसकी मां के अलावा] का पक्षपात करता है, तो वह अपने पिता को काम से सामान्य लाभ और साथ ही उसके प्रयासों से प्राप्त अतिरिक्त लाभ भेजेगा। जंगल में चले जाने को कहेगा।

यदि राजकुमार को डर है कि राजा उसे कैद कर सकता है या उसे मौत के घाट उतार सकता है, तो वह एक योग्य पड़ोसी राजा की शरण लेगा, जो न्यायप्रिय, धर्मी और सच्चा माना जाता है, जो अपने वादे रखता है और उनका स्वागत करता है और उनका सम्मान करता है। ऐसे राजा के संरक्षण में, राजकुमार एक सेना और संसाधनों को इकट्ठा करेगा, प्रभावशाली परिवारों में शादी करेगा, जंगली जनजातियों के साथ गठजोड़ करेगा और [अपने पिता के राज्य में, बलपूर्वक सिंहासन लेने की दृष्टि से] लोगों पर जीत हासिल करेगा।

यदि वह [एक उपयुक्त शरण नहीं पा सकता है और] अकेले कार्य करता है, तो वह सोने, कीमती पत्थरों या सोने और चांदी के लेखों में काम करके अपना निर्वाह करेगा। उनके भरोसे में आकर उन्हें नशीली दवाएं देकर गुप्त रूप से विधर्मी समूहों, अमीर विधवाओं, कारवां के व्यापारियों और नौकायन जहाजों या मंदिरों (जो वेदों में ज्ञात ब्राह्मणों द्वारा उपयोग नहीं किए जाते हैं) के धन को लूट लेगा। फिर वह अपने पिता के किले में विद्रोह भड़काने के लिए दुश्मन के किले के अंदर देशद्रोह भड़काने के लिए सुझाए गए तरीकों का इस्तेमाल करेगा। या वह अपनी माता के परिवार के लोगों की सहायता से राजा पर आक्रमण करे।

[राजकुमार गुप्त तरीके से भी कार्य कर सकता है।] वह खुद को एक कारीगर, एक कलाकार, एक टकसाली, एक चिकित्सक, एक कहानीकार या एक विधर्मी के रूप में प्रच्छन्न कर सकता है और, इसी तरह के भेष में हत्यारों के साथ, राजा के महल में प्रवेश कर सकता है [गुप्त रूप से] और उसे हथियार या जहर से मार डाल सकता है। उसके बाद वह राजा के समर्थकों को घोषणा करेगा कि, युवराज के रूप में, राज्य को संयुक्त रूप से आनंद लेना चाहिए था न कि अकेले एक व्यक्ति द्वारा। तब वह दूना भोजन देने की पेशकश करेगा और मैं उन सभी को दोगुना वेतन दूंगा जो उसकी सेवा करने के लिए सहमत हैं।

राजा के प्रत्युपाय: [एक असंतुष्ट राजकुमार के साथ जो एक गद्दार बनने की संभावना है] राजा उच्च अधिकारियों के पुत्रों या राजकुमार की मां (यदि उसे उस पर विश्वास है) का उपयोग राजकुमार को राजा के दरबार में आने के लिए राजी करने के लिए करेगा। [यदि वह आने से इंकार करता है] तो उसे हत्यारों द्वारा हथियारों या जहर से मारने के लिए छोड़ दिया जाएगा। यदि राजा राजकुमार को मारना नहीं चाहता है, तो गुप्त एजेंट उसे शराब पिलाकर, या शिकार करते समय या रात में बुरे चरित्र वाली महिलाओं का उपयोग करके पकड़ लेंगे; तब वह राजा के सामने लाया जाएगा।

जब उसे राजा के सामने लाया जाता है, तो एकमात्र पुत्र को पिता की मृत्यु के बाद उसे राज्य का वचन देकर शांत किया जाएगा, लेकिन उसे कैद में रखा जाएगा। यदि अन्य पुत्र हैं, तो असंतुष्ट राजकुमार को मार डाला जाएगा।

### **३.१२ एक राजा की मृत्यु पर उत्तराधिकार का आयोजन**

जब राजा गंभीर रूप से बीमार हो या मरने वाला हो, तब पार्षदों द्वारा निम्नलिखित किया जाए: निरंतरता और शांति के हितों में राज्य के कोष को नुकसान पहुंचाए बिना संप्रभुता का पूर्ण हस्तांतरण।

राजा की प्रत्याशित मृत्यु से पहले, पार्षद, अपने मित्रों और अनुयायियों की सहायता से, आगंतुकों को [राजा को देखने के लिए] एक या दो महीने में एक बार, [राजा की बीमारी की गंभीरता को छुपाने के लिए] अनुमति देगा। बार-बार आने से बचाएगा यह कहकर कि राजा राष्ट्रीय आपदाओं की रोकथाम, शत्रुओं के विनाश, लंबी आयु या पुत्र प्राप्ति के लिए विशेष संस्कार करने में बहुत व्यस्त थे। जब [अनिवार्य रूप से] आवश्यक हो, तो राजा का एक हमशकल लोगों और दूतों (सहयोगियों और शत्रुओं के) को दिखाया जा सकता है। वह उन लोगों को खुश रखेगा जो नुकसान करते हैं और जो मदद करते हैं उन्हें पुरस्कृत करते हैं।

पार्षद किले के भीतर या सीमा पर एक स्थान पर खजाने और सेना दोनों को एक साथ इकट्ठा करेगा, और उन्हें दो भरोसेमंद पुरुषों के अधीन रखेगा। राजकुमारों, राजा के निकट संबंधियों और महत्वपूर्ण अधिकारियों को भी किसी बहाने से साथ लाया जाएगा।

यदि किसी किले या जंगल क्षेत्र का कोई सेनापति शत्रुता को धीमा कर देता है, तो उसे जीत लिया जाएगा या खतरनाक अभियान पर भेज दिया जाएगा या राजा के किसी सहयोगी से मिलने के लिए भेज दिया जाएगा।

एक पड़ोसी राजा, जिसके हमले की आशंका हो, उसे किसी उत्सव, शादी, हाथी के शिकार, घोड़े की बिक्री या भूमि अनुदान के लिए राज्य का दौरा करने के लिए आमंत्रित करके पकड़ लिया जाएगा; या, वह एक सहयोगी द्वारा कब्जा कर लिया जाएगा। फिर, एक समझौता, जो देशद्रोह योग्य नहीं है (अर्थात् मरने वाले राजा के हितों के खिलाफ नहीं), उसके साथ निष्कर्ष निकाला जा सकता है। (यदि यह संभव नहीं है) तो धमकी देने वाले राजा को जंगल प्रमुखों या अन्य लोगों द्वारा [उकसाने] से परेशानी पैदा की जाएगी। उसके परिवार का एक रिश्तेदार जो सिंहासन का लालच करता है या उसके घर के एक अन्यायपूर्ण राजकुमार को क्षेत्र के वादों के साथ जीत लिया जाएगा और संदिग्ध राजा के खिलाफ खड़ा कर दिया जाएगा। हालांकि, अगर एक सेनापति या पड़ोसी राजा [वास्तव में] विद्रोह में उठता है, पार्षद उसे राजा के रूप में ताज पहनाने के वादे के साथ आमंत्रित करेगा और [फिर] उसे मार डालेगा, या, वह [विद्रोही के खिलाफ] साजिशों से निपटने के लिए सुझाए गए तरीकों का उपयोग करेगा।

[संप्रभुता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण के लिए शर्तों के बारे में सुनिश्चित करने के बाद] पार्षद:

-पहले शाही परिवार के अन्य सदस्यों, राजकुमारों और महत्वपूर्ण अधिकारियों का समर्थन प्राप्त करें ताकि राजकुमार को पहले से ही ताज पहनाया जा सके [राजा की मृत्यु से पहले],

- युवराज को धीरे-धीरे राज्य का भार हस्तांतरित करने के बाद राजा की गंभीर बीमारी की घोषणा करना,

- या आंतरिक और बाहरी साजिशों के खिलाफ उचित सावधानी बरतते हुए प्रशासन को जारी रखें।

युद्ध के दौरान एक राजा की मृत्यु: यदि कोई राजा शत्रु के इलाके में [युद्ध के दौरान] मर जाता है, तो पार्षद:

-पीछे हटना, शत्रु के रूप में प्रस्तुत मित्र की सहायता से शत्रु से संधि करके [सर्वोत्तम शर्तों को प्राप्त करने के लिए],

-एक पड़ोसी राजा को राजधानी में स्थापित करें और फिर पीछे हटें [युद्ध से],

-वारिस को ताज पहनाएं और वापस लड़ें; या

- शत्रु आक्रमण हो तो अन्यत्र बताए गए उपाय करें।

### ३.१३ राज-प्रतिनिधि :

[ऐसे मामले हो सकते हैं जहां या तो कोई युवराज नहीं है या है तो बहुत छोटा है।] भारद्वाज का तर्क है कि, ऐसे मामले में, पार्षद को खुद राज्य का कारोबार हाथ में लेना चाहिए। (उनका तर्क है:] यदि एक राज्य के लिए, पिता पुत्रों से लड़ सकते हैं, और पुत्र पिता, राज्य के प्रमुख घटकों में से एक पार्षद क्यों नहीं? जैसी कि लोकप्रिय कहावत है: 'यदि आप स्वेच्छा से आपके पास आने वाली महिला का तिरस्कार करते हैं, तो वह केवल आपको शाप देगी। इसीलिए अगर राजा मर रहा है, पार्षद शाही परिवार के सदस्यों, राजकुमारों और महत्वपूर्ण अधिकारियों को आपस में या अन्य अधिकारियों के साथ लड़वाएगा। विरोध करने वालों को एक लोकप्रिय विद्रोह द्वारा समाप्त कर दिया जाएगा। या, वह चुपके से छुटकारा पा लेगा।

कौटिल्य उपरोक्त सलाह को अनैतिक मानते हैं और लोगों को विद्रोह के लिए उकसाने की संभावना रखते हैं। किसी भी सूरत में पार्षद इस बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकता कि झूठे को राजा मान लिया जाएगा। यह बेहतर है कि वह एक योग्य शाही राजकुमार [जैसे मृत राजा के भाई] को सिंहासन पर बैठाए, यदि ऐसा कोई नहीं है, तो वह एक राजकुमार (जो पूरी तरह से योग्य नहीं हो सकता है) या एक राजकुमारी या एक गर्भवती रानी को चुनेगा। फिर वह सभी उच्च अधिकारियों की एक बैठक बुलाएगा और विषय बताएगा "यह हमारा नसीब है। पिता और गुणी और कुलीन व्यक्ति के कर्तव्य के रूप में सोचें। यह व्यक्ति (राजकुमार, राजकुमारी या अजन्मा बच्चा केवल एक प्रतीक है और तुम मालिक हो। मुझे सलाह दो कि मैं क्या करूं। जैसा कि आप उसका मार्गदर्शन करते हैं? [तब अन्य मंत्री निश्चित रूप से प्रस्ताव से सहमत होंगे।] पार्षद तब राजकुमार, राजकुमारी या गर्भवती रानी को सिंहासन पर बिठाएगा और इस तथ्य की घोषणा करेगा। वह मंत्रियों और सशस्त्र बलों के राशन और वेतन में वृद्धि करेगा। वह यह भी वादा करेगा कि, जब (युवा) राजकुमार बड़ा होगा, तो और बढ़ोतरी होगी। इसी तरह के वेतन और वादे किलों के सुभेदार और ग्रामीण इलाकों में वरिष्ठ अधिकारियों को भी दिए जाएंगे। [एक राजप्रतिनिधी के रूप में, वह मित्र और दुश्मन के साथ ढंग से बर्ताव करेगा और राजकुमार को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का प्रयास करेगा।

[यदि न तो कोई युवा राजकुमार है और न ही गर्भवती रानी है,] तो वह उसी जाति के पुरुष से राजकुमारी के वंश को जन्म देने के लिए मनाएगा। इस प्रकार पैदा हुए राजकुमार को ताज पहनाया जाएगा।

[जबकि राजकुमार बड़ा हो रहा है।] उसी परिवार के एक गरीब लेकिन सुंदर आदमी को माँ के पास रखा जाएगा, कहीं ऐसा न हो कि उसका मन डगमगाए (और वह एक ऐसे प्रेमी को ले ले जो राज्य और युवा राजकुमार के लिए खतरा बन सकता है)। वह यह सुनिश्चित करेगा कि माँ फिर से गर्भवती न हो। राजकुमार को एक युवा सहकारी प्रदान किया जाएगा। राज प्रतिनिधि स्वयं किसी भी विलासिता का आनंद नहीं लेगा, बल्कि युवा राजा को रथ, सवारी करनेवाले जानवर, आभूषण, पोशाक, महिलाएँ और महल प्रदान करेगा।

जब राजकुमार बड़ा हो जाता है, तो पार्षद युवा राजा के मन का पता लगाने के लिए निवृत्त होने की कोशिश करेगा। यदि राजा उससे अप्रसन्न होता है, तो उसे अपने कर्तव्यों का परित्याग कर देना चाहिए। यदि राजा प्रसन्न होता है, तो वह उसकी रक्षा करता रहेगा। यदि वह अपने उत्तरदायित्वों से थक जाता है, तो वह जंगल में चला जाएगा या लंबे समय तक यज्ञ करेगा, लेकिन [केवल] विशेष रूप से चयनित गुप्त समूह को राजा की रक्षा करने का निर्देश देने के बाद यदि राजा कुछ उच्च अधिकारियों, पार्षद के प्रभाव में आता है राजा के प्रिय लोगों की सहायता से उसे इतिहास और पुराणों की उदाहरणात्मक कहानियों द्वारा राजनीति और सरकार के सिद्धांतों की शिक्षा देगा। [यदि यह सफल नहीं होता है, तो] वह एक तपस्वी का रूप धारण करेगा, राजा को अपने प्रभाव में लाएगा और उचित गुप्त प्रथाओं द्वारा गद्दारों को दंडित करेगा।

### ३.१४ राजत्व की असामान्यता :

जिस प्रकार विपत्तियाँ राज्य के अन्य छह घटक तत्वों में से किसी को भी प्रभावित कर सकती हैं, उसी प्रकार राजत्व भी प्रतिकूलता से प्रभावित हो सकता है, इसलिए अध्याय ८.२ का अधिकांश भाग विभिन्न प्रकार के राजाओं की परीक्षा के लिए समर्पित है, जिसे समग्र राज्य के दृष्टिकोण से देखा जाता है। जोड़ियों द्वारा तुलना की तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है।

**द्वैध शासन और विदेशी शासन :** कुछ विद्वानों का कहना है कि एक [राजा, भले ही वह एक] विदेशी हो, का शासन दो राजाओं के संयुक्त शासन से बेहतर है। राज्य नष्ट हो जाता है तो हर एक अपने ही समूह का पक्षपात करता है, या आपसी प्रतिद्वंद्विता और घृणा से। लेकिन एक विदेशी राजा चीजों को अकेला छोड़ देता है, लोगों का स्नेह जीतने और राज्य का आनंद लेने के लिए उत्सुक रहता है।



इस विचार से कौटिल्य असहमत हैं। एक पिता और एक पुत्र, या दो भाइयों द्वारा शासन होने के बारे में जाना जाता है; [लोगों के] कल्याण के लिए समान चिंता के साथ वे मंत्रियों को नियंत्रण में रखते हैं। दूसरी ओर, एक विदेशी राजा वह है जिसने जीवित [वैध] राजा से राज्य छीन लिया है; क्योंकि वह उसका नहीं है, वह उसे [अपव्यय द्वारा] दरिद्र बना देता है, उसके धन को उड़ा ले जाता है या उसे बेच देता है। यदि देश को संभालना उसके लिए बहुत कठिन हो जाता है, तो वह उसे छोड़कर चला जाता है।

**एक अशिक्षित राजा और एक पथभ्रष्ट :** विद्वानोंका कहना है कि, एक राजा जो अंधा है [ज्ञान के प्रकाश के लिए] और एक राजा जो जानबूझकर शिक्षाओं से विचलित होता है, पूर्व एक बड़ी बुराई है। क्योंकि, एक अशिक्षित राजा अच्छे और बुरे के बीच भेदभाव नहीं करता, हठी होता है या (आसानी से) दूसरों के नेतृत्व में होता है; ऐसा राजा अपने अन्याय से राज्य को बर्बाद कर देता है। एक राजा जो सही शिक्षाओं से विचलित हो जाता है, जब भी उसका मन भटक जाता है, उसे [सही रास्ते पर] लौटने के लिए राजी किया जा सकता है।

कौटिल्य असहमत हैं। अच्छे सहायकों द्वारा सलाह दिए जाने पर एक अज्ञानी राजा को कार्रवाई के [सही] पाठ्यक्रम का पालन करने के लिए बनाया जा सकता है। दूसरी ओर, एक पथभ्रष्ट राजा हमेशा [सही] शिक्षाओं के विपरीत कार्य करने पर तुला हुआ है, और अपने अन्याय से, स्वयं राज्य को बर्बाद कर देता है।

**एक बीमार राजा और एक नया [हड़पने वाला] राजा :** विद्वान् कहते हैं कि एक बीमार राजा बदतर है; या तो वह राज्य खो देता है (अपने मंत्रियों की साजिश के कारण) या वह अपने जीवन को जारी रखने की कोशिश में खो देता है [जैसे कि वह स्वस्थ था]। दूसरी ओर, एक नया राजा, लोगों को उनके लाभ के लिए बनाए गए कार्यों से प्रसन्न करता है जैसे कि अपने कर्तव्यों का सही ढंग से पालन करना, उपकार करना, करों को माफ़ करना, उपहार वितरित करना और सम्मान प्रदान करना।

कौटिल्य असहमती दिखाता हैं। एक बीमार राजा अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है जैसा उसने पहले किया था। एक नया राजा जिसने अपनी शक्ति से राज्य प्राप्त किया है [आमतौर पर] जैसा वह चाहता है, वैसा ही करता है, जैसे कि वह उसकी निजी संपत्ति हो। अगर उसे अधिग्रहण में दूसरों की मदद मिली है, तो उसे उन्हें बर्दाश्त करना होगा [भले ही] वे देश पर अत्याचार करें। [अस्थिरता का खतरा भी है

क्योंकि] एक हड़पने वाला, जिसकी लोगों के बीच कोई मजबूत जड़ें नहीं हैं, आसानी से उखाड़ फेंका जाता है।

[ऊपर दी गई सलाह को बीमार राजा की बीमारी की प्रकृति और सूदखोर के जन्म की कुलीनता को ध्यान में रखते हुए योग्य होना चाहिए।] एक बीमार राजा के मामले में, एक नकली रोग से पीड़ित (अनैतिक व्यवहार के कारण) और जो सामान्य कारणों से बीमार है भेद करना पड़ता है। एक नए राजा के मामले में, एक कुलीन जन्म और एक नीच जन्म के बीच अंतर करना पड़ता है।

एक कमजोर लेकिन कुलीन राजा और एक मजबूत लेकिन नीच जन्म वाला: विद्वानों का कहना है कि लोग एक मजबूत राजा को पसंद करते हैं, भले ही वह नीचली जाती में पैदा हुआ हो, क्योंकि वह मजबूत है। लोगों को एक कमजोर राजा को केवल कठिनाई के साथ पालन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, भले ही वह कुलीन है।

कौटिल्य असहमती दिखाता है। उच्च कोटि के राजा के कमजोर होने पर भी प्रजा स्वाभाविक रूप से उसकी आज्ञा का पालन करेगी, क्योंकि कुलीन व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से शासन करने की क्षमता होती है। इसके अलावा, लोग निम्न-जाति के षड्यंत्रों को विफल कर देते हैं, चाहे वह कितना भी मजबूत क्यों न हो, क्योंकि जैसा कि कहा जाता है 'जब प्यार होता है, तो सभी गुणों को प्रियतम में देखा जाता है।

### ३.१५ राजत्व कैसे अस्तित्व में आया?

महाभारत के शांतिपर्व में हमारे पास एक बयान है कि लोगों ने अपने राजनीतिक मामलों को कैसे व्यवस्थित किया था। यह कहा गया है :

*न वै राज्यं न राजा आसीत् न च दंडो न दांडिकः ।*

*धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्ति स्म परस्परम् ॥*

“शुरुआत में, इस तरह की कोई राजनीतिक इकाई नहीं थी, न ही कोई राजा था। दंड का कोई साधन नहीं था और न ही दंड देने के लिए कोई प्रशासक था। सभी लोगों ने सदाचारी जीवन जीने की इच्छा के धर्म के आवेग के तहत एक दूसरे की रक्षा की।”

कौटिल्य उन स्थितियों की झलक देते हैं जब लोग सदाचार से एक दूसरे की रक्षा करना भूल गए और कानून का पालन करने लगे - पराक्रम सही है। वे कहते हैं *“मत्स्यन्यायाभिभूताः प्रजा मनु वैवस्वतं राजनं चक्रिरे (१-१३-५) मत्स्यान् या यभिभूताः प्रजा मनुम वैवस्वतम राजनं चक्रिरे* – मछलियों के कानून के कारण लोग भय से अभिभूत हो गए अर्थात् बड़े ने छोटे को खा लिया और तब विवस्वान के पुत्र मनु को उनका राजा बना दिया।" यह राजशाही का मूल है। जब लोगों ने देखा कि आमतौर पर हर कोई शांति से रहना चाहता है, फिर भी बाहुबल के साथ कुछ ऐसे तत्व हैं जो दूसरों को डराते-धमकाते हैं और खुद के लीये ज्यादा धन उपयुक्त करते हैं। उन्होंने एक ऐसा नेता रखने का फैसला किया जो उन सभी की रक्षा करेगा और शांति का माहौल बनाएगा। ऐसे माहौल में ही व्यक्ति बिना किसी डर या पक्षपात के अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाता है और अपने व्यक्तित्व को उसकी पूरी क्षमता तक विकसित करता है।

तब लोगों ने राजा को उपज का छठा हिस्सा और अन्य वस्तुओं और पैसे का दसवां हिस्सा (यानी सोना और चांदी) अपने हिस्से के रूप में आवंटित करने का फैसला किया (१-१३-६)। इस प्रकार अपने भरण-पोषण से सुरक्षित, राजा अपने अधीन लोगों की भलाई और सुरक्षा की देखभाल करता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इन करों का भुगतान करे और उसके द्वारा निर्धारित नियमों के विरुद्ध कार्य करने पर जुर्माना भी अदा करे।

राजा का यह भी कर्तव्य है कि वह दोषियों को पर्याप्त सजा और धर्मात्माओं को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करे अर्थात् जो उसके कानूनों का पालन करे। मनु ने उक्ति रखी है :

*यावान् अवध्यस्य वधे तावान् वध्यस्य मोक्षणे ।*

*अधर्मो नृपतेर्दृष्टो धर्मस्तु विनियच्छतः ॥ (१-२४९)*

“राजा अदोषियों को दण्ड देकर पाप करता है। वह दोषियों को दण्ड न देने में बराबर पाप करता है। अतः राजा को विधि के अनुसार दण्ड देना चाहिए। इस प्रकार राजा पुण्य अर्जित करता है।”

राजा को कानून के अनुसार अपने हिस्से का प्रदर्शन करना चाहिए, इसके लिए वनवासी भी राजा को कर का अपना हिस्सा देते हैं।

राजा को सहायक विद्याओं के साथ-साथ वेदों का ज्ञान भी होना चाहिए। वह एक बुद्धिमान और सतर्क व्यक्ति होना चाहिए। उसे कठिन और नेक काम से प्यार करना चाहिए। उसका मन पूजनीय होना चाहिए और हमेशा उपकृत करने वाला होना चाहिए।

*वेदवेदांगवित् प्राज्ञः सुतपस्वी नृपो भवेत् ।*

*दानशीलश्च सततं यज्ञशीलश्च भारत ॥ शांतिपर्व ६९-३९*

जैसा कि हमारे संतों द्वारा प्रदर्शित हमारे समाज को संगठित करने की बुद्धिमत्ता बताती है, हमेशा बहुत कम लोग होते हैं जिनके पास विभिन्न कलाओं और विज्ञानों में महारत हासिल करने की क्षमता होती है और जो जनता को नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम होते हैं। वेदों (ऋ. ५-१७३-१७४) ने राजा के चयन के लिए कुछ मानदंड निर्धारित किए हैं। महाभारत के उपरोक्त श्लोक से पता चलता है कि उसे विभिन्न कलाओं और विज्ञानों का गहन ज्ञान रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए। साथ ही उनमें साहस, आत्मविश्वास और नेतृत्व के गुण होने चाहिए। यह मानना गलत है कि सारी शक्ति राजा के व्यक्ति में केंद्रित थी। उनके मंत्रियों द्वारा उन्हें हमेशा सहायता और सलाह दी जाती थी, हालांकि अंतिम निर्णय उन्हीं में निहित था। लेकिन वह स्थिति आज भी है। प्रधानमंत्री आज अपने अन्य सहयोगियों द्वारा उन्हें दी गई सलाह के नफा-नुकसान पर विचार करने के बाद वह निर्णय लेते हैं।

कौटिल्य आगे राजा की तुलना इंद्र और यम से करते हैं, स्वर्गीय देवता क्रमशः सच्चे न्याय और दंड के दाता हैं। बेशक वह सनकी भगवान नहीं है। हिंदू देवता हमेशा मानव जाति की भलाई के लिए निर्धारित नियमों के अनुसार कार्य करते हैं। मनु ७-३-८ में, राजा-जहाज की उत्पत्ति अपने विषयों के बीच आदेश और कानून के शासन की स्थापना की आवश्यकता के लिए खोजी गई है जो अन्यथा अराजकता और भ्रम से ग्रस्त होगी। राजा को मनुष्य के रूप में एक महान देवी कहा जाता है "महती देवता ह्येषः नररूपेणातिष्ठत" (७-३-८)। लेकिन यह पश्चिमी विद्वानों द्वारा विकसित राजाओं के 'दैवीय अधिकार' सिद्धांत के समान नहीं है। क्योंकि यहाँ भारतीय संदर्भ में ईश्वर कभी ईर्ष्या नहीं करता। वह अपनी प्रजा का कल्याण चाहता है। वह गलत करने वाले को दंड देने के लिए भी है। भारतीय बोलचाल में प्रत्येक जानवर की एक दिव्य उत्पत्ति होती है, क्योंकि उसके हृदय में वह अमर प्राणी रहता है।

कौटिल्य के अनुसार राजा वह है जो स्वयं धर्म के अनुसार कार्य करता है और अपनी प्रजा के बीच इसका प्रचार करता है। धर्म राजा सर्वोच्च है। यह पुरुषों और मामलों का शासक है। धर्म धार्मिकता है (३-१-३८)। जो राजा ऐसा आचरण करता है, वह स्वर्ग को जाता है (३-१-४)। उसका कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा की रक्षा (रक्षा) करे और साथ ही साथ उनका कल्याण (पालन) करने में उनकी मदद करे। प्रजा को असामाजिक तत्वों जैसे धोखेबाज कारीगरों और व्यापारियों, चोरों, डकैतों और हत्यारों के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं जैसे आग, बाढ़ और भूकंप आदि से बचाया जाना चाहिए। बाहरी खतरों या आक्रमण को दूर करने और अपनी प्रजा की रक्षा करने के लिए राजा का प्रथम कर्तव्य है।

### ३.१६ राजा के उत्तरदायित्व :

राजा को हमेशा सक्रिय रहना पड़ता है। उसकी गतिविधि में उसके राज्य के साथ-साथ उसके राज्य की सीमाओं पर क्या हो रहा है, इस बारे में सतर्कता रखनी चाहिये। यदि वह अपनी प्रजा के कल्याण के बारे में सावधान नहीं है, तो वे असंतुष्ट हो सकते हैं और उसके शासन को उखाड़ फेंक सकते हैं। यदि वह अपने राज्य की सीमाओं के बारे में सतर्क नहीं है, तो दुश्मन सक्रिय होंगे और उस पर हमला करेंगे, और परिणामस्वरूप उसका शासन समाप्त हो जाएगा।

इसके लिए उन्हें अपने दिन और रात को आठ भागों में बांटना पड़ा। दिन के पहले आठवें भाग में रक्षा के उपाय और आय-व्यय का लेखा-जोखा सुनना चाहिए। दूसरे के दौरान, उसे नागरिकों और देश के लोगों के मामलों को देखना चाहिए। तृतीया के दौरान स्नान और भोजन करना चाहिए और खुद को अध्ययन के लिए समर्पित करना चाहिए। चौथे के दौरान, उन्हें नकद में राजस्व प्राप्त करना चाहिए और विभागों के प्रमुखों को कार्य सौंपना चाहिए। पाँचवीं के दौरान, उसे अपने मंत्रियों की परिषद से परामर्श करना चाहिए, जिसे वह आवश्यक समझे उसे पत्र भेजना चाहिए और गुप्तचरों द्वारा लाई गई गुप्त सूचनाओं से खुद को परिचित कराना चाहिए। छठे के दौरान, उसे अपनी खुशी में मनोरंजन में शामिल होना चाहिए या परामर्श करना चाहिए। सप्तमी में हाथी, घोड़े, रथ और सेना की समीक्षा करनी चाहिए। आठवीं के दौरान सेनापति के साथ सैन्य योजनाओं पर विचार-विमर्श करे। जब दिन समाप्त हो जाए, तो उसे संध्या गोधूली की पूजा करनी चाहिए, और प्रार्थना करनी चाहिए। इस प्रकार राजा का दिन समाप्त होता है।

रात्रि के प्रथम प्रहर में उसे गुप्तचरों का साक्षात्कार करना चाहिए। द्वितीया में स्नान-भोजन कर अध्ययन में लग जाना चाहिए। तीसरे के दौरान, उसे संगीत वाद्ययंत्रों के साथ बिस्तर पर जाना चाहिए और चौथे और पांचवें (भागों) के दौरान सो जाना चाहिए। छठी के दौरान उसे वाद्य यंत्रों की ध्वनि के प्रति जागना चाहिए और राजनीति के विज्ञान की शिक्षाओं के साथ-साथ किए जाने वाले कार्यों पर विचार करना चाहिए। सप्तम में उसे पार्षदों से परामर्श करके बैठना चाहिए और गुप्त एजेंटों को भेजना चाहिए। आठवीं के दौरान, उन्हें पुजारियों, शिक्षकों और पादरी से आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए और अपने चिकित्सक, मुख्य रसोइया और ज्योतिषी को देखना चाहिए। और एक बछड़े और एक बैल के साथ एक गाय की परिक्रमा करने के बाद, उसे सभा भवन में जाना चाहिए।

अथवा अपनी क्षमता के अनुसार दिन और रात को (अलग-अलग) भागों में बांटकर अपना कार्य करे।

सभा में पहुंचने के बाद, उन्हें अपने मामलों के सिलसिले में उनसे मिलने के इच्छुक लोगों को अप्रतिबंधित प्रवेश की अनुमति देनी चाहिए। क्योंकि, एक दुर्गम राजा को मिलने के लिए उसके निकट के लोगों को जो नहीं करना चाहिए वह करना पड़ता है। इसके फलस्वरूप उसे प्रजा के विद्रोह या शत्रु के अधीन होने का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए उसे मंदिर के देवताओं, साधुओं, विधर्मियों, वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों, मवेशियों और पवित्र स्थानों, नाबालिगों, वृद्धों, बीमारों, व्यथित और असहायों और महिलाओं के मामलों को इस क्रम में देखना चाहिए, या, मामले के महत्व या इसकी तात्कालिकता के अनुसार।

इन वर्गों को सदैव राजा का ध्यान प्राथमिकता के आधार पर प्राप्त करना चाहिए। प्रजा उस राजा से प्रेम करती है जो उनकी भलाई पर ध्यान देता है... उसे हर एक आवश्यक बात को तुरन्त सुनना चाहिए, और उसे टालना नहीं चाहिए। स्थगित किया गया मामला सुलझाना कठिन या असंभव भी हो जाता है।

वेदों के ज्ञाता और तपस्वियों के विषय में अग्नि-अभयारण्य में जाकर, अपने पुरोहित और गुरु के सान्निध्य में, आसन से उठकर प्रणाम करने के बाद उसे देखना चाहिए।

लेकिन उसे तपस्वियों और जादू-टोना में पारंगत व्यक्तियों के मामलों का फैसला तीन वेदों के जानकार व्यक्तियों के परामर्श से करना चाहिए, अकेले नहीं, इस कारण से कि वे क्रोधित हो सकते हैं।

राजा के लिए यज्ञ व्रत गतिविधि है, उसके मामलों का प्रशासन यज्ञ है, व्यवहार की निष्पक्षता उसका शुल्क है और उसके लिए यज्ञ दीक्षा राज्याभिषेक है।

प्रजा के सुख में राजा का सुख है और जो प्रजा के हित में है उसमें अपना हित है। जो स्वयं को प्रिय है वह राजा के लिए हितकारी नहीं है, लेकिन जो विषय को प्रिय है वह उसके लिए हितकारी है।

अतएव सदैव सक्रिय रहते हुए राजा को अपनी प्रजा के भौतिक कल्याण का प्रबंध करना चाहिए। भौतिक कल्याण का मूल सक्रिय रहना है।

क्रिया के अभाव में जो प्राप्त है और जो अभी प्राप्त नहीं हुआ है उसका निश्चित विनाश होता है। गतिविधि से इनाम प्राप्त होता है, और व्यक्ति को धन की प्रचुरता भी मिलती है।

राजा के लिए निर्धारित इन कर्तव्यों से यह देखा जा सकता है कि राजा बहुत अधिक बोझ वाला व्यक्ति है। लेकिन केवल आवश्यक क्षमता, ज्ञान और योग्यता वाले व्यक्ति को ही राजा के रूप में चुना जाता है। माना जाता है कि राजा को केवल तीन घंटे सोना चाहिए। बाकी समय उसे विवेकपूर्ण तरीके से राज्य के मामलों के लिए उपयोग करना होगा। यदि हम यह याद रखें कि कौटिल्य एक बहुत ही ईमानदार और व्यावहारिक प्रशासक थे, तो उन्होंने राजा के कर्तव्यों के रूप में जो कुछ भी लिखा है, वह वास्तव में व्यवहार में पालन करने के लिए था।

अब महाभारत के युद्ध के बाद के राजा और उनके साम्राज्य के बारे में जानकारी लेंगे।

## युनिट ४ : शिशुनाग, नंद और मौर्य वंश

### ४.१ शिशुनाग वंश

शिशुनाग या शिशुनाभ काशी के राजा थे। वह बहुत महत्वाकांक्षी थे। उसने मगध के राज्य पर आक्रमण किया और सिंहासन हासिल किया। उन्होंने १९९४ ईसा पूर्व में खुद को राजा सम्राट के रूप में राज्याभिषेक किया। और चालीस वर्ष तक शासन किया। उन्होंने अपने पुत्र को काशी की गद्दी पर बिठाया।

शिशुनाग वंश के राजा :

अनुक्रमांक	नाम	शाही साल	ईसापूर्व वर्ष
१ .	शिशुनाग	४०	१९९४ – १९५४
२.	काकवर्ण या शकवर्ण	३६	१९५४ – १९१८
३.	क्षेमधर्म	२६	१९१८ – १८९२
४.	क्षत्रौज	४०	१८९२ – १८५२
५.	विधीसार विम्बसार बिम्बसार	३८	१८५२ – १८१४
६.	अजातशत्रू	२७	१८१४ – १७८७
७.	दर्भक या दर्शक	३५	१७८७ – १७५२
८.	उदय	३३	१७५२ – १७१९
९ .	नंदिवर्धन	४२	१७१९ – १६७७
१० .	महानंद	४३	१६७७ – १६३४
		<b>३६०</b>	



इसवीपूर्व १८५२ में बिंबसार राज्य के सिंहासनपर आरूढ़ हुये उन्होने १८५२ – ३८ = १८१४ तक राज्य किया।

बौद्ध इतिहास के ग्रंथ, महावंश और अशोकवंदना, उन्हे बिम्बिसार कहते है। हेमचंद्र उन्हे श्रेणिक कहते है। इन सारे बौद्ध ग्रंथो के अनुसार गौतम बौद्ध बिम्बिसार से ५ साल छोटे थे। बुद्ध ने अपने उत्तराधिकारी अजातशत्रु के शासनकाल के आठवे वर्ष में निर्वाण प्राप्त किया ये सारे ग्रंथ इस बात पर सहमत है की बुद्ध अपने २९ वर्ष में तपस्वी बन गये थे।

विन्सेंट स्मिथ उन्हे बिम्बिसार कहते है और उनका मानना है की इस राजा ने राजधानी राजगृह का निर्माण किया था और इस राजा ने राजधानी राजगृह का निर्माण किया था और वह गौतम बुद्ध के समकालीन थे। बिम्बिसार ने दक्षिण बिहार – अंग पर आक्रमण किया और उसे अपने राज्य में शामिल किया।

उसका पुत्र अजातशत्रु १८१४ इसापूर्व में उसका उत्तराधिकारी बना और २७ वर्षों तक राज्य किया उसके शासनकाल के आठवे वर्ष के दौरान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था तब वे ८० वर्ष के थे। इस प्रकार बुद्ध का जन्म वर्ष १८८६ इसवीपूर्व और उनके निर्वाण के रूप में १८०६ इसवीपूर्व। यदि इन शिशुनाग वंश के शासन काल में कुछ अंतर है तो यह काल थोडा बदल सकता है। के. वेंकटचेल्लम ने १८८७ – १८०७ इसवीपूर्व में इसकी गणना की है।

हमने देखा की सिद्धार्थ गौतम सूर्यवंश के २८ वे राजा थे। उनके ३० वे राजा सुमित्र को अपना सिंहासन छोडना पडा और उसी के साथ १६३४ इसवीपूर्व में इस वंश का अंत हुआ।

## ४.२ नंद वंश

१६३४ इसवीपूर्व में भारत युद्ध के बाद के राजवंशो के इतिहास में एक बडा विभाजन है। मगध सम्राट के अंत के बाद पहली बार एक अवैध शिशुनाग वंश का आखरी राजा महानंदी सिंहासन पर आए। विष्णुपुराण में कहा है : ( IV- XXIV – 21 )

---

*“महानान्दिनस्ततः शूद्रागर्भोद्भवो बली अतिलुब्धो अतिबलो।*

*महापद्मो नंदनामा परशुराम इव अपर अखिलक्षत्रांतकारी भविष्यति।।*

---

महानंदी का पुत्र महापद्मनंद का जन्म एक क्षुद्र पत्नी से हुआ था। महापद्मनंद बहोत लोभी और पराक्रमी था। वह विष्णु के सातवे अवतार परशुराम सहित बाकी सभी क्षत्रिय राजाओं का संहारक साबित हुआ। उन्होने भारत वर्ष पर १६२४ इसवीपूर्व से १५४६ इसवीपूर्व ८८ वर्षों तक राज्य किया। उनके पुत्र सुमाल्य और उनके सात भाईओने अगले १२ वर्षों तक राज्य किया। नंद वंश का कुल राज्यकाल लगभग १०० वर्षों का रहा, १६३४ इसवी पूर्व से १५३४ इसवी पूर्व.

ये ९ नंद राजा भूमी में सबसे शक्तिशाली थे। और पुरे आर्यावर्त (उत्तर भारत) के साथ साथ दक्षिण भारत में भी उनका सीधा अधिकार था। उनके कुशासन के कारण वो काफी अलोकप्रिय हो गए थे और फलस्वरूप आर्य चाणक्य ( उपनाम कौटिल्य – उनका गोत्र नाम कुटील था ) उर्फ विष्णुशर्मा ने लोगो को उनके खिलाफ भडकाकर उन्हे मौत के घाट उतार दिया और उनकी दुसरी पत्नी के पुत्र चंद्रगुप्त मुरा को सिंहासन पर बिठाया। चंद्रगुप्त ने तब मौर्य के रूप में मुरा का पारिवारिक नाम धारण किया।

बौद्ध साहित्य भी इसका विवरण देते है। बौद्ध साहित्य के अनुसार, महापद्म को धन संग्रह करने की अपनी लालची आदतो के कारण धन – नंद के रूप में जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है की उसने खाल गोंद, पेड पत्थर आदि पर कर लगाया और तकरीबन ८० करोड की संपत्ती जमा की और इसी संपत्ती को गंगा नदी के मार्ग में छुपा दिया। गंगा के मुख्य प्रवाह को अनिकट बांध के जरिए मोड कर, उसने गंगा नदी के मार्ग के पत्थर में छेद कर सारी संपत्ती इसमें डाल दी और उसे पिघले हुए सुरमे से बंद कर दिया। अपना खजाना सुरक्षित करने के बाद नदी का प्रवाह फिरसे पूर्ववत कर दिया गया। अपने पुरे जीवनकाल में उसने समय समय पर इसी तरह अपनी संपत्ती को गंगा के मार्ग में जमा करता गया। वे और उनके नौ पुत्र जो नंद के नाम से जाने जाते थे सब की एक के बाद एक मृत्यू हो गयी। ताश को चाणक्य ने मौत के घाट उतार

दिया और जो उनके कुशासन के लिए उनसे नफरत करते थे और जिन्होंने गंगा नदी के सारे धनपर कब्जा कर लिया था।

नौ नंदों को उनके शासनकाल के लिए कुल १०० वर्षों की अवधि देने में सभी हिंदुओं का एकमत है।

इस चंद्रगुप्त ने फिर नाबालिग राजा पुलोमा III को खत्म कर दिया और स्वयं राजा बन गया। उसने अपनी राजधानी को गिरवीराज से पाटलीपुत्र या कुसुमपूर स्थानांतरित कर दी और पुलोमा III के स्थान पर राजा बन गया। समुद्रगुप्त एक पराक्रमी राजा थे। उसने सिकंदर की उन्नति को रोका और युनानी सेना का सफाया कर दिया।

अभी के लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि नंदों या मौर्य या चाणक्य का सिकंदर या किसी और ग्रीक साहसी या आक्रमणकारियों से कोई लेना देना नहीं है।

इस पृष्ठभूमी की जानकारी के साथ आइए हम नंद के उत्तराधिकारियों की ओर आगे बढ़ें।

महाबोधी वंश से, नौ नंदों के नाम इस प्रकार हैं :

१. महापद्म या उग्रसेन २. पाण्डुक ३. पाण्डुगति ४. भूतपाल ५. राष्ट्रपाल ६. गोविशनाक ७. दशसिद्धक ८. कैवर्त ९. धनानन्द

“कलियुग राज वृत्तांत” में महापद्म को धनानंद कहा गया है। पुराणों में नंद के पुत्र का नाम सुमाल्य या सुकल्प दिया है। बाकियों के नाम उपलब्ध नहीं हैं। ऐसा देखा गया है कि महापद्म ने ८८ वर्षों तक राज किया और सुमाल्य ने तकरीबन १२ सालों तक राज किया। महापद्म के बाकी सात पुत्रों ने शायद अपने पिताके साथ सत्ता का उपभोग लिया और सुमाल्य को अपने सिंहासन का एकलौता वारीस बनाया।

पुराणों के अनुसार महापद्म को आठ पुत्रों ने तकरीबन १२ सालों तक राज्य किया। लेकिन इसी समय चंद्रगुप्त मौर्य ने आर्य चाणक्य के मार्गदर्शन में विद्रोही गतिविधियों के कारण हडबडी हो गयी थी। मुद्राराक्षस नाटक के अनुसार उनकी संपत्ति १९ हजार करोड़ थी।

भागवत पुराण अनुसार :

“स एकच्छत्रां पृथिवीं अनुल्लंघितशासनः। शासिष्यति महापद्मो द्वितीय इव भार्गव॥ ( १२ - १ - १० )

वह पुरी पृथ्वी को अपने प्रभुत्व में ले आया। उसके शासन की अवज्ञा नहीं की जा सकती। वह इस तरह शासन करेगा जैसे कि वह दुसरा परशुराम है।

कहा जाता है की महापद्म या धनानंद ने ८८ वर्षों तक शासन किया था। तत्पश्चात सुमाल्य के नेतृत्व में उनके आठ पुत्रों ने १२ वर्षों तक शासन किया।

---

कौटिल्यश्चंद्रगुप्तं स ततो राज्येऽभिषेच्यति

भुक्त्वा मही वर्षशतं ततो मौर्यान् गमिष्यति। मत्स्य - २७३ - २३

---

इन नौ नंदों के शासन को कौटिल्य द्वारा उखाड़ फेंका जाएगा, जो चंद्रगुप्त को नंदों के सिंहासन पर बिठाएगा।

---

महापद्मस्य पर्याये भविष्यन्ति नृपाः क्रमात्।

उद्धरिष्यति कौटिल्यः समैर्द्वादशभिस्तु तान्॥ २२

---

## कौटिल्य ने नंदों को भगाने का प्रण क्यों लिया?

आर्य चाणक्य नंदीओं की राजधानी पाटलीपुत्र के रहिवासी थे, उन्होंने पहले नंद महापद्म या धनानंद के अधर्मी शासन को देखा था। इस धनानंद ने जिस तर हसे गंगा नदी के तल के नीचे अपना धन जमा किया था जिसे हमने पहले पढ़ा है। नीलकंठ शास्त्री द्वारा दक्षिण भरत के इतिहास पृष्ठ ८० में हमारे पास एक बहुत अच्छा संदर्भ है। नंदों द्वारा संचित विशाल धन प्राचीन तमिलों को अच्छी तरह से पता था, और एक मुहावरा बन गया था, संगम युग के कवियों में से एक मोमुल, इन शब्दों का इस्तमाल एक प्रेमी स्त्री के मुख से करवाते हैं : “ ऐसा क्या है जिसने मेरे प्रेमी को इससे अधिक प्रभावित किया है, मेरे आकर्षण और उसे इतने लंबे समय तक मुझसे दूर रखा ? क्या यह समृद्ध पाटलीपुत्र में संचित और युद्ध में विजयी महान नंद द्वारा गंगा के पानी में छुपा हुआ खजाना नहीं हो सकता है ?”

उन दिनों एक भारतीय राजा में यह असाधारण लोभ अकल्पनीय था। ब्राह्मणों और क्षत्रियों को लालच से उपर माना जाता था। सामाजिक संगठन की वर्ण व्यवस्था के अनुसार एक वैश्य या शूद्र में थोड़ासा लालच सहन किया जाता था। नंद शूद्र थे, लेकिन राजा बनने के बाद वे वर्ण व्यवस्था के तहत क्षत्रिय थे और फिर भी उन्होंने अपनी लोलुपता नहीं छोड़ी।

कौटिल्य ने धनानंद के इस व्यवहार में जैन क्षपणक को क्षत्रिय आदेश का निरंतर उल्लंघन को देखा। कल्पक, एक जैन, धनानंद का विश्वासू मंत्री था। कल्पक के बाद, स्थूलभद्र और श्रीयका जैसे अन्य जैन एक के बाद एक उनके सलाहकार बने। जैनो के लिए पक्षपात के रवैये को क्षत्रियो ने विरोध किया।

आर्य चाणक्य के पिता ने इस पक्षपात को भुगता था। वह एक ब्राह्मण थे। फिर भी पाटलीपुत्र में राजा और उनके जैन मंत्रीओं द्वारा उनका जीवन असंभव कर दिया गया। आर्य चाणक्य ने पाटलीपुत्र छोड़कर तक्षशीला के गुरुकुल में राजनैतिक अर्थशास्त्र के शिक्षक के रूप में शामिल हो गए। वे अपना भाग्य आजमाने अपनी मातृभूमि में वापस आए थे। वहां उन्होंने वैदिक संस्थानों की गिरावट को देखा और क्षत्रिय बडप्पन का नुकसान देख वह व्याकुल हो गए।

आर्य चाणक्य की विद्वत्ता के कारण उन्हें पाटलीपुत्र की विद्वत सभा का बनाया गया। धनानंद के प्रधानमंत्री अमात्यराक्षस एक ब्राह्मण थे। पर वह राजा धनानंद के हठधर्मिता पर रोक नहीं लगा सके। अमात्य ने चाणक्य के प्रयासों को देखा, जो पाटलीपुत्र गुरुकुल में उनके पुराने सहपाठी थे। उस दिशा में आर्य चाणक्य के प्रयास विफल रहे। धनानंद का लालच और कामुकता में लिप्त होना काफी गंभीर था। चाणक्य राजा को गरीब कारीगरों को शिक्षा और अनुदान बढ़ाने के लिए राजी कर नहीं सके। इन उपायों के लिए चाणक्य के खुले समर्थन के कारण मामला धनानंद के कानों तक पहुंचा की आबादी के कुछ हिस्सों में उनके कुशासन के खिलाफ असंतोष पैदा हो रहा था। धनानंद से हटा दिया। उसने उन्हें गिरफ्तार करने की योजना बनाई। लेकिन सरकार में मंत्रियों के बीच अपने मित्रों के प्रयासों से वह बच निकलने में सफल रहे।

महावंशतिका एक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार चाणक्य को ब्राह्मणों के लिए आरक्षित स्थान पर बैठा देख धनानंद ने उन्हें वहां से निकाल दिया। चाणक्य को तभी समझ आ गया था कि धनानंद के लिये अच्छा था नाहि उनकी प्रजा के लिये। उन्होंने तभी धनानंद को पद से हटाने का निश्चय किया।

धनानंद की मृत्यु के बाद भलेही उसके पुत्रों ने राज्य किया परंतु परिस्थिती में कोई भी बदलाव नहीं आया।

चाणक्य को राजा के विरुद्ध विद्रोह करना चाहते थे। उन्होंने क्षत्रिय शक्ति को संघटीत करने के लिए एक केंद्र की शुरुआत की। उन्होंने नंद के पुत्र चंद्रगुप्त मौर्य को उस केंद्र का नेता चुना।

### ४.३ : चंद्रगुप्त

वैदिक संस्कृति की उत्पत्ति और विकास पूर्व तुर्की के विशाल क्षेत्र से उत्तर दक्षिण दिशाओं में काकेशस पर्वत, कैस्पियन सागर से गंगा यमुना दोआब तक और नील नदी तक फैला हुआ था। दशराज्ञ युद्ध के बाद अगस्त्य जैसे ऋषियों के प्रयासों और भगवान राम के पराक्रम से भारतीय उपमहाद्वीप का विकास हुआ। भारतयुद्ध के समय तक भारतीय राजनीतिक क्षितिज ने वास्तव में पूर्वी ईरान और

अफगाणिस्तान और स्थिती को समाया था जबतक गझनी के मोहम्मद से शाही राजा अनंगपाल ही हार हुई।

यह निर्विवाद है कि मौर्य साम्राज्य के अधिपत्य के तहत पुरे आधुनिक भारत का विस्तार करनेवाले क्षेत्र और इसके पूर्वी इरान और अफगाणिस्तान तक विस्तार था। यहातक कि औरंगजेब या उसके बाद अंग्रेजो ने भी इतने बड़े क्षेत्रपर शासन नहीं किया था। मौर्यों का काल अवधि १५३४ इसापूर्व से है। १२१८ इसापूर्व तक कुल शासनकाल ३१६ वर्षों तक था। इस अवधि के दौरान राजवंश के १२ राजाओं ने बिहार में पाटलीपुत्र (आज का पटना) से शासन किया। बिहार को तब मगध के नाम से जाना जाता था।

बृहत्कथा के अनुसार चंद्रगुप्त एक शूद्र औरत से हुआ नंद का पुत्र था। अपने पूर्वज नंदो से अपने प्रशासन को अलग करने लिए उसने मुरा से मौर्य नाम धारण किया।

नंद के राज्य में इस पुत्र मुरा के बेटे चंद्रगुप्त को राजमहल से बेदखल कर दिया होगा। अपनी मां के किसी क्षत्रिय रिश्तेदार के यहा उनका पालनपोषण किया था। जब आर्य चाणक्य लगभग (१५३४ +१२ ) १५४६ इसापूर्व नंद के शासन को गिराने का फैसला किया उसकी नंदो के पुत्रों में से लेकीन महलद्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत इस पुत्र पर पड़ी।

ब्रह्मांड पुराण के अनुसार उनका शासन काल १५३४ इसापूर्व से १५१० इसापूर्व कलियुग -राज - वृत्तांत- कलि- युग के राजाओं की वंशवादी जानकारी अनुसार उनका शासनकाल १५३४ इसवीपूर्व से १५०० इसवीपूर्व तक दिखाया गया है।

### **चंद्रगुप्त का कार्यक्षेत्र :**

नंद ने मैसूर तक फैले भारत पें शासन किया था। चंद्रगुप्त की जीत में पंजाब के राजा पर्वतक एक बड़ी भूमिका थी। पर्वतक को अधिग्रहण में आधा हिस्सा देने का वादा किया गया था। हालांकी जैसे ही चंद्रगुप्त ने नंद के सैन्य को हराया तभी पर्वतक की भी मृत्यु हो गई। ऐसा कहा जाता है कि पर्वतक को एक कन्या को गले लगाया तभी उनकी मौत हो गयी। चंद्रगुप्त बिना किसी प्रयास के सहयोगी राज्य को अपने

राज्य में शामिल कर सके। मुद्राराक्षस में कहाँ है , ‘ क्षपणकोजीवसिद्धिः विषकन्ययापर्वतेश्वरघातितवान्’ जैन मुनी जीवसिद्धीने ( चंद्रगुप्त के सहयोगी ) पर्वतक राजा को एक विषकन्या ( जिसका शरीर जहर से संस्कारित था ) के माध्यम से मारा। यह जीवसिद्धी चाणक्य के गुप्तचर थे। जैसे ही पर्वतक की मृत्यु हुई वैसे ही उसका पुत्र मलयकेतू अपनी जान बचाने भाग निकला। उसका भाई वैरोचक हालांकि उस समय पाटलीपुत्र में था। उसने राजमहल के कुछ कर्मचारीओं को जीत लिया। एक दारुवर्मा (एक बढई) को प्रवेशद्वार पर कमान बनाने का काम दिया गया। एक योजना के अनुसार जैसेही चंद्रगुप्त अपने सजे हुए हाथी पर सवार होकर उस कमान के नीचे से गुजरेगा तब वह पुरा ढाचा उनपर गिर जाए और उनकी वही तुरंत मृत्यु हो जाए। दारुवर्मा ने अपना काम समय से पहले ही खतम कर दिया। चाणक्य को संदेह हुआ। उन्होंने दारुवर्मा की काम समय से पहले खतम करने के लिए प्रशंसा कि। उन्होंने कहा -

“ अचिरादेव अस्य दाक्षस्य अनुरूपं फलं अभिगममिष्यसि दारुवर्मन्”

हे दारुवर्मा ! तुम्हे इस बेहतरीन काम का इनाम जल्द ही मिलेगा। उन्होंने इसे इस तरह हस के कहाँ की दारुवर्मा को कोई संदेह नहीं हुआ।

चाणक्य ने मलयकेतू के भाई वैरोचक को जीत लिया था और उसे अपने पिता का आधा राज्य देने का वादा किया था। वह आसानी से धोखा खानेवाला था। चाणक्य ने उसे चंद्रगुप्त से पहले उस कमान के नीचे से गुजरने के लिए राजी कर लिया। उसे उंची वस्त्र पहनाकर एक सजाए हुए हाथी पर बिठा दिया। उसे जुलूस के साथ प्रवेशद्वार पर लाया गया। किसीने पहले चंद्रगुप्त को नहीं देखा था। हाथी सवार बर्बरक को भी बड़ी घूस देकर जीता गया था, बशर्त कमान गिरने कि हडबडी में वह चंद्रगुप्त की हत्या कर दे।

पर वक्त आनेपर बर्बरक ने जल्दबाजी दिखाई। जैसे ही हाथी कमान के नीचे आया, उसने एक छोटी तलवार लेकर वैरोचक को मारने की कोशिश की पर गलती से तलवार हाथी को लग गई और वह भागने लगा। उसी समय दारुवर्मन ने कमान गिरा दी जिसके नीचे बर्बरक बच निकलेगा इसिलिए वैरोचक को चंद्रगुप्त समझ कर मार दिया। पर यह योजना असफल हुई और दारुवर्मा को पत्थर से कुचल कर मारने कि सजा दी गई।



इसी तरह चंद्रगुप्त के मार्ग में आनेवाली सारी आंतरिक रुकावटों को दूर किया गया। पुराने वैद्य और नौकरो को अच्छी तरह से परखने के बाद उन्हें राजा के निजी महल में तैनात किया गया।

किसी भी मौर्य राजा ने बुद्ध धर्म को नहीं अपनाया पर इसका मतलब यह नहीं था कि वे बौद्ध धर्म के खिलाफ थे। हिन्दुओं ने इन आंतरिक भेदों को नजरअंदाज किया। चाणक्य ने बड़ी आसानी से जैवसिद्धि और उनके अनुयायी जैसे शतकाल और श्रीयाक को अपनी तरफ कर लिया।

जब चाणक्य ने अपना उद्देश साध्य किया तब उन्होंने अमात्य राक्षस जो नंदों का प्रधानमंत्री था, उन्हें पुनः वही पद चंद्रगुप्त के राज्य में ग्रहण करने का आग्रह किया। चाणक्य ने प्रधानमंत्री पद का त्याग किया और उन्होंने राज्यशास्त्र के शिक्षक का स्थान ग्रहण किया। उनके विचार उनके अर्थशास्त्र में प्रतिबिम्बित होते हैं।

आइए अब हम राजनीति पर उनके इस महान कार्य कि और देखें। यह वेदों के दिनों से भारत में राजाओं द्वारा अपनाए जानेवाले प्रशासन के चरित्र का एक उचित विचार देता है।

## ४.४ मौर्य वंश

“कलियुग राज वृत्तांत” में हमें इस महत्वपूर्ण राजवंश के वंशवादी विवरणों का सारांश मिलता है, आर्य चाणक्य चंद्रगुप्त और उनके पोते अशोक जैसे महापुरुषों की उपस्थिति से पवित्र नाम।

*द्वादशैते नृपाः मौर्याः चंद्रगुप्तादयो महीम्।*

*शतानि त्रीणि भोक्ष्यन्ति दश षट्च समाः कलौ॥ ( भाग III. प्रकरण २ )*

चंद्रगुप्त मौर्य वंश ने कलियुग के दौरान इन १२ राजाओं के नेतृत्व में से ३१६ वर्ष राज्य किया।

इस प्रकार नाम और उनके शासन काल का निर्माण किया जा सकता है :

अनुक्रमांक	नाम	शासनकाल	ईसवीपूर्व में
------------	-----	---------	---------------

युनिट ४ : शिशुनाग, नंद और मौर्य वंश

१.	चंद्रगुप्त	३४	१५३४ – १५००
२.	बिंदुसार	२८	१५०० – १४७२
३.	अशोक	३६	१४७२ – १४३६
४.	सुपार्श्व ( या सुयश या कुणाल )	८	१४३६ – १४२८
५.	दशरथ, बंधुपालिता	८	१४२८ – १४२०
६.	इंद्रपालिता	७०	१४२० – १३५०
७.	हर्षवर्धन	८	१३५० – १३४२
८.	संगत	९	१३४२ – १३३३
९.	सलिसुका	१३	१३३३ – १३२०
१०.	सोमशर्मा या देवशर्मा	७	१३२० – १३१३
११.	शतधन्वा	८	१३१३ – १३०५
१२.	बृहद्रथ या बृहदश्व	८७	१३०५ – १२१८
	<b>कुल</b>	<b>३१६</b>	

आखरी राजा शासन करने के लिए का फी वृद्ध हो गए थे, और मौर्य वंश का कोई भी वंशज राज करने के लायक नहीं था। तभी सेना के सेनापती पुष्यमित्र शुंग ने राजा को खत्म कर राज्य को हासील किया।

श्रीमान पार्गीतर ने कहा है , शासको के नाम और उनके काल पर दो पुराण सहमत नहीं है। मत्स्यपुराण और वायुपुराण पूर्ण १२ शासको की गणना करते है लेकिन शासन काल को ३०० वर्ष बताते है।

---

इत्येते दश च द्वेच ते भोक्ष्यन्ति वसुंधराम्।

शतानि त्रीणि पूर्णानि तेभ्यः शुंगान् गमिष्यति॥

---

यह १२ राजा ३०० सालो तक शासन करेंगे और फिर उनके वंश का अंत होगा और शुंग नये शासक होंगे।

सिर्फ आखरी राजा के शासन काल में अंतर है। कलियुग – राज – वृत्तांत के अनुसार ८७ वर्षों का काल पुराणों में ७० वर्ष बताया गया है। कुछ लोग १३७ वर्षों का काल भी मानते हैं।

महायान और हीनयान बौद्ध विद्यालयों द्वारा दिए गये बौद्ध ग्रंथ और पुराणों में भी भिन्नता है। वह अशोक को बौद्ध के रूप में माना जाता है। वे मौर्यों के अशोक को कश्मीर के गोनंद वंश के अशोक के साथ भ्रमित करते हैं।

अशोकवन्दना ( दिव्यावदन का गद्य संस्करण ) में कहा गया है कि अशोक नंद का पुत्र था, लेकिन अशोकवन्दना के कर्ता, उसके दादा चंद्रगुप्त और पिता बिंदुसार का नाम छोड़ देते हैं। दूसरी ओर छंद संस्करण शिशुनाग वंश के अजातशत्रू के स्थान पर महिपाल को लाना है। अशोक और उसके शासनकाल का विवरण कल्हण की राजतरंगिणी से है और इसलिए अशोक मौर्य वंश का नहीं है।

## युनिट ५ : शुंग और कण्व वंश

---

### ५.१ शुंग वंश

इस शुंग वंश के संस्थापक पुष्यमित्र मौर्य वंश के अंतिम राजा बृहद्रथ के सेनापति थे। बृहद्रथ ने ८७ वर्षों तक शासन किया था और अपनी वृद्धावस्था में भी वह सत्ता नहीं छोड़ना चाहते थे। जब बृहद्रथ सेना की सलामी ले रहे थे तब पुष्यमित्रने उन्हें मार डाला और खुद को मगध के सम्राट के रूप में स्थापित कर लिया। जाहिर तौर पर बृहद्रथ अलोकप्रिय हो गये थे और उनका कोई योग्य उत्तराधिकारी नहीं था। तो पुष्यमित्र आसानी से पदभार संभाल सकते थे। उन्होंने ६० वर्षों तक शासन किया। ऐसा प्रतीत होता है कि पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया था।

पुष्यमित्र १२१८ ईसा पूर्व में मगध सिंहासन पर बैठे थे। उन्होंने ६० वर्षों तक शासन किया अर्थात् ११५८ ईसा पूर्व तक।

उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र अग्निमित्र था जिसने ११०८ ईसा पूर्व तक याने ५० वर्षों तक शासन किया। यह अग्निमित्र शूद्रक राजा नहीं है जो प्रसिद्ध नाटक मृच्छकटिक के लेखक थे। यह अग्निमित्र ,कालिदास के लिखे नाटक मालविकाग्निमित्र के नायक थे।

अग्निमित्र के बाद उनके पुत्र वसुमित्र ११०८ ई.सा पूर्व में सिंहासनपर विराजमान हुए और उन्होंने ३६ वर्षों तक राज्य किया। कुछ पुराण उन्हें उनके बेटे सुज्येष्ठ के बाद का बताते हैं पर यह एक स्पष्ट रूप से गलती ही है। जैसे कि हमने देखा है, कालिदासने वसुमित्र को अग्निमित्र और उनकी मुख्य रानी धरिणी का पुत्र बताया है। वसुमित्रने यवनो पर बहुत महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी।

वसुमित्र के पुत्र सुज्येष्ठ ने १०७२ ईसा पूर्व में मगध के सिंहासन पर कब्जा कर लिया और १०५५ ईसा पूर्व तक जारी रहा। उसने १७ वर्षों तक शासन किया। फिर भद्रक आया (३० वर्ष शासन किया), पुलिंदक (३३ वर्ष), घोषवसु या घोष (३ वर्ष), वज्रमित्र (२९ वर्ष) और देवहूति या क्षेमभूमि (१० वर्ष), इस क्रम में एक के बाद एक ने शासन किया।

ये विवरण K.R.V से एकत्रित किए गए हैं। जैसा कि यह एक शोधित विवरण प्रतीत होता है, विभिन्न पुराणों में सभी अलग-अलग विवरणों को समेटता है और हमें एक सर्वसम्मत विवरण देता है।

कलियुग राज वृत्ताण्त के अनुसार (K.R.V.) कहते हैं :

---

*दशैते शृंगराजानो भोक्ष्यन्ति इमां वसुंधराम्*

*शतं पूर्ण शतेद्वे च तेभ्यः कण्वान् गमिष्यति ॥*

---

यह दस शृंग राजा ३०० वर्षों तक राज्य करेंगे और फिर कण्व वंश का शासन होगा।

K.R.V, अंतिम राजा देवहुति के बारे में, उनके कुकर्मों का विस्तृत विवरण देते हैं। वह अपने लड़कपन के दिनों से ही यौन सुख के आदी थे। ९२८ ईसा पूर्व में जैसे ही वह सिंहासन पर आए, उन्होंने अपने सक्षम मंत्री वासुदेव को कण्व गोत्र के एक ब्राह्मण की देखभाल के लिए सरकार का प्रशासन सौंप दिया और खुद सेवानिवृत्त हो के विदिशा गए, जो अपनी सुंदर नृत्यांगना के लिए विख्यात था। प्रशासन की देखभाल से मुक्त होकर वह और अधिक कामुक हो गये और हमेशा अच्छे परिवारों की युवा और सुंदर युवतियों की तलाश में रहते थे। इस प्रकार वह अपनी ही प्रजा के प्रति घृणा का पात्र बन गया। लेकिन उसने शहर के विद्वानों और बुजुर्गों की सलाह पर ध्यान नहीं दिया।

उसने अपने ही मंत्री वासुदेव की पुत्री की सुन्दरता के बारे में सुना था। वह विवाहित थी और अपने पति के साथ शायद पाटलिपुत्र में जहाँ उसका पति किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन हो रही थी। देवहुति ने वासुदेव के उस दामाद को किसी बहाने से विदिशा स्थानांतरित कर दिया। एक दिन उसने अपने आदमियों के माध्यम से उस महिला के पति की चुपके से हत्या करवा दी। इसके बाद वह महिला का पति बनकर उसके घर में घुस गया और उसके साथ दुष्कर्म किया। उस महिला ने गुस्से और अपमान के कारण फौरन अपना जीवन समाप्त कर लिया।

मंत्री वासुदेव ने जब सुना कि उसकी बेटी और दामाद के साथ क्या हुआ है, तो वह बहुत क्रोधित हुआ। हालांकि, उन्होंने अपने आप को शांत रखा और एक नृत्यांगना लड़की जो एक विषकन्या जिसका शरीर पूरी तरह से जहरीला था उसे देवहूति के पास भेजने में कामयाब रहे। वह सबसे अच्छे कपड़े और खुद को पसंद के गहनों से सजकर विदिशा के राजा देवहूति के पास पहुँची। उसने राजा को गले लगाकर मार दिया। जब लोगों ने राजा की मृत्यु के बारे में सुना तो वे इस समाचार से आनंदित हुए।

उन्होंने वासुदेव जो एक सक्षम मंत्री थे उन्हें सम्राट के रूप में पदभार ग्रहण करने का आग्रह किया। तो कण्व वंश के वासुदेव ९१८ ई.पू. में सम्राट बने।

## ५.२ कण्व वंश

कुछ पुराणों में इस कण्व वंश को शृंग या शृंगभृत्य वंश के नाम से जाना जाता है। यह भी कहा जाता है कि वासुदेव का आधिपत्य केवल गिरिव्रज पाटलिपुत्र क्षेत्र में था और अन्य क्षेत्र विशेष रूप से विदिशा आंध्र के आने तक कुछ शृंगों के नियंत्रण में थे।

विष्णु पुराण कहता है :

*एते काण्वायनाश्चत्वारः पंचचत्वारिंशद्वर्षाणि भूपतयो भविष्यन्ति (अंश IV - २४ - ३९, ४२)*

कण्व के ये चारो राजा ४५ वर्षों तक शासन करेंगे।

लेकीन एक और संस्करण है :

*एतेचत्वारिंशत् काण्वायनश्चत्वारः। पंचचत्वारिंशद्वर्षाणि भूपतयो भविष्यति ॥ ४२*

कण्व वंश के ये चार राजा  $४०+४५=८५$  वर्ष तक शासन करेंगे।" इस वंश के राजाओं के नाम और उनके शासन काल इस प्रकार हैं:

१. वासुदेव	३९	९१८ ई.पूर्व से ८७९ ई.पूर्व
२. भूमिमित्र	२४	८७९ – ८५५
३. नारायण	१२	८५५-८४३
४. सुशर्मा	१०	८४३-८३३

४ राजाओं के कुल ८५ वर्ष।

K.R.V फिर विवरण इस प्रकार बताते हैं:

कण्व गोत्र के ये चारों राजा ८५ वर्षों तक धर्मपूर्वक शासन करेंगे। कण्वों के प्रधान सेनापति, जिनका नाम सिंहखा स्वातिकर्णी भी था, जिन्हें शिमुख भी कहा जाता था, एक बहुत बहादुर योद्धा थे। वह प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र में पैठण) से आंध्र के सैनिकों को लाए और उन्होंने अपने ही राजा सुशर्मा को मार डाला। उन्होंने शुंग-लाइन के उन लोगों पर भी विजय प्राप्त की जो कुछ क्षेत्रों में शासन कर रहे थे और आंध्र राजवंश की स्थापना की।

अब तक हमने महाभारत युद्ध के अंत से सात राजवंशों के बारे में बात की है। वो हैं:

वंश	राजाओं की संख्या	कुल वर्ष	शासन काल
१. बृहद्रथ	२२	१००६	३१३८ – २१३२ ई.पू.
२. प्रद्योत	५	१३८	२१३२ – १९९४
३. शिशुनाग	१०	३६०	१९९४ – १६३४
४. नंद	९	१००	१६३४ – १५३४
५. मौर्य	१२	३१६	१५३४ – १२१८
६. शुंग	१०	३००	१२१८ – ९१८
७. कण्व	४	८५	९१८ – ८३३ ई.पू.

### कुल ७२ राजा और २३०५ वर्ष

आंध्र के सेनापतियों ने अपने ही आदमियों के माध्यम से कण्व सेना पर नियंत्रण हासिल कर लिया था। आंध्र प्राच्यका देश के शासक बाली के पुत्रों में से एक था। सर्वप्रथम कण्व वंश के सुशर्मा को मारकर स्वयं को स्थापित करने वाला शिमुख ८३३ - ८१० ईसा पूर्व था। उन्होंने शतवाहन-जिसका वाहन 'सिंह' है, सिंहा-वाहन या शतवाहन या शत-कर्णी की उपाधि धारण की है। पहले हैं शिमुख शातकर्णी।

पुलोमा III ((अवयस्क) ७ साल) आंध्र राजवंश में अंतिम राजा थे।

अतः इस वंश का अंत ३७६-४९ ३२७ ई.पू. में हुआ। (एस.डी. कुलकर्णी ग्लोरियस ईपोक के अनुसार)। अंतिम दो के शासन के दौरान, गुप्त वंश के चंद्रगुप्त सेनापती होने के साथ-साथ चंद्रश्री के बहनोई भी थे। वह अपने बहनोई चंद्रश्री के साथ-साथ अपने नाबालिग बेटे पुलोमा III को भी खत्म करने में कामयाब रहा और खुद मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ।



## युनिट ६ : सातवाहन राजवंश (आंध्र राजवंश)

---

कथासरित्सागर के अनुसार, राजा दीपकर्णी को शेर की गुफा के पास जंगल में एक परित्यक्त बच्चा मिला। संभवतः प्राकृत बोली में सात इस शब्द का अर्थ शेर था। इस प्रकार, बच्चे को "सातवाहन" के रूप में जाना जाने लगा। वे राजा दीपकर्णी के उत्तराधिकारी बने और सातवाहन वंश की स्थापना की। संभवतः, वह दीपक प्रतिष्ठान के राजा थे। बृहत्कथा तथा सर्ववर्मा के लेखक गुणाढ्य, कटतंत्र व्याकरण के लेखक सातवाहन राजा के समकालीन थे। पुराण हमें बताते हैं कि सातवाहन वंश के एक वंशज सिमुक या सिंहक ने अंतिम कण्व राजा सुशर्मा को उखाड़ फेंकने के बाद मगध के सिंहासन पर चढ़ाई की। दिलचस्प बात यह है कि वायु पुराण में उल्लेख है कि सिंधुका ने शुंग वंश के बाद के राजाओं पर भी विजय प्राप्त की थी। कण्व राजा सुशर्मा को मारने वाले आंध्र राजा और शुंगों के राज्य पर विजय प्राप्त करने वाले आंध्र राजा दो अलग-अलग व्यक्ति थे क्योंकि अंतिम कण्व राजा सुशर्मा ने लगभग १३११-१३०१ ईसा पूर्व शासन किया था जबकि सातवाहनों ने महापद्म नंद के राज्याभिषेक के बाद ८२८ ईसा पूर्व, ८३६ साल बाद अपने वंश की स्थापना की थी। मत्स्य पुराण में कहा गया है कि महापद्म के राज्याभिषेक और आंध्र के शासनकाल की शुरुआत के बीच ८३६ वर्षों का अंतराल था। प्रतीत होता है कि, सिंप्रात आंध्र के राजा थे जिन्होंने १३०१ ईसा पूर्व के आसपास सुशर्मा को मार डाला था और सिमुक सिंहका या सिंधुका आंध्र के राजा थे जिन्होंने दिवंगत शुंगों के राजाओं पर विजय प्राप्त की और ८२६ ईसा पूर्व के आसपास मगध में सातवाहनों के शासन की स्थापना की।

वायु पुराण में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सप्तर्षी राजा परीक्षित के शासनकाल के दौरान सौ वर्षों (३१७६-३०७६ ईसा पूर्व) के लिए मघा नक्षत्र में थे और फिर से २४ वें नक्षत्र, यानी, आर्द्रा (यानी, २४ वीं शताब्दी) में होगा। लगभग ८७६-७७६ ईसा पूर्व आंध्र (सातवाहन) राजवंश के प्रारंभ के समय तक माघ से। (वेद वीर आर्य शोध के अनुसार)।

---

“सप्तर्षयो मघयुक्ताः काले परीक्षिते सतम।

अन्ध्रस्ते स चतुर्विंशसे भविष्यन्ति मेत माम्।”

---

सम्राट शिमुका, सातवाहन राजवंश के संस्थापकने ८२६ - ८०३ सामान्य काल में शासन किया और ८२६ सामान्य काल में मगध को जीता।

### ६.१ राजा शूद्रक प्रथम विक्रमादित्य (२३०० – २२०० ईसा पूर्व) और राजा शूद्रक द्वितीय (८५६-७५६ ईसा पूर्व) की तिथि

यह सर्वविदित है कि राजा शूद्रक (शूद्रक द्वितीय) प्रसिद्ध संस्कृत नाटक "मृच्छकटिकम्" के लेखक थे। वामन के काव्यालंकारसूत्रवत्ती में शूद्रक को मृच्छकटिकम् के लेखक के रूप में उल्लेख किया गया है। लेकिन मृच्छकटिकम् राजा शूद्रक को अतीत के राजा के रूप में संदर्भित करता है। मृच्छकटिकम् के अनुसार, शूद्रक प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ किया और १०० साल और १० दिन तक जीवित रहा। उसका पुत्र उसका उत्तराधिकारी बना। शूद्रक का उल्लेख दंडी के दशकुमारचरितम् में, बाणभट्ट के कादम्बरी में, सोमदेव के कथासरित्सागर में और बृहत्कथामंजरी में किया गया है। हर्षचरितम् में, राजा शूद्रक को, चकोरा के राजा चंद्रकेतु का शत्रु कहा गया है। बाण की कादंबरी विदिशा को शूद्रक की राजधानी होने का संकेत देती है जबकि कथासरित्सागर और बृहत्कथामंजरी वेताल कथा उनकी राजधानी को क्रमशः शोभावती और वर्धन या वर्धमान के रूप में संदर्भित करती है।

कादंबरी के अनुसार, विदिशा के राजा शूद्रक, अवंती राजा तारापीड़ के पुत्र चंद्रपीड़ के अवतार थे। अवंतीसुंदरिकथा ने शूद्रक को अवंती के एक ब्राह्मण राजा के रूप में वर्णित किया है और उल्लेख किया है कि उसने सातवाहन वंश के एक राजकुमार स्वति को हराया था। कवि राजशेखर ने उल्लेख किया है कि शूद्रक एक सातवाहन राजा का ब्राह्मण मंत्री था। सातवाहन राजा ने अपनी रानी को बचाने के लिए शूद्रक को अपने राज्य का आधा भाग दिया, जब वह एक राक्षस द्वारा अपहरण कर ली गई थी। दिलचस्प बात यह

है कि अनंत के वीरचरित में शुद्रक को शालिवाहन और उनके पुत्र शक्तिकुमार के सहयोगी के रूप में वर्णित किया गया है। बाद में, शुद्रक ने शक्तिकुमार से युद्ध किया और उसे हरया। जैन कवी गलती से सातवाहन को शालिवाहन मान लेते हैं।

वस्तुतः दो शुद्रक थे। प्रथम शुद्रक दक्षिण भारत के अस्मक जनपद से संबंधित था। वह प्रतिष्ठान के राजा सातवाहन के ब्राह्मण मंत्री थे और विदिशा और अवंती के राजा बने। चूँकि बृहतकथा और कथासरित्सागर शुद्रक की कहानी से संबंधित हैं, इसलिए, शुद्रक प्रथम गुणाढ्य (२२००-२१०० ईसा पूर्व) से पहले विकसित होगा। प्रतीत होता है कि विदिशा को प्राचीन काल में शोभावती के नाम से भी जाना जाता था।

स्कंद पुराण में उल्लेख है कि शुद्रक कलियुग के ३२९० वर्ष बाद जीवित रहे। दिलचस्प बात यह है कि स्कंद पुराण शुद्रक को नंदों और चाणक्य से पहले रखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्कंद पुराण द्वारक युग (५५७७ ईसा पूर्व) की शुरुआत के युग से ३२९० वर्ष गिना जाता है, लेकिन बाद में गणना करने वालों ने गलती से कलियुग के युग का उल्लेख किया। स्कंद पुराण के अनुसार बुद्ध का जन्म एक अज्ञात युग के ३६०० वर्ष बाद हुआ था। जैसा कि पहले चर्चा की गई है, बुद्ध का जन्म १९४४ ईसा पूर्व में हुआ था। इसलिए, स्कंद पुराण ५५७७ ईसा पूर्व के युग से ३६०० वर्ष गिनाता है और इंगित करता है कि बुद्ध का जन्म मोटे तौर पर १९७७ ईसा पूर्व के बाद हुआ था। इस प्रकार, राजा शुद्रक प्रथम ५५७७ ईसा पूर्व के बाद २२८७ ईसा पूर्व ३२९० साल के आसपास शोभावती या विदिशा में सिंहासन पर बैठे होंगे। कथासरित्सागर का वर्णन है कि राजा शुद्रक प्रथम ने लता और कर्नाता राज्य विरावर और उनके पुत्र सत्ववर को दिया था। कथासरित्सागर यह भी उल्लेखित करता है कि राजा यशकेतू ने राजा शुद्रक प्रथम के जीवनकाल से पहले शोभावती शहर में शासन किया था।

शुद्रक द्वितीय उत्तर बंगाल (पुंड्रवर्धन) के राजा थे। अबुल फजल ने अपनी आईन-ए-अकबरी में एक बंगाली खत्री राजा शुद्रक का उल्लेख किया है जो ९३ वर्ष तक जीवित रहे। पाल राजा यक्षपाल के एक शिलालेख में उल्लेख है कि शुद्रक गौड़ (गौड़ेश्वर) के सम्राट थे। इस शिलालेख के अनुसार, शुद्रक द्वितीय परितोष का पुत्र था और उसका पुत्र विश्वरूप गया का राजा बना। सभी संभावना में, शुद्रक द्वितीय न केवल

शालिवाहन (६५९-६३० ईसा पूर्व) के समय से पहले ही विकसित हुआ, बल्कि विक्रमादित्य पहला (७१९-६५९ ईसा पूर्व) के समय भी। लोकप्रिय पारंपरिक धारणा उल्लेख करती है कि शूद्रक द्वितीय पहले विक्रमादित्य से पहले था। कश्मीरी कवि कल्हण का कहना है कि द्वितीय शूद्रक विक्रमादित्य से पहले हुआ था। जाहिर है, शूद्रक निःसंदेह विक्रमादित्य पहला (७१९ सामान्य काल) से पहले हुआ था। सुमतित्र का उल्लेख है कि राजा शूद्रक कलियुग (३१०१ ईसा पूर्व) के २२४५ साल बाद, यानी लगभग ८५६ ईसा पूर्व में हुआ था। येल्लाचार्य के अनुसार, राजा शूद्रक द्वितीय कलियुग के युग के १९४५ वर्ष बाद जीवित रहे और राजा शूद्रक द्वितीय के १०९८ वर्ष बाद राजा विक्रमादित्य विकसित हुये।

---

*बाण-वेद-नव-चंद्र-वर्जितः ते अपि शूद्रक-समःतेभ्यः*

*विक्रमा-समः भवन्ति वै नाग-नंदा-वियद-इंदु-वर्जिताः।*

---

प्रतीत होता है, येल्लाचार्य ने महापद्म नंदा की गणना में ३०० साल की पौराणिक कालानुक्रमिक त्रुटि का पालन किया। इसलिए, वह वर्ष २२४५ के बजाय कलियुग के वर्ष १९४५ में शूद्रक द्वितीय की गणना करते हैं। वह ५७ ईसा पूर्व (१९४५ + १०९८ = ३०४३ साल ३१०१ ईसा पूर्व के युग के बाद) में विक्रमादित्य द्वितीय की तारीख की सही गणना करता है। येल्लाचार्य के ज्योतिषदर्पण में एक और कथन है जो उल्लेख करता है कि २३४५ वर्ष कलियुग (३१०१ ईसा पूर्व) से शूद्रक (बाणाब्धि-गुण-दसरोणाः २३४५ शूद्रकोबदाः कलेर्गताः) तक बीत चुके हैं।

इस प्रकार, बड़े तौर पर यह स्थापित किया जा सकता है कि शूद्रक द्वितीय ९ वीं शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में हुए थे। हो सकता है कि वह कलियुग (३१०१ ईसा पूर्व) के युग के बाद ८५६ ईसा पूर्व २२४५ वर्षों में पुंड्रवर्धन या गौड़ के सिंहासन पर बैठे हो। संभवतः, शूद्रक द्वितीय ८२६ ईसा पूर्व के आसपास सातवाहन राजा सिमुक के सहयोगी बन गये जब उसने मगध पर विजय प्राप्त की। सिमुक की मृत्यु के बाद, शूद्रक द्वितीय ने अपना राज्य गया तक बढ़ाया होगा। उसने अपने पुत्र विश्वरूप को गया का राजा बनाया। संभवतः राजा शूद्रक द्वितीय ने उत्तर बंगाल या पुंड्रवर्धन में ८५६-७९० ईसा पूर्व के आसपास शासन किया

था। राजा शूद्रक द्वितीय “मृच्छकटिकम्”, “विनावासवदत्तम्” और “पद्मप्रभृतिका” के लेखक थे। कुलशेखर वर्मन अपने नाटक, ताप्तीसवर्णनम् में संस्कृत कवियों का कालानुक्रमिक क्रम देते हैं जिसमें शूद्रक को कालिदास, हर्ष और दंडी से पहले मानते हैं (शूद्रक-कालिदास-हर्ष-दंडीप्रबंधनम्...)। दंडी शूद्रक को सुबंधु के बाद रखते हैं जो बिन्दुसार (सुबंधु-गुणाढ्य-मूलदेव-शूद्रक) के समकालीन थे।।

## ६.२ सातवाहन सोमदेव के कथासरित्सागर के पुरालेख

साहित्यिक प्रमाणों से हमें ज्ञात होता है कि गुणाढ्य (२२००-२१०० ईसा पूर्व), बृहत्कथा के लेखक प्रतिष्ठान के राजा सातवाहन के समकालीन थे। अशोक के छठे स्तंभ शिलालेख के एक अंश में सातवाहनों का उल्लेख है। जाहिर है, शुरुआती सातवाहन वंश ने महाभारत काल के बाद प्रतिष्ठान पर शासन किया था। प्रतीत होता है, वे राजा सिमुक के उदय से पहले अस्मक राजाओं और आंध्र के राजाओं के सामंत थे। नाणेघाट के एक शिलालेख में राजा सिमुक सातवाहन का उल्लेख है और नासिक गुफा के एक शिलालेख में दूसरे राजा कान्हा के नाम का उल्लेख है। संभवतः, नाणेघाट की गुफा में पाए गए शिलालेख पांचवें सातवाहन राजा श्री शतकर्णी के शासनकाल के हैं और शिलालेखों में वर्णित नागानिका उनकी मां थीं। श्री शतकर्णी को वेदी श्री शतकर्णी के नाम से भी जाना जाता था। छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के बालपुर गाँव में मिले एक सिक्के में आठवें राजा अपिलक या अपिटक के नाम का उल्लेख है। अठारहवें राजा अरिष्ट सातकर्णी और उन्नीसवें राजा हाल सातकर्णी शक राजा रुद्रदामन के समकालीन थे।

हाल राजा साहित्य में सबसे प्रसिद्ध सातवाहन राजा था। वह गाथासप्तशती के लेखक थे। उनके नाम का उल्लेख लीलावती, अभिधान चिंतामणि, देशिनाममाला आदि में किया गया है। २५वें राजा गौतमीपुत्र सातकर्णी सातवाहन वंश के अंतिम प्रतापी राजा थे। उन्होंने शक राजाओं को पराजित किया और उनके क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

‘कलियुग राज वृत्तांत’ के अनुसार, सातवाहन वंश के ३२ राजा थे और उन्होंने लगभग ५०६ वर्षों तक शासन किया। दिलचस्प बात यह है कि वायु पुराण में केवल १९ राजाओं का नाम है लेकिन हमें बताता है कि ३० राजा थे। मत्स्य पुराण में यह भी कहा गया है कि १९ राजाओं ने ४६० वर्षों तक शासन किया

लेकिन वास्तव में उसमें ३१ राजाओं की गणना की है और नौवें राजा मेघस्वती के नाम को छोड़ दिया और सौम्य सातकर्णी के शासनकाल की संख्या नहीं दी। मत्स्य पुराणद्वारा दिए गए ३० राजाओं के व्यक्तिगत शासन का काल कुल ४६० वर्ष है। यह संभावना है कि जिन लोगों को पुराणों के समय-समय पर अद्यतन करने का काम सौंपा गया था, उन्होंने ये त्रुटियाँ कीं। यह स्पष्ट है कि मत्स्य पुराण और 'कलियुग राज वृत्तांत' सातवाहन वंश के बारे में सटीक और प्रामाणिक जानकारी प्रदान करते हैं और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ३० या ३२ सातवाहन राजाओं ने लगभग ४९२ वर्षों तक शासन किया।

### ६.३ सातवाहन राजवंश का शासन काल (८२६-३३४ ईसा पूर्व)

	शासन काल (वर्षों में)	सामान्य काल में
१. शिमुका या सिंहका	२३	८२६ – ८०३
२. कृष्ण श्री शतकर्णी या कान्हा	१८	८०३ – ७८५
३. श्री मल्ल शतकर्णी	१०	७८५ – ७७५
४. पुर्नोत्संग	१८	७७५ – ७५७
५. श्री शतकर्णी	५६	७५७ – ७०१
६. स्कंधस्तंभीन	१८	७०१ – ६८३
७. लंबोदर	१८	६८३ – ६६५
८. अपितका या अपिलका	१२	६६५ – ६५३
९. मेघस्वती	१८	६५३ – ६३५

१०. स्वाती	१८	६३५ – ६१७
११. स्कंदस्वाती शतकर्णी	७	६१७ – ६१०
१२. मृगेंद्र शतकर्णी	११	६१० – ५९९
१३. कुंतल शतकर्णी	८	५९९ – ५९१
१४. सौम्य शतकर्णी	१२	५९१ – ५७९
१५. शत या सतीवर्ण शतकर्णी	१	५७९ – ५७८
१६. पुलोमान पहला	२४	५७८ – ५५४
१७. मेघ शतकर्णी	३८	५५४ – ५१६
१८. अरीष्टपर्णी शतकर्णी	२५	५१६ – ४९१
१९. हल सातवाहन	५	४९१ – ४८६
२०. मंतालका	५	४८६ – ४८१
२१. पुरीन्द्रसेन	१२	४८१ – ४६९
२२. सुंदर शतकर्णी	१	४६९
२३. चकोर और महेंद्र	१	४६८
२४. शिवसती शतकर्णी	२८	४६७ – ४३९

२५.गौतमीपुत्र शतकर्णी	२१	४३९ – ४१८
२६.पुलोमान द्वितीय	२८	४१८ – ३९०
२७. शिवश्री शतकर्णी	७	३९० – ३८३
२८.शिवसक अंद शतकर्णी	७	३८३ – ३७६
२९.यजनश्री शतकर्णी	१९	३७६ – ३५७
३०.विजयश्री शतकर्णी	६	३५७ – ३५१
३१.चन्द्रश्री शतकर्णी	१०	३५१ – ३४१
३२.पुलोमन तृतीय	७	३४१ – ३३४

सातवाहनों के सेनापति (सेनाध्याक्ष) चंद्रगुप्त प्रथम ने ३१वें सातवाहन राजा चंद्रशनि सतकर्णी की हत्या की और उनके नाबालिग बेटे पुलोमन तृतीय के संरक्षक बने। इस प्रकार, चंद्रगुप्त प्रथम ने मगध साम्राज्य पर अधिकार कर लिया, बाद में नाबालिग राजा पुलोमन तृतीय को मार डाला और ३३४ ईसा पूर्व में गुप्त वंश के शासन की स्थापना की।



## युनिट ७ : गुप्त राजवंश (३३४-८९ ईसा पूर्व)

---

यह सर्वविदित है कि गुप्तों के उदय ने सातवाहनों के शासन को समाप्त कर दिया। श्रीगुप्त और उनके पुत्र घटोत्कच गुप्त, गुप्त वंश के प्रारंभिक राजा थे, लेकिन वे सातवाहनों के अधिकारी या सामंत थे। घटोत्कच गुप्त के पुत्र चंद्रगुप्त प्रथम, गुप्त साम्राज्य के संस्थापक और मगध साम्राज्य पर कब्जा करने वाले थे। कुछ इतिहासकारों ने अनुमान लगाया कि श्रीगुप्त और घटोत्कच गुप्त इंडो-स्कायथियन राजाओं के सामंत हो सकते हैं लेकिन इस तर्क का समर्थन करने के लिए कोई सबूत नहीं है।

चंद्रगुप्त प्रथम ने नेपाल के राजा की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया, जो लिच्छवी वंश की थी। सातवाहन राजा चंद्रश्री शतकर्णी की पत्नी कुमारदेवी की बड़ी बहन थीं (लिच्छवीयं समुद्राह्य देव्याश्चन्द्रश्रीयोनुजाम)। लिच्छवियों के समर्थन से और उनके महत्वपूर्ण परिवार के सदस्यों में से एक (राष्ट्रीयश्यालको भूतवा) होने के कारण, चंद्रगुप्त प्रथम न केवल सातवाहनों के सेनापती (सेनाध्यक्ष) बने बल्कि मगध साम्राज्य को भी नियंत्रित किया। अपनी रानी कुमारदेवी की बहन (राजपत्न्या च कोधितः) के समर्थन से, उन्होंने सातवाहन राजा चंद्रश्री शतकर्णी (३५१-३४१ ईसा पूर्व) को अपने नाबालिग पुत्र पुलोमन तृतीय (३४१-३३४ ईसा पूर्व) के संरक्षक के रूप में कार्य करने के बहाने मार डाला। इस प्रकार, चंद्रगुप्त प्रथम ने मगध साम्राज्य पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया। बाद में, उसने ३३४ ईसा पूर्व में नाबालिग राजा पुलोमन को भी मार डाला और मगध में गुप्तों के साम्राज्य की स्थापना की। चंद्रगुप्त प्रथम ने खुद को पाटलिपुत्र में महाराजाधिराज के रूप में अभिषिक्त किया और ३३४ ईसा पूर्व में एक युग की स्थापना की, जिसे गुप्तकाल इस नाम से जाना जाता है; जिसका प्रयोग पूर्वी, मध्य और पश्चिमी भारत में किया जाता था।

### ७.१ गुप्त वंश का उदय

चंद्रगुप्त प्रथम (३३४-३३० ईसा पूर्व): कलियुग राज वृत्तांत के अनुसार, चंद्रगुप्त प्रथम ने सातवाहन राजा चंद्रश्री शतकर्णी और उनके नाबालिग बेटे पुलोमन तृतीय को मार डाला और खुद को मगध का सम्राट घोषित कर दिया। उन्होंने ३३४ ईसा पूर्व में गुप्त युग की स्थापना की और केवल चार वर्षों तक शासन किया। यह लगता है कि चंद्रगुप्त प्रथम ने ३४१ ईसा पूर्व में सातवाहन राजा चंद्रश्री शतकर्णी और ३३४ ईसा

पूर्व में पुल्लमन तृतीय को हराया और पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठा और गुप्त युग की स्थापना की। उनका राज शीर्षक "विजयादित्य" था।

---

*"चंद्रस्रियं घाटयित्वा मिसेन ऐव हि केनचित्।*

*तत्पुत्रप्रतिभूतित्वाम सा राज्ये चैव नियोजितः॥ .....*

*तत्पुत्रम च पुलोमानम विनिहत्य नेपरभकम*

*विजयादित्यनम्र तु सप्त पालयिता समः*

*सवानाम्ना च सकाम तवेकम स्थापयिष्यति भूतले॥"*

---

### **समुद्रगुप्त (३३०-२७९ ईसा पूर्व) :**

चंद्रगुप्त प्रथम ने अपने पुत्र कच को गुप्त साम्राज्य के युवराज के रूप में चुना लेकिन लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी द्वारा उनके सबसे बड़े पुत्र समुद्रगुप्त ने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर दिया। अंततः समुद्रगुप्त को अपने पिता और सौतेले भाई कच को मारना पड़ा और वह गुप्त साम्राज्य का महाराजाधिराज बन गया। उन्होंने ५१ वर्षों की लंबी अवधि तक शासन किया। उनका राजशीर्षक "अशोकादित्य" था। समुद्रगुप्त का नालंदा अनुदान गुप्त संवत् ५ (३३०-३२९ ईसा पूर्व) का सबसे पहला शिलालेख है। समुद्रगुप्त का गया अनुदान गुप्त संवत् ९ (३२६ - ३२५ ईसा पूर्व) में दिनांकित है। नालंदा अनुदान के अनुसार गुप्त संवत् ५ में समुद्रगुप्त का शासन था, अर्थात् तब तक चंद्रगुप्त प्रथम की मृत्यु हो चुकी थी।

पुराण हमें बताते हैं कि चंद्रगुप्त प्रथम ने सात वर्षों तक शासन किया। इसलिए, यह माना जा सकता है कि चंद्रगुप्त प्रथम ने अपने तीसरे शासन वर्ष के अंत में गुप्त युग की स्थापना की थी। आश्चर्यजनक रूप से प्रख्यात इतिहासकारों ने मनमाने ढंग से मान लिया कि चंद्रगुप्त प्रथम ने विपरीत पुरालेख और साहित्यिक साक्ष्यों के बावजूद लगभग १६ से २० वर्षों तक शासन किया। जे.एफ. फ्लीट ने भाषा में मामूली व्याकरण

संबंधी गलतियों के कारण नालंदा और गया अनुदानों को नकली घोषित किया। उन्होंने यह भी देखा कि इन शिलालेखों के कुछ पात्र प्राचीन थे और कुछ तुलनात्मक रूप से आधुनिक थे। ऐसे कई शिलालेख हैं, जिनमें मामूली व्याकरण संबंधी गलतियाँ हैं और इसलिए, उनकी वास्तविकता का मूल्यांकन करने का आधार नहीं हो सकता है।

फ्लीट का पुरालेखन, जो विकृत कालक्रम पर आधारित है, पुरालेखों की तारीखों को तय करने के लिए मानदंड के योग्य नहीं हो सकता। जे.एफ. फ्लीट और उनके अनुयायियों ने इस विचार को गढ़ा कि उनके विकृत कालक्रम को सही ठहराने के लिए कुछ जाली ताम्रपत्र शिलालेख थे।

फ्लीट ने कुछ शिलालेखों को अस्वीकार करने के लिए चुनिंदा रूप से इस विचार का उपयोग किया, जो उनके विकृत कालक्रम के अनुरूप नहीं थे। जानबूझकर, पश्चिमी इतिहासकारों ने अपने नापाक मंसूबों के अनुरूप जाली ताम्रपत्र शिलालेखों के अस्तित्व के मिथक का प्रचार किया। मैं इतिहासकारों को जाली ताम्रपत्र शिलालेखों के अस्तित्व के मिथक को साबित करने के लिए फ्लीट के विकृत पुरालेख के अलावा कुछ विश्वसनीय सबूत पेश करने की चुनौती देता हूँ।

समुद्रगुप्त सबसे महत्वाकांक्षी राजा और गुप्तों में सबसे महान योद्धा थे, इस प्रकार उन्हें उस समय भारत का सबसे शक्तिशाली सम्राट बना दिया। महान कवि हरिसेन द्वारा रचित इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख के अनुसार, समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के ग्यारह राजाओं को हराया, यानी, कोशल के राजा महेंद्र, कांची के पल्लव राजा विष्णुगोप, वेंगी के सलंकायन राजा हस्तिवर्मन आदि सहित दक्षिण भारत के नौ राजाओं और आर्यावर्त तथा, मध्य और उत्तरी भारत को हराया। यह भी दर्ज किया गया है कि शाही-शाहानुशाही के देवपुत्रों, उत्तरी शक क्षत्रपों, मुरुंडों और अफगानिस्तान के यवनों ने भी उनके वर्चस्व को स्वीकार किया था। समताता, दावक, कामरूप (आसाम) और नेपाल जैसे पूर्वी राज्य भी उसके सहायक प्रांत बन गए।

इस प्रकार, समुद्रगुप्त ने गुप्त साम्राज्य का अधिकार पूर्वी, दक्षिणी (कांची तक) और मध्य भारत में और देवपुत्र शाही-शाहानुसाहिस, शक, मुरुंडस और सिंहल (श्रीलंका) के पश्चिमी सीमांत प्रांतों में भी स्थापित किया।

## ७.२ समुद्रगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य

समुद्रगुप्त गुप्त वंश का सबसे महान राजा था जिसका अधिकार दक्षिण में कांची से लेकर उत्तर में हिमालय तक और पूर्व में कामरूप (आसाम) और पूरे बंगाल से लेकर पश्चिम में यमुना और चंबल तक था। उसने अपने वर्चस्व की घोषणा करने के लिए अश्वमेध अनुष्ठान भी किया। समुद्रगुप्त के दो पुत्र थे, जिनके नाम रामगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय थे।

### रामगुप्त (279-278 ई.पू.) :

विदिशा के तीन शिलालेख उल्लेख करते हैं कि रामगुप्त अपने पिता समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी बने लेकिन वह बहुत समय तक शासन नहीं कर पाये। रामचंद्र गुणचंद्र का 'नाट्यदर्पण' हमें बताता है कि रामगुप्त समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी थे। विशाखादत्त द्वारा लिखित एक संस्कृत नाटक देवीचंद्रगुप्तम के अनुसार, रामगुप्त को युद्ध के दौरान एक शक शासक ने घेर लिया था। रामगुप्त को अपनी रानी ध्रुवदेवी का समर्पण करने के लिए सहमत होना पड़ा लेकिन उनके भाई चंद्रगुप्त द्वितीय इस अपमानजनक समझौते को बर्दाश्त नहीं कर सके। उसने शक राजा को मारने के लिए रानी के भेष में उनके शिविर में जाने का फैसला किया। वह अपनी योजना में सफल हुआ और अपने भाई रामगुप्त को मुक्त कर दिया लेकिन रामगुप्त की प्रतिष्ठा को बहुत नुकसान हुआ। अंततः चंद्रगुप्त द्वितीयने अपने भाई रामगुप्त की हत्या कर दी और गुप्त साम्राज्य का राजा बना। उन्होंने रामगुप्त की पत्नी ध्रुवदेवी से भी विवाह किया था। बाणभट्ट के हर्षचरितम में यह भी उल्लेख है कि चंद्रगुप्त ने महिला की आड़ में शक राजा को दुश्मन की राजधानी में मार डाला था।

प्रतीत होता है, "देवीचन्द्रगुप्तम" के लेखक, विशाखदत्त, राजा चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन थे। विशाखदत्त सामंत वत्सेवरदत्त के पोते और महाराजा भास्करदत्त या पृथु के पुत्र थे। कवि माघ (२० ईसा पूर्व ६०ईसा पूर्व ) ने अपनी कृति शिशुपाल वध में मुद्राराक्षसम् से एक वाक्यांश का पुनरुत्पादन किया। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षसम् के अंत में शासक राजा "दंतीवर्मा" का उल्लेख किया है। कई पांडुलिपियों में दंतीवर्मा का उल्लेख है, लेकिन १८ वीं शताब्दी के धुंडीराजा, मुद्राराक्षसम् के एक बाद के टीकाकार, ने

राजा का उल्लेख किया: चंद्रगुप्त द्वितीय के रूप में। ऐसा प्रतीत होता है कि दंतिवर्मा कुछ पांडुलिपियों में "रंतिवर्मा" और "अवंतिवर्मा" के रूप में नाम विकृत हो गया।

कुछ इतिहासकारों ने दंतीवर्मा के पल्लव राजा होने का अनुमान लगाया है। लेकिन दन्तिवर्मा की यह पहचान असम्भव है। कुछ लोगो ने कहा दंतिवर्मा का दंतिदुर्ग (७८-९३ ईसा पूर्व) होगा लेकिन यह कालानुक्रमिक रूप से असंभव है। यदि वर्णित राजा दंतिवर्मा था तो वह एक प्राचीन राष्ट्रकूट राजा था जैसा कि वेरूल (एलोरा) के दशावतार गुफा शिलालेख में दर्ज है। दंतीदुर्गा दंतिवर्मा की छठी संतान थी। सभी संभावनाओं में, दंतिवर्मा ने पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शासन किया था।

### चंद्रगुप्त द्वितीय (278-242 ईसा पूर्व) :

चंद्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त और दत्तादेवी के पुत्र थे। उनका प्रतिगामी नाम विक्रमादित्य था। कलियुग राज वृत्तांत के अनुसार, चंद्रगुप्त द्वितीय ने ३६ वर्षों तक शासन किया, जो गुप्त संवत् ६१ (२७३ ईसा पूर्व) और ९३ (२४१ ईसा पूर्व) के बीच उनके शिलालेखों के अनुरूप है। संभवतः, चंद्रगुप्त द्वितीय का मथुरा शिलालेख उनके ५ वें शासनकाल और गुप्त संवत् ६१ में दिनांकित था। उन्होंने पश्चिमी शक क्षत्रपों को हराया और अरब सागर में आगे बढ़े और सौराष्ट्र या काठियावाड के प्रायद्वीप को अपने अधीन कर लिया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने धृवदेवी से विवाह किया, और नाग कुटुंब के कुवेरनागासे भी विवाह किया। कुमारगुप्त प्रथम का जन्म ध्रुवदेवी से हुआ था जबकि बेटी प्रभावती गुप्ता का जन्म कुवेरनाग से हुआ था। प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से हुआ था। प्रभावती गुप्त के पुत्र वाकाटक राजा प्रवरसेन द्वितीय ने अपने नाना चंद्रगुप्त द्वितीय को देवगुप्त कहा। महरौली लौह स्तंभ शिलालेख में वर्णित राजा चंद्र को आम तौर पर चंद्रगुप्त द्वितीय के रूप में पहचाना जाता है, जिन्होंने "सिंधु नदी के सात मुख" पार करने के बाद बह्लिकों पर विजय प्राप्त की थी। शोध के अनुसार, महरौली शिलालेख के राजा चंद्र चंद्रगुप्त द्वितीय नहीं हो सकते हैं क्योंकि इस बात का कोई समर्थन प्रमाण नहीं है कि उन्होंने कभी सिंधु नदी पार करने वाले बह्लिक राजाओं पर विजय प्राप्त की थी। प्रतीत होता है कि राजा चंद्रा नागवंश के शासक थे और १०वीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में हुए थे।

### कुमारगुप्त प्रथम (२४१-१९९ ईसा पूर्व) :

कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय और ध्रुवदेवी के पुत्र थे। उनका प्रतिगामी नाम "महेंद्रादित्य" था। कलियुग राज वृत्तांत के अनुसार, कुमारगुप्त प्रथम ने ४२ वर्षों तक शासन किया, जो गुप्त संवत् ९६ (२३८ ईसा पूर्व) और १२९ (२०५ ईसा पूर्व) के बीच के उनके शिलालेखों के अनुरूप है। उनके चांदी के सिक्के उनकी अंतिम तिथि गुप्त संवत् १३६ (१९८ ईसा पूर्व) के रूप में देते हैं। उसके दो पुत्र पुरुगुप्त और स्कंदगुप्त हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि कुमारगुप्त प्रथम का एक गोविंदगुप्त नाम का छोटा भाई था। राजा प्रभाकर के एक मंदसौर शिलालेख के अनुसार, चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र गोविंदगुप्त मध्य भारत में मालव-गण युग (कार्तिकदि विक्रम युग) ५२४ (१९४ ईसा पूर्व) में शासन कर रहे थे।

कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान बंधुवर्मन के एक अन्य मंदसौर शिलालेख को उकेरा गया था और सूर्य के मंदिर में रखा गया था। यह शिलालेख मालव-गण युग ४९३ में दिनांकित है। जे.एफ.फ्लीत ने मान लिया कि मालवा-गण युग और चैत्रादी विक्रम युग (५७ ईसा पूर्व) ५७ ईसा पूर्व में एक ही युग थे। दरअसल, मालव-गण युग (कार्तिकादि विक्रम युग) जिसे कृत युग भी कहा जाता है, ७१९ - ७१८ ईसा पूर्व में शुरू हुआ, जिसका अर्थ है चैत्रादि विक्रम युग (५७ ईसा पूर्व) के शुरू होने से ६६२ साल पहले।

इस प्रकार, बंधुवर्मन का शिलालेख मालव-गण ४९३ (२२६- २२५ ईसा पूर्व) में दिनांकित है और शिलालेख ६ दिसंबर २२६ ईसा पूर्व में उत्कीर्ण किया गया था। दिलचस्प बात यह है कि दूसरा शिलालेख, जो ५२९ में बीता हुआ है, को बंधुवर्मन के शिलालेख के परिशिष्ट के रूप में उकेरा गया है। इस शिलालेख की रचना वत्सभट्टी ने मंदिर के जीर्णोद्धार के अवसर पर की थी। वत्सभट्टी ने उस युग का उल्लेख नहीं किया जिसमें तिथि दर्ज की गई थी या शासक राजा का नाम लेकिन वह स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि जब काफी लंबा समय बीत चुका है और कुछ अन्य राजाओं का भी निधन हो गया है, तो इस मंदिर का एक हिस्सा बिखर गया। इसलिए सूर्य के इस पूरे भवन को फिर से उदार गिल्ड द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था

*(बहुना समतितेन कालेनन्यैश्च पार्थिवैः व्याशिर्यदैकदेसो स्य भवानस्य ततो धुना)*

इतिहासकारों ने कल्पित किया है कि बिजली गिरने से मंदिर का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया क्योंकि यह बहुत असंभव है कि एक नवनिर्मित मंदिर का ३६ वर्षों के भीतर जीर्णोद्धार हो। वत्सभट्टी हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि मंदिर का एक हिस्सा काफी लंबी अवधि के बाद बिखर गया। प्रख्यात इतिहासकारों ने स्वीकार किया कि वत्सभट्टी का शिलालेख चैत्रादि विक्रम संवत् ५२९ (४७२ ईसा पूर्व) में दिनांकित है। दरअसल, वत्सभट्टी का बयान स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है कि काफी लंबा समय बीत जाने के बाद बंधुवर्मन और कुमारगुप्त प्रथम के बाद कुछ अन्य राजाओं का भी निधन हो गया।

बंधुवर्मन विश्ववर्मन के पुत्र थे। विश्ववर्मन का सबसे पहला शिलालेख मालव-गण ४८० में दिनांकित है। बंधुवर्मन ने मालवगण ४९२ के आसपास दासपूर (मंडसोर) के शासक के रूप में सिंहासन पर बैठे होंगे। कुमारगुप्त द्वितीय गुप्त संवत् १३६ (मालवगण ५१९) तक शासन कर रहा था। निस्संदेह, स्कंदगुप्त मालव-गण ५२९ में शासक था।

इसलिए, बंधुवर्मन और कुमारगुप्त द्वितीय की मृत्यु मालव-गण ५२९ में हो सकती है, लेकिन यह वत्सभट्टी के बयान को सही नहीं ठहराता है। दरअसल, मालव-गण ४९३ से ५२९ के बीच ३६ वर्षों का अंतर है, जिसका अर्थ है कि वत्सभट्टी का जन्म बंधुवर्मन के शासनकाल में हुआ था। यदि ऐसा है, तो यह कहना अतार्किक है कि काफी लंबा समय बीत गया और कुछ अन्य राजाओं का भी निधन हो गया। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वत्सभट्टी ने मालवगण युग का उल्लेख नहीं किया। संभवतः, वत्सभट्टी ने शक युग (५८३ ईसा पूर्व) को संदर्भित किया। इसलिए, वत्सभट्टी के शिलालेख को फाल्गुन (तपस्या) महीने के उज्ज्वल पखवाड़े के दूसरे दिन शक ५२९ (११ फरवरी ५३ ईसा पूर्व) में उत्कीर्ण किया गया था, जबकि बंधुवर्मन के शिलालेख को पुष्य (सहस्य) महीने के शुक्ल पक्ष के १३ वें दिन उत्कीर्ण किया गया था। मालवा-गण ४९३ बीता (६ दिसंबर २२६ ईसा पूर्व)। इस प्रकार, मालव-गण ४९३ से शक ५२९ के बीच १७१ वर्षों का अंतर था, जो वत्सभट्टी के कथन को पूरी तरह से सही ठहराता है।

इसके अलावा, वत्सभट्टी के काव्य से संकेत मिलता है कि वह न केवल "मेघदूतम्" से बल्कि कालिदास के ऋतुसंहारम् से भी परिचित थे। वत्सभट्टी पर कालिदास के प्रभाव को इंडोलॉजिस्ट अच्छी

तरह से जानते हैं, कालिदास उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के दरबार में थे और उनका जीवनकाल १०१ ईसा पूर्व से २५ ईसा पूर्व के बीच तय किया जा सकता है। अतः वत्सभट्टी कालिदास के समकालीन थे।

### **स्कंदगुप्त (१९९-१७७ ईसा पूर्व) :**

स्कंदगुप्त कुमारगुप्त प्रथम का पुत्र था। उसका शाही नाम पराक्रमादित्य था। ऐसा प्रतीत होता है कि स्कंदगुप्त ने स्वयं हूणों के खिलाफ सेना का नेतृत्व किया और अपने पिता कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान उन्हें हराया, जैसा कि उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में पाए गए भिटारी शिलालेख में दर्ज है। कलियुग राज वृत्तान्त के अनुसार, स्कंदगुप्त ने २५ वर्षों तक शासन किया। कुमारगुप्त द्वितीय और बुद्धगुप्त के सारनाथ शिलालेख गुप्त संवत् १५४ (१८० ईसा पूर्व) और १५७ (१७७ ईसा पूर्व) क्रमशः लेकिन बुद्धगुप्त का उल्लेख केवल गुप्त संवत् १५९ (१७५ ईसा पूर्व) में "महाराजाधिराज" के रूप में किया गया था।

स्कंदगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख के अनुसार, तटबंध गुप्त संवत् १३६ (१९८ ईसा पूर्व) में लगातार बारिश के कारण सौराष्ट्र में सुदर्शन झील फट गई। शक ७२ (५११ ईसा पूर्व) में पश्चिमी शक क्षत्रप रुद्रदामन प्रथम के शासनकाल के दौरान का काल इसकी प्रमुख मरम्मत कार्यों में चला गया। सौराष्ट्र में स्कंदगुप्त के गवर्नर, पर्णदत्त के पुत्र, चक्रपालित ने सुदर्शन झील की मरम्मत का कार्य किया और गुप्त संवत् १३७ (१९७ ईसा पूर्व) तक इसे पूरा किया।

### **७.३ गुप्त साम्राज्य का पतन**

स्कंदगुप्त की मृत्यु के बाद गुप्त साम्राज्य का शासन शुरू हुआ। स्कंदगुप्त का अपना कोई उत्तराधिकारी नहीं था और उन्होंने अपने सौतेले भाई पुरुगुप्त या स्थिरगुप्त; प्रकाशादित्य और चंद्रदेवी के पुत्र नरसिंहगुप्त बालादित्य को गोद लिया था। कलियुग राज वृत्तान्त के अनुसार, स्थिरगुप्त (पुरुगुप्त) और नरसिंहगुप्त ने १७६ ईसा पूर्व से १३६ ईसा पूर्व तक ४० वर्षों तक शासन किया।



“ततो नृसिंहगुप्तश्च बालादित्य इति श्रुतः।

पुत्रः प्रकाशदित्यस्य स्थिरगुप्तस्य भूपतेः॥

नियुक्तः स्वपितृव्येन स्कंदगुप्तेन जीवताः।

पित्रैव सकाम भविता चत्वारिंशत् समः नृपः॥”

---

पुरालेखीय साक्ष्य बताते हैं कि बुद्धगुप्त, जो शायद पुरुगुप्त और चंद्रदेवी के बड़े पुत्र थे, ने भी गुप्त संवत् १५७ (१७७ ईसा पूर्व) और १६८ (१६६ ईसा पूर्व) के बीच शासन किया था। संभवतः स्कंदगुप्त की मृत्यु के बाद बुद्धगुप्त और नरसिंहगुप्त ने अपने पिता पुरुगुप्त के मार्गदर्शन में संयुक्त रूप से गुप्त साम्राज्य पर शासन किया। कलियुग राजा वृत्तांत के अनुसार, नरसिंहगुप्त और मित्रादेवी के पुत्र कुमारगुप्त द्वितीय ने १३६ ईसा पूर्व से ९२ ईसा पूर्व तक ४४ वर्षों तक शासन किया। उसका शाही नाम ‘क्रमादित्य’ था। कुमारगुप्त द्वितीय ने मौखरि राजा ईशानवर्मन को हराया। सूर्यवर्मन (इशवर्मन के पुत्र) का हराह (बाराबंकी, यूपी) का शिलालेख कृत युग ६११ (१०७ ईसा पूर्व) में दिनांकित है।

यह ध्यान दिया जा सकता है कि कृत या मालव-गण युग ७१९ - ७१८ ईसा पूर्व में शुरू हुआ था, जबकि पश्चिमी इतिहासकारों ने गलत तरीके से इसे चैत्रादि विक्रम युग (५७ ईसा पूर्व) के रूप में पहचाना था। कुमारगुप्त द्वितीय भी हूणों के साथ नियमित संघर्ष में था।

---

“अन्यः कुमारगुप्तोपि पुत्रस्य महायशः।

क्रमादित्य इति ख्यातो हुणैर्युद्धम समाकरन॥

विजयेशानवर्मादिन भातरकेनानुसेविताः।

चतुश्चत्वारिं सदेव समः भोक्ष्यति मेदिनी॥”

---

ऐसा लगता है कि मौखरि राजा ईशानवर्मन ने १३०-१०० ईसा पूर्व के आसपास अपना राज्य स्थापित किया था। हरहा शिलालेख के श्लोक १३ में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि ईशानवर्मन ने आंध्र के राजाओं (शायद, विष्णुकुंडिन राजा इंद्र भट्टारकवर्मन) और गौड़ा को हराया था।

---

*“जित्वा-ध्याधिपतिम सहस्र-गणिता- त्रेधाक्षराद्वाराणम, व्यवहारगण नियुताति-सांख्य-  
तुरगन भंगत्वा राणे सलिकन कृत्वा चयतिमौचिता-स्थल-भुवो गौदान समुद्राश्रयण,  
अध्यासिस्ता नट-क्षितिस-चरणः सिंहासनम योजिति”*

---

हरहा शिलालेख के अनुसार, ईशानवर्मन के पुत्र सूर्यवर्मन का जन्म तब हुआ था जब उनके पिता सिंहासन पर थे, जिसका अर्थ है कि सूर्यवर्मन का जन्म १४०-१३५ ईसा पूर्व के आसपास हुआ था। ईशानवर्मन ने गिरते हुए गुप्त साम्राज्य का लाभ उठाया क्योंकि गुप्त राजा हूणों के साथ नियमित संघर्ष में थे। इस तथ्य के बावजूद कि कुमारगुप्त द्वितीय ने एक बार ईशानवर्मन को हरा दिया था, वह गुप्त साम्राज्य के क्रमिक विघटन को नहीं रोक सका।

मालव-गण युग ५८९ (१२९ ईसा पूर्व) में मालव क्षेत्र में यशोधर्मन का उदय भी पतनशील गुप्त साम्राज्य का एक अन्य उदाहरण है। कुमारगुप्त के बाद उनके पुत्र विष्णुगुप्त उनके उत्तराधिकारी बने। विष्णुगुप्त का दामोदरपूर अनुदान गुप्त संवत् २२४ (११० ईसा पूर्व) में दिनांकित है। कलियुग राज वृत्तांत के अनुसार, गुप्त साम्राज्य कुमारगुप्त द्वितीय (मगधानम महाराज्यम चित्रम भिन्नम च सर्वशः) के शासन के अंत तक पूरी तरह से विघटित हो गया।

पश्चिमी इतिहासकारों ने कहा कि बाद के गुप्त राजाओं ने आदित्यसेन के शाहपूर और अफसद पत्थर के शिलालेखों के आधार पर शाही गुप्तों को बदल दिया। इन विद्वानों को पता था कि आदित्यसेन का शाहपूर शिलालेख श्री हर्ष युग ६६ में दिनांकित था। अल बरूनी के अनुसार, श्री हर्ष युग ४५७ ईसा पूर्व में शुरू हुआ था। इस प्रकार, शाहपूर शिलालेख ३९१ ईसा पूर्व के आसपास उत्कीर्ण किया गया था और इसलिए, तथाकथित बाद के गुप्त राजा वास्तव में प्रारंभिक गुप्त राजा थे। पश्चिमी इतिहासकारों ने ६०६

इसापूर्व में श्री हर्ष युग के काल्पनिक युग को स्थापित करने के लिए अल बरूनी के बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया।

कलियुग राजा वृत्तांत के अनुसार, गुप्त वंश ने २४५ वर्षों तक शासन किया (भोक्ष्यन्ति दवे सते पंच-चत्तरीमश्च वै समाह)। अंतिम गुप्त शिलालेख (विष्णुगुप्त का दामोदरपूर अनुदान) गुप्त संवत् २२४ में दिनांकित है। जिनसेन के हरिवंश पुराण में हमें बताया गया है कि गुप्तों ने २३१ वर्षों तक शासन किया, जबकि जिनभद्र क्षमाश्रमण ने गुप्त शासन की अवधि को २५५ वर्ष बताया। इस प्रकार गुप्त शासन की २४५ वर्ष की अवधि अधिक सटीक प्रतीत होती है।

## ७.४ गुप्त वंश का कालक्रम

	कालखंड	गुप्तसंवत् (३३४ इसापूर्व)	ईसापूर्व में
श्रीगुप्त	-	-	-
घटोत्कचगुप्त	-	-	-
चंद्रगुप्त १	४ वर्ष	० – ४	३३४ – ३३०
समुद्रगुप्त	५१ वर्ष	५ – ५५	३३० – २७९
रामगुप्त	१ वर्ष	५६	२७९ – २७८
चंद्रगुप्त २	३६ वर्ष	५७ – ९३	२७७ – २४१
कुमारगुप्त १	४२ वर्ष	९४ – १३६	२४१ – १९९
स्कंदगुप्त	२३ वर्ष	१३६ – १५९	१९९ – १७६
पुरुगुप्त	-	-	-
बुधगुप्त	-	-	-
नरसिंहगुप्त बालादित्य	४० वर्ष	१५९ – १९९	१७६ – १३६
कुमारगुप्त २ और विष्णुगुप्त	४७ वर्ष	१९९ – २४५	१३६ – ८९

## युनिट ८ : वाकाटक राजवंश

---

वाकाटक राजवंश मध्य और दक्षिण भारत के सबसे महान राजवंशों में से एक था। यह राजवंश ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक विस्तारित हुआ। उनका राज्य उत्तर दिशा में विदिशा (मालव) और गुजरात से लेकर दक्षिण में तुंगभद्रा तक और पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तारित था। विष्णुवृद्ध गोत्र की विंध्यशक्ति वाकाटक वंश के संस्थापक थे। अमरावती (गुंटूर) स्तंभ शिलालेख में एक गृहपति वाकाटक का उल्लेख "गृहपतिसा वाकाटकसा" इस नाम से है। वह गृहपति अपनी पत्नियों के साथ दान करने के लिए अमरावती गया था, यह दान वाकाटक वंश के दक्षिण-भारतीय मूल को सूचित करता है। दुर्भाग्य से, वाकाटक के सभी शिलालेख केवल शासक वर्षों में ही दिनांकित हैं। वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय की रानी प्रभावती गुप्त के पूना ताम्रलेख के आधार पर वाकाटकों के कालक्रम का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। प्रभावती गुप्त यह गुप्त राजा चंद्रगुप्त द्वितीय (२७८- २४२ ईसा पूर्व) की बेटी थी। इसलिए, विंध्यशक्ति ने गुप्तों और वाकाटकों के बीच इस वैवाहिक गठबंधन से कम से कम १०० साल पहले शासन किया होगा, जिसमें उनके शासनकाल की अवधि लगभग ईसा पूर्व ३८५- ३६५ थी।

विंध्यशक्ति के पुत्र प्रवरसेन प्रथम उनके उत्तराधिकारी बने और सातवाहन साम्राज्य के पतन का लाभ उठाते हुए वाकाटक साम्राज्य को उन्होंने संघटित किया। पुराणों के अनुसार, प्रवरसेन प्रथम ने ६० वर्षों (३६५ -३०५ ईसा पूर्व) तक शासन किया।

*विन्ध्यशक्तिसुतश्चापि प्रविरो नमः वीर्यवान्। भोक्ष्यते च समषष्टि पुरीं कञ्चनका च वलि।*

दिलचस्प बात यह है कि प्रवरसेन प्रथम के सिक्के वाकाटक साम्राज्य में नहीं तो केवल मथुरा क्षेत्र में पाए गए थे। विदर्भ में पुरिका शहर वाकाटकों की सबसे पुरानी राजधानी थी। प्रवरसेन प्रथम के चार पुत्र थे लेकिन केवल गौतमीपुत्र और सर्वसेन, ही हमें ज्ञात हैं। गौतमीपुत्र के पुत्र रुद्रसेन प्रथम अपने दादा

प्रवरसेन प्रथम के उत्तराधिकारी बने और सर्वसेन ने राजा बनने के बाद वाकाटकों की वत्सगुल्मा (वाशिम) शाखा की स्थापना की।

शिलालेखों में दी गई वाकाटक वंशावली के अनुसार, भारशिव वंश के राजा भावनाग; जो ग्वालियर के पास पद्मावती पर शासन कर रहे थे; वह रुद्रसेन प्रथम के नाना थे। राजा भावनाग के उत्तराधिकारी नागसेन थे, जिन्हें समुद्रगुप्त ने पराजित किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि रुद्रसेन प्रथम ने अपने तीन चाचाओं के होते हुये भी अपने नाना की मदद से वाकाटक उत्तराधिकार संघर्ष में अपना अधिकार स्थापित किया। इस प्रकार, रुद्रसेन प्रथम वाकाटकों की मुख्य शाखा का उत्तराधिकारी बने और उन्होंने २५ वर्षों (३०५ – २८० ईसा पूर्व) तक शासन किया। रुद्रसेन प्रथम के उत्तराधिकारी उनके पुत्र पृथ्वीसेन प्रथम थे। चंद्रगुप्त द्वितीय पश्चिमी शक क्षत्रपों के साथ नियमित संघर्ष में लगा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय को सौराष्ट्र पर विजय प्राप्त करने के लिये पृथ्वीसेन प्रथम का समर्थन था। इस प्रकार, वाकाटक गुप्तों के सहयोगी बन गए और चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी बेटी प्रभावतीगुप्ता का विवाह वाकाटक युवराज रुद्रसेन द्वितीय से इसापूर्व २६५ में किया। पृथ्वीसेन प्रथम ने लगभग ३० वर्षों (२८०–२५० ईसा पूर्व) तक शासन किया। उनके पुत्र रुद्रसेन द्वितीय सिंहासन पर विराजमान हुये लेकिन दुर्भाग्य से पांच वर्ष (२५०-२४५ ईसा पूर्व) शासन करने के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

रुद्रसेन द्वितीय का मंथल अनुदान उनके ५ वें शासन वर्ष में दिनांकित है। रुद्रसेन द्वितीय के तीन पुत्र थे, दिवाकरसेन, दामोदरसेन और प्रवरसेन द्वितीय। अपने पति की मृत्यु के बाद प्रभावतीगुप्ता ने अपने पुत्र युवराज दिवाकरसेन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। यह संभावना है कि वाकाटक साम्राज्य को प्रभावी तरह से संचालित करने के लिए प्रभावतीगुप्ता को अपने पिता चंद्रगुप्त द्वितीय और भाई कुमारगुप्त प्रथम का पुरा समर्थन प्राप्त था। प्रभावतीगुप्ता का पूना ताम्रलेख उनके १३वें शासन वर्ष का है। दिवाकरसेन की मृत्यु उनके १३वें शासन वर्ष के तुरंत बाद हो गई थी और प्रभावतीगुप्ता कुछ और वर्षों तक अपने छोटे बेटे दामोदरसेन के लिए शासन करती रही। इस प्रकार, उन्होंने १५ वर्षों (२४५ – २३० ईसा पूर्व) तक शासन किया। संभवतः, दामोदरसेन के शासन की अवधि २३० ईसा पूर्व और २१० ईसा पूर्व के बीच थी। इसके बाद प्रभावतीगुप्ता का सबसे छोटा पुत्र, प्रवरसेन द्वितीय २१० ईसा पूर्व के आसपास सिंहासन पर विराजमान

हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवरसेन द्वितीय के परदादा रुद्रसेन प्रथम या दादा पृथ्वीसेन प्रथम ने वाकाटक की राजधानी को पुरिका से रामगिरि या रामटेक, नागपुर के पास नंदीवर्धन (नगरधन) में स्थानांतरित कर दिया होगा।

कालिदास के मेघदूतम् में भी रामगिरि (रामगिर्याश्रमेषु) का उल्लेख है। प्रभावतीगुप्त के पूना ताम्रलेख नंदीवर्धन से जारी किये गये थे। प्रवरसेन द्वितीय ने अपने १८वें शासन वर्ष से पहले अपनी राजधानी को नंदीवर्धन से प्रवरपुर (संभवतः वर्धा जिले में पावनार) स्थानांतरित कर दिया था। प्रवरसेन द्वितीय का छम्मक अनुदान उन्होंने १८ वें शासन वर्ष में प्रवरपुरा से जारी किया था। अब तक खोजे गए प्रवरसेन द्वितीय के १६ से अधिक ताम्रपत्र अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि प्रवरसेन द्वितीय का शासन सामान्यतः शांतिपूर्ण और समृद्ध था। निस्संदेह, प्रवरसेन द्वितीय ने कम से कम ३० वर्षों (२१०- १८० ईसा पूर्व) तक शासन किया। प्रवरसेन द्वितीय का पांडुर्ना अनुदान उनके २९ वें शासन वर्ष में जारी किया गया था। उन्होंने अपने बेटे नरेंद्रसेन का विवाह कुंतल राजा [वही शायद कदम्ब राजा सिंहवर्मन द्वितीय (२०५ -१८२ ईसा पूर्व) था ] की बेटी अजिताभट्टारिका से करवाया था।

दिलचस्प बात यह है कि प्रवरसेन द्वितीय के १९वें शासन वर्ष (२०१ ईसा पूर्व) में दिनांकित रिद्धपूर ताम्रलेख प्रभावतीगुप्त को "सग्र-वर्षशत-जीव-पुत्र- पौत्र" के रूप में वर्णित करता है, जो हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि प्रभावतीगुप्ता अपने पुत्रों और पौत्रों के बीच उम्र के १०१ वें वर्ष में थीं। यह स्पष्ट है कि रिद्धपूर ताम्रलेख प्रभावतीगुप्त के १०० वें जन्म वर्ष के पूरा होने के अवसर पर जारी की गई थीं। डॉ. आर. सी. मजूमदार ने सही तर्क दिया था कि प्रवरसेन द्वितीय के १९ वें शासनकाल के समय तक प्रभावतीगुप्ता पहले से ही १०० वर्ष से अधिक की थी, लेकिन डॉ. वा. वि.मिराशी ने इस तथ्य को तोड़-मरोड़ कर पेश किया कि यह अभिव्यक्ति उनके पुत्रों और पौत्रों के लिए लंबे आशीर्वाद को संदर्भित करती है। निस्संदेह, अभिव्यक्ति "सग्र- वर्षशत-जीव-पुत्र-पौत्र श्री महादेवी प्रभावतिगुप्त" हमें बताती है कि वे १०० से अधिक वर्षों तक जीवित रहीं। इसलिए, प्रभावतीगुप्त का जन्म २९१ ईसा पूर्व के आसपास हुआ होगा और रुद्रसेन द्वितीय से २६५ ईसा पूर्व के आसपास विवाह हुआ होगा। डॉ. मिराशी ने "वाकाटकनाम महाराज- दामोदरसेन प्रवरसेन जननी" इस का अर्थ बदल दिया और तर्क दिया कि दामोदरसेन और प्रवरसेन द्वितीय समान थे और

दामोदरसेन ने राज्याभिषेक के समय प्रवरसेन द्वितीय यह नाम ग्रहण किया लेकिन इस बात का मिराशी महोदय कोई सबूत नहीं दे सके।

डॉ. वा. वि. मिराशी और अन्य इतिहासकारों ने इन तथ्यों को अर्थ बदल कर स्थापित किया है कि कालिदास प्रवरसेन द्वितीय के राज्याभिषेक के प्रारंभिक वर्षों के दौरान जीवित थे। प्रवरसेन द्वितीय भी एक विद्वान व्यक्ति थे। उन्होंने प्राकृत भाषा में “सेतुबंध” यह राम की महिमा का काव्य लिखा। उन्होंने कई प्राकृत गाथाओं की भी रचना की, जिन्हें गाथासप्तशती में शामिल किया गया है। सेतुबंध के भाष्यकार रामदास के अनुसार, उसी काव्य को राजा विक्रमादित्य ( महाराजधिराज विक्रमादित्येनज्ञानप्तो निखिल-कवि-चक्र-चूडामणिः कालिदास-महाशयः सेतुबन्ध-प्रबन्धं सिकिर्शूर.....) के आदेश का पालन करते हुए कालिदास द्वारा संस्कृत में संशोधित करके फिर से रचा गया था। भारतीय इतिहासकारों ने पश्चिमी इतिहासकारों के मनगढ़ंत सिद्धांत पर आंख मूंदकर विश्वास किया कि चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य थे और कालिदास उनके दरबार में थे।

चूँकि प्रभावतीगुप्ता ने अपने सबसे छोटे बेटे के १९ वें वर्ष में १०० वर्ष की आयु प्राप्त की थी, जब प्रवरसेन द्वितीय सिंहासन पर विराजमान थे, तब उनकी आयु ८१ वर्ष होनी चाहिए थी, लेकिन निस्संदेह, चंद्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु प्रवरसेन द्वितीय सिंहासन पर विराजमान होने से कम से कम कुछ वर्ष पहले हुई होगी। कालिदास, जिन्होंने खुद को “नृपसखा” कहा, जिसका अर्थ है विक्रमादित्य के समान आयु वर्ग के मित्र, इस बात को समझते हुये कालिदास की भी तब तक मृत्यु हुई होगी। इसलिए, चंद्रगुप्त द्वितीय के लिए कालिदास को प्रवरसेन द्वितीय के काम को फिर से लिखने का आदेश देना असंभव होता। भारतीय साहित्यिक स्रोतों से यह सर्वविदित है कि कालिदास उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के दरबार में थे, न कि पाटलिपुत्र राजा चंद्रगुप्त द्वितीय के और पहली शताब्दी ईसा पूर्व में थे। चंद्रगुप्त द्वितीय ने लगभग २७७-२४१ ईसा पूर्व शासन किया और प्रवरसेन द्वितीय ने लगभग २१० – १८० ईसा पूर्व शासन किया। कालिदास १०१- २५ ईसा पूर्व के आसपास रहे। इसलिए, प्रवरसेन द्वितीय ने कालिदास के जन्म से कम से कम १०० साल पहले “सेतुबंध” लिखा था। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान विद्वानों के बीच सेतुबंध बहुत लोकप्रिय हुआ। सेतुबंध की लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए, उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने ईसा पूर्व पहली

शताब्दी में कालिदास से इसे संस्कृत में फिर से लिखने का अनुरोध किया होगा। दिलचस्प बात यह है कि कुछ भ्रष्ट विद्वानों ने प्रवरसेन द्वितीय के सेतुबंध के लेखक होने पर भी इस आधार पर संदेह जताया कि काव्य का विषय वैष्णव है, राजा शिव का भक्त था। चूंकि राम स्वयं शिव के भक्त थे, इसलिए यह हास्यास्पद तर्क मान्य नहीं है।

प्रवरसेन द्वितीय के पुत्र नरेंद्रसेन उनके उत्तराधिकारी बने। उन्होंने, शायद, २० वर्षों (१८०-१६० ईसा पूर्व) तक शासन किया, लेकिन अपने शुरुआती वर्षों में नल राजा भवदत्तवर्मन के आक्रमण का सामना किया। दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) में नल वंश का शासन था। नरेंद्रसेन ने नंदीवर्धन तक अपना राज्य खो दिया। ऐसा लगता है कि उन्हें अपनी राजधानी को प्रवरपुरा से पद्मपुरा (महाराष्ट्र के भंडारा जिले में) स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया गया था। पद्मपुरा प्रसिद्ध संस्कृत कवि भवभूति के पूर्वजों का भी शहर था। बालाघाट ताम्रलेखों में वर्णन किया है कि भवदत्तवर्मन की मृत्यु के बाद, नरेंद्रसेन ने न केवल अपने राज्य को पुनः प्राप्त किया बल्कि कोशल, मेकला और मालवा के राजाओं को भी अपने अधीन कर लिया। अंतिम वाकाटक राजाओं के रूप में पृथ्वीसेन द्वितीय अपने पिता नरेंद्रसेन के उत्तराधिकारी बने; उन्होंने १० साल (१६० ईसा पूर्व- १५०ईसा पूर्व) तक शासन किया और उसके साथ वाकाटकों का शासन ईसा पूर्व १५० तक समाप्त हो गया।

## ८.१ वाकाटक की मुख्य शाखा का कालक्रम ईसापूर्व में

१.	विन्ध्यशक्ति	३८५ – ३६५ ईसा पूर्व
२.	प्रवरसेन प्रथम	३६५ – ३०५ ईसा पूर्व
३.	रुद्रसेन प्रथम	३०५ – २८० ईसा पूर्व
४.	पृथ्वीसेन प्रथम	२८० – २५० ईसा पूर्व
५.	रुद्रसेन द्वितीय	२५० – २४५ ईसा पूर्व
६.	प्रभावतीगुप्ता (उनके पुत्र दिवाकरसेन के प्रतिनिधी के रूप में )	२४५ – २३० ईसा पूर्व



७.	दामोदरसेन	२३० – २१० ईसा पूर्व
८.	प्रवरसेन द्वितीय	२१० – १८० ईसा पूर्व
९.	नरेंद्रसेन	१८० – १६० ईसा पूर्व
१०.	पृथ्विसेन द्वितीय	१६० – १५० ईसा पूर्व

## ८.२ वाकाटक की वत्सगुल्मा शाखा

प्रवरसेन प्रथम का पुत्र सर्वसेन वाकाटक की वत्सगुल्मा शाखा का संस्थापक था। उनकी राजधानी महाराष्ट्र के अकोला जिले में वत्सगुल्मा शहर, आधुनिक वाशीम थी। वात्स्यायन के कामसूत्र में भी वत्सगुल्मा शहर का उल्लेख है और कामसूत्र पर जयमंगल की टिप्पणी हमें बताती है कि वत्स और गुल्मा दक्षिणापथ के दो राजकुमार थे और उनके नेतृत्व वाले प्रांत को वत्सगुल्मा के नाम से जाना जाने लगा। दिलचस्प बात यह है कि गुणाढ्य ने अपने बृहत्कथा में उल्लेख किया है कि वत्स और गुल्मा उनके मामा थे। वत्सगुल्मा को शिक्षा और संस्कृति के केंद्र के रूप में जाना जाता था। बाद की अवधि की कुछ अजंता की गुफाएँ वाकाटकों की वत्सगुल्मा शाखा के शासन के दौरान बनाई गई थीं। अजंता की गुफाओं का निर्माण ८ वीं शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक हुआ था। गुफाओं का सबसे पहला समूह सातवाहनों के संरक्षण में बनाया गया था। और गुफाओं के बाद के समूह को वत्सगुल्मा शाखा के अंतिम वाकाटक राजा हरिसेना के सहायता से बनाया गया था।

सर्वसेन एक विद्वान राजा और प्राकृत काव्य "हरिविजय" के लेखक थे। उन्होंने कई प्राकृत गाथाएँ भी लिखीं, जिनमें से कुछ को गाथासप्तशती में शामिल किया गया है। सर्वसेन के पुत्र विंध्यशक्ति द्वितीय ने कम से कम ४० वर्षों तक शासन किया। विंध्यशक्ति द्वितीय की वाशिम ताम्रलेख उनके ३७ वें शासन वर्ष में जारी किये गये। ऐसा प्रतीत होता है कि विंध्यशक्ति द्वितीय के उत्तराधिकारी प्रवरसेन द्वितीय ने बहुत कम समय के लिए शासन किया होगा। अजंता की गुफा XVI के शिलालेख के अनुसार, प्रवरसेन द्वितीय का बेटा सिंहासन पर तब विराजमान हुआ जब वह सिर्फ ८ साल का था।

इसलिए उन्होंने ५० वर्षों तक शासन किया हो ऐसा हो सकता है। उनका पुत्र देवसेन २१० ईसा पूर्व तक राजा बना क्योंकि उसका हिसे-बोराला शिलालेख शक ३८० (२३० ईसा पूर्व) में दिनांकित है। यह शिलालेख स्पष्ट रूप से शक युग (५८३ ईसा पूर्व) को शक नाम ३८० के रूप में संदर्भित करता है न कि शकांत युग (७८ ईसा पूर्व) के रूप में। हरिसेना वत्सगुल्मा शाखा के वाकाटक के अंतिम राजा के रूप में अपने पिता देवसेन के उत्तराधिकारी बने।

१.	विन्ध्यशक्ति	३८५ – ३६५ ईसापूर्व
२.	प्रवरसेन प्रथम	३६५ – ३०५ ईसापूर्व
३.	सर्वसेन	३४० – ३०५ ईसापूर्व
४.	विन्ध्यशक्ति द्वितीय या विन्ध्यसेन	३०५ – २६५ ईसापूर्व
५.	प्रवरसेन द्वितीय	२६५ – २६० ईसापूर्व
६.	प्रवरसेन द्वितीय का पुत्र ( नाम अनुपलब्ध)	२६० – २१० ईसापूर्व
७.	देवसेन या देवराज	२१० – १८० ईसापूर्व
८.	हरिसेन	१८० – १५० ईसापूर्व

## युनिट ९ - कुषाण वंश

---

### ९.१ कुषाण वंश का मूल

इतिहासकारों ने अनुमान लगाया है कि कुषाण, हुआंग-हो नदी के पश्चिम में कान-सु और निंगसिया क्षेत्रों से चीन की यू-ची जनजाति की एक शाखा थे जिन्होंने बैक्ट्रिया पर विजय प्राप्त की और शकों को आधुनिक अफगानिस्तान के दक्षिण की ओर धकेल दिया। ईसापूर्व पहली शताब्दी से शुरू होने वाले कुषाणों के शासनकाल पर विचार करते हुए इतिहासकारों द्वारा यह अनुमान लंबे समय से लगाया है। कुषाण चीनी या विदेशी जनजाति की एक शाखा थे इस बात का समर्थन करने के लिए कोई साहित्यिक या पुरालेखीय सबूत उपलब्ध नहीं है। इतिहासकारों ने चीनी स्रोतों के आधार पर इस परिकल्पना का समर्थन किया है। चीनी साहित्य में वर्णित यू-ची राजा किउजियुक यह कोई और नहीं बल्कि कुषाण राजा कुजुला कदफिसेस थे यह एक इतिहासकारों द्वारा कि गयी मनगढंत कहानी है। हालांकि चीनी स्रोत बताते हैं कि यू-ची जनजाति की एक शाखा ने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में स्थानान्तरण किया और बैक्ट्रिया पर विजय प्राप्त की, लेकिन यह स्थापित करने के लिए कोई सबूत नहीं है कि यू-ची लोग कुषाणों के पूर्वज थे। इसके अलावा, कुषाण १२३०-१००० ईसा पूर्व के आसपास विकसित हुआ न की ईसापूर्व १००-३०० के आसपास। जाहिर है, कुषाणों ने चीन की यू-ची जनजाति के स्थानान्तरण से पहले बैक्ट्रिया पर शासन किया था।

वास्तव में, कुषाण कम्बोज जनपद के मूल निवासी थे। संपूर्ण भारतीय साहित्य में कुषाणों का कोई उल्लेख नहीं है। कुषाण राजाओं के पास "शाहानुशाही" का एक प्रसिद्ध शाही शीर्षक था जिसे धीरे-धीरे एक उपनाम "शाही" के रूप में विकसित किया गया। शाहानुशाही का अर्थ है महाराजाधिराज (राजाओं का राजा) और शाही का अर्थ है महाराज (राजा)। नयाचंद्र सूरी का हम्मीर महाकाव्य हमें बताता है कि कम्बोज राजकुमार महिमा शाही चौहान राजा हम्मीर देव के सेनापती थे। कनिष्क के दादा सदाक्षी ने सोम यज्ञ किया था यह उल्लेख रबातक शिलालेख में है। इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कुषाण मूल रूप से भारतीय थे और कम्बोज वंश के थे।

पूरी संभावना है कि कम्बोज ऋग्वैदिक युग के लोग थे जो काबुल नदी के तट पर बसे थे। "कुभा" काबुल नदी का वैदिक नाम था। जिनका जन्म कुभा या कुम्भा नदी के तट पर हुआ उन्हें कुभजा या कुम्भजा या कुम्भोजा कहा जाता था। "कुम्भोज" शब्द शायद काम्भज या कम्बोज में परिवर्तित हो गया होगा। कम्बोज बैक्ट्रिया के यवन राजाओं के जागीरदार बन गए होंगे। कम्बोज कतरियों की एक शाखा कुषाणों ने १३ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में अपनी संप्रभुता स्थापित की। कुषाण राजाओं के पास "शाहानुशाही" यह उपाधी थी, बाद के कुषाण राजाओं ने भी कैसर की उपाधि का उपयोग किया जिसका अर्थ फ़ारसी भाषा में सम्राट होता है। बाद में कुषाण या कम्बोज क्षत्रियों का उपनाम "शाही" या "शाह" था।

महाभारत के अनुसार, कम्बोडिया के राजा सुदक्षिणा ने कौरवों का समर्थन किया था, बैक्ट्रिया के यवनों ने भी महाभारत युद्ध (३१६२ ईसा पूर्व) में राजा सुदक्षिणा के नेतृत्व में लड़ाई लड़ी थी। दिलचस्प बात यह है कि बाइट के रबातक शिलालेख से हमें पता चलता है कि बाइट के दादा का नाम सदक्षिणा था। ऐसा प्रतीत होता है कि सुदक्षिणा या सदक्षिणा कम्बोडियन क्षत्रियों का एक लोकप्रिय नाम था। इसलिए, तथाकथित कुषाण कम्बोज की एक क्षत्रिय शाखा के थे।

वैदिक काल से ही भारतीय क्षेत्र विभिन्न जनपदों में बंटा हुआ था। प्रत्येक महाजनपद में अनेक जनपद होते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में कम्बोज और गांधार यह दो महाजनपद थे। यवन और बाह्लिका जनपद कम्बोज महाजनपद के भाग थे। सुतपिटक के मज्झिमा निकाय ने हमें सूचित किया कि बुद्ध ने अस्सलायन के साथ बातचीत में यवन देश और कम्बोज देश का उल्लेख किया।

अशोक या कालशोक (१७६५-१७३७ ईसा पूर्व), जिन्होंने बुद्ध निर्वाण (ईसा पूर्व १८६४) के १०० साल बाद शासन किया था, उन्होंने गांधार और बैक्ट्रिया के अपने समकालीन यवन राजाओं के नामों का उल्लेख किया है। यवन राजा ग्रीक भाषा और ग्रीक लिपि का प्रयोग करते थे जबकि कम्बोज और गांधार खरोष्ठी लिपि और प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे। नागार्जुन वज्रपाणि (ईसा पूर्व ~१६५०-१५५०) के समय गांधार और बैक्ट्रिया में बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी। मौर्य राजा अशोक (ईसा पूर्व १५४७-१५११) ने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए महारक्षित थेरा को यवन जनपद भेजा। इस प्रकार, ईसा पूर्व १६वीं शताब्दी के

दौरान बैक्ट्रिया और गांधार में बौद्ध धर्म हावी होने लगा और फारस और सीरिया तक फैल गया। जैसा कि अलबरूनी ने दर्ज किया है पारसी धर्म का उदय जोरास्टर द्वितीय के जीवन काल में हुआ जिसने बौद्ध धर्म के आधिपत्य को ई.पू. १३वीं सदी के प्रारम्भ में ही समाप्त कर दिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि यवन राजाओं ने ईसा पूर्व १६वीं शताब्दी के अंत तक तक्षशिला तक विजय प्राप्त कर ली थी। पुष्यमित्र ने मौर्य वंश के शासन को समाप्त कर दिया और १४५९ ईसा पूर्व के आसपास शुंग वंश की स्थापना की। पुष्यमित्र के समकालीन पतंजलि ने उल्लेख किया है कि यवनों ने साकेत (अभिनाद यवनः साकेतम्) तक आक्रमण किया था। विदिशा में हेलियोडोरस के बेसनगर शिलालेख में दर्ज है कि दीया (डायन) के पुत्र हेलियोडोरस, तक्षशिला के निवासी और एक यवन तीर्थयात्री (जो एक वैष्णव भक्त बने) ने विदिशा विष्णु मंदिर में गरुड़-ध्वज या गरुड़ स्तंभ का निर्माण किया। वह यवन राजा अम्तियालिकिता के राजदूत थे [बेसनगर शिलालेख में लिखा है:

*"देवदेवसा वा [सुदे] वास गरुड़ध्वजो अयम कारितो इ [ए] हेलियोडोरेना भगवतन दीयासा पुत्रेन तक्षशिलाकेना योनादतेन अगतेन महाराजा अम्तालिकितास उप [एम] ता संकासम रानो कासिपुट [आर] आसा [ भ जगभद्रस त्रतरस वसेन [चातु] दसेन राजेन वधमानस"]।*

बौद्ध पाठ मिलिंडा पान्हो हमें बताता है कि एक यवन राजा मिलिंडा बुद्ध निर्वाण (ईसा पूर्व १८६४) के ५०० साल बाद लगभग १३६५ ईसा पूर्व शासन कर रहा था, जिसने बौद्ध धर्म का संरक्षण किया था। यह ग्रन्थ वास्तव में यवन राजा मिलिंद और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच का संवाद है। १३०० ईसा पूर्व के बाद बैक्ट्रिया और गांधार के यवन साम्राज्य का पतन हो गया।

कुषाण गांधार और बैक्ट्रिया के क्षेत्र में इंडो-ग्रीक या यवन राजाओं के उत्तराधिकारी थे। कुजुला कडफिसेस ने १३वीं शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में कुषाणों के शासन की स्थापना की। कुषाण राजाओं ने अपने शिलालेखों और सिक्कों में बैक्ट्रियन लिपि का प्रयोग किया। बौद्ध स्रोतों से पता चलता है कि राजा कनिष्क ने बुद्ध निर्वाण (ईसा पूर्व १८६४) के ७०० साल बाद शासन किया था। जाहिर है, राजा कनिष्क राजगृह के राजा नंदराज के समकालीन थे, जो महावीर निर्वाण (ईसा पूर्व ११८९) की तारीख के ६० साल

बाद विस्तारित हुये। राजा कनिष्क ने राजा नंदराजा के शासनकाल के अंत में उज्जैन, साकेत, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र छत्तीसगढ़ और उड़ीसा तक विजय प्राप्त की। इस प्रकार हम बड़े तौर पर कनिष्क की तिथि लगभग ११५०-१११८ ईसा पूर्व निश्चित कर सकते हैं। रबातक शिलालेख हमें बताता है कि कुजुला कडफिसेस (परदादा), सदक्षिणा (दादाजी) और विम कडफिसेस (पिता) राजा कनिष्क से पहले शासन करते थे।

## ९.२ प्रारंभिक कुषाणों का कालक्रम (ई.पू.१२३०-१०००)

इतिहासकार अभी भी कुषाणों के कालक्रम की ठोस तरीके से गणना नहीं कर पाये हैं। दिलचस्प बात यह है कि कुषाणों की तिथि निर्धारित करते समय उन्हें अपने स्वयं के सिद्धांतों जैसे पुरालेख आदि से समझौता करना पड़ा। पुरालेख और मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य स्पष्ट रूप से आधुनिक पाठ्यपुस्तकों में दिए गए कुषाणों के कालक्रम में विसंगतियों का संकेत देते हैं लेकिन इतिहासकार ऐसी अस्पष्ट विसंगतियों को दूर करना पसंद करते हैं। हमें इतिहासकारों की इस स्पष्ट समस्याओं को अनदेखा करने और उनके अस्तित्व का दिखावा करने की प्रवृत्ति को दोष देना होगा जो उन्हें भारतीय इतिहास के कालक्रम में मौजूद कई अंतरालों के बावजूद कुषाणों के लिए माने जाने वाले एक बहुत ही सीमित काल से आगे देखने की अनुमति नहीं देती है। डी सी सरकार अंत में मानते हैं कि:

"पुरालेखन हमें एक बहुत ही सीमित अवधि के लिए एक सूक्ति की तारीख निर्दिष्ट करने में मदद नहीं करता क्योंकि समान वर्णमाला के मानक और किस्में आम तौर पर उसी युग और क्षेत्र में प्रचलित थीं। कुछ पुराने जमाने के लोग कुछ हद तक पुराने वर्ण लिखना पसंद करते थे जो उस काल में उतने लोकप्रिय या उपयोग में नहीं थे। यही कारण है कि कभी-कभी अक्षरों के पहले और बाद के दोनों रूप एक ही व्यक्ति के अभिलेखों में दिखाई देते हैं। इस दोष के बावजूद, एक शिलालेख को बड़े तौर पर पुरालेखीय आधार से एक निश्चित अवधि के लिए निर्दिष्ट किया जा सकता है। कुषाण राजा कनिष्क की तिथि के निर्धारण के लिए, पुरालेखीय साक्ष्य, यानी, कुषाणों और उनके समकालीनों, पूर्ववर्तियों और उत्तराधिकारियों के शिलालेखों द्वारा प्रदान किए गए आंकड़े, हमें अधिक सहायता प्रदान करते हैं। यह सूचित किया जा सकता

है कि इस कनिष्क को कनिष्क प्रथम के रूप में बेहतर रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए, उसके उत्तराधिकारियों में उस नाम का कम से कम एक अन्य शासक था।

लगभग ४८३ ईसा पूर्व बुद्ध निर्वाण की तिथि और सिकंदर (ईसा पूर्व ३२६-३२३) के समकालीन के रूप में मौर्य चंद्रगुप्त की तिथि को देखते हुए इतिहासकारों के पास ईसा पूर्व ३०० के आसपास कुषाणों के कालक्रम को समायोजित करने का कोई विकल्प नहीं बचा था।

जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, बुद्ध ने १८६४ ईसा पूर्व में निर्वाण प्राप्त किया था। इस प्रकार, बौद्ध स्रोत, पुराण और अभिलेखीय साक्ष्य निम्नलिखित कालक्रम का सुझाव देते हैं।

१. बुद्ध महापरिनिर्वाण इसापूर्व १८६४
२. सिलुनाग राजवंश (वर्ष ३६२) इसापूर्व २०२४-१६६४
३. हर्यका वंश (बिम्बिसार से कालशोक के १० पुत्रों तक) [वर्ष २१०] इसापूर्व १९२५-१७१५
४. नंद वंश इ.पू १६६४-१५९६
५. मौर्य वंश (वर्ष १३७) इसापूर्व १५९६-१४५९
६. शुंग वंश (वर्ष ११२) इसापूर्व १४५९-१३४६
७. कण्व वंश (वर्ष ४५) इसापूर्व १३४६-१३०१
८. मगध में कोई केंद्रीय सत्ता नहीं - इसापूर्व १३०१-८२६
९. सातवाहन वंश (४९२ वर्ष) ८२६-३३४ ईसा पूर्व
१०. पश्चिमी क्षत्रप (शक राजा) ५८३-२४६ ई.पू
११. गुप्त वंश (२४५ वर्ष) ३३४-८९ ई.पू

### ९.३ कुषाण साम्राज्य का पतन

कलिंग राजा खारवेल ने कुषाण राजा विम तखा को पराजित किया और उन्हें ईसा पूर्व १०२३ में मगध और कौशांबी से बाहर कर दिया। अपरांतक साम्राज्य के चंद्र राजाओं के उदय ने मथुरा के कुषाणों के लिए एक बड़ी चुनौती पेश की, राजा श्री चंद्र ने ईसा पूर्व १०१५ के आसपास मथुरा, पंजाब और जम्मू

पर विजय प्राप्त की। उसने सिंधु को भी पार किया और लगभग ईसा पूर्व १००० गांधार पर विजय प्राप्त की। राजा चन्द्र ने बाहिलकों और गांधार पर अपनी विजय की स्मृति में लौह स्तंभ (कुतुब मीनार के पास स्थित) बनवाया।

दिलचस्प बात यह है कि फ़रिश्ता ने उल्लेख किया है कि कैद राजा (राजा चंद्र) ने जम्मू के किले का निर्माण किया और खोखर जनजाति के राजा दुर्ग को राज्यपाल नियुक्त किया। यह किला राजा दुर्ग के समय से मुघलो के काल तक खोखारो के कब्जे में था। कैद राजा (राजा चंद्र) ने जय चंद्र को दिल्ली के शासक के रूप में नियुक्त किया था।

फ़रिश्ता का कहना है कि जया चंद्र के छोटे भाई राजा दिल्लू ने ४० वर्षों तक दिल्ली के क्षेत्र पर शासन किया। संभवतः, राजा दिल्लू ने लगभग ईसा पूर्व १०१०-९७० में चंद्र राजाओं के सामंत के रूप में शासन किया था। जाहिर है, दिल्ली शहर का नाम राजा दिल्लू के नाम पर रखा गया है।

राजा चंद्रगुप्त ईसापूर्व ९८४ के आसपास अपने पिता राजा चंद्र के उत्तराधिकारी बने। प्रयाग का प्रतिष्ठानपूर चंद्र राजाओं की राजधानी थी। वह सिकंदर और सेल्यूकस का समकालीन था। ग्रीक इतिहासकारों ने उन्हें "सैंड्रोकोट्टस" (Sandrokottus) और उनके पिता राजा चंद्र को "जांड्रेमस" (Xandremes) के रूप में उल्लेखित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रीक इतिहासकारों ने प्रयागभद्र या प्रतिष्ठानपूर शहर को "पोलिबोथरा" के रूप में संदर्भित किया है।

कुषाण साम्राज्य के पतन का लाभ उठाते हुए, मद्र जनपद के पुरु वंश के राजाओं ने लगभग ईसा पूर्व १००० में अपना राज्य स्थापित किया। जम्मू वंशावली के अनुसार, पुरुसेन या पूर्वा सेन मद्र देश के राजा थे और दामोदर दत्त के ७ वें वंशज जम्मू राजा अजय सिंह के समकालीन थे। राजा अजय सिंह ने मद्र राजा पूर्वा सेन की पुत्री रानी मंगलन दाई से विवाह किया। निस्संदेह, मद्र देश के राजा पूर्वासेन या पुरु सेन ग्रीक इतिहासकारों द्वारा संदर्भित "पोरस" थे। वह सिकंदर (ई.पू ९९०- ९८२.) का समकालीन था। उनकी राजधानी गोटीपानी थी जो बेहट (शायद इस्लामाबाद या रावलपिंडी) के पूर्व में स्थित थी। राजा पुरु सेन ने सिन्धु नदी के सभी प्रदेशों पर विजय प्राप्त की। उसका राज्य पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में जालंधर



और चंबा तक फैला हुआ था। प्रतीत होता है, राजा पुरु सेन ने सिकंदर को हरा दिया और ९८४ ईसा पूर्व के आसपास उसके एक सैनिक ने एक तीर चलाकर सिकंदर को घायल कर दिया। इस प्रकार, हम मद्रा राजा पुरु सेन की तिथि लगभग १०००-९५० ईसा पूर्व तय कर सकते हैं। राजा पुरु सेन ने ९७० ईसा पूर्व के आसपास राजा दिल्लू को मार डाला और दिल्ली शहर पर कब्जा कर लिया। जब मेगस्थनीज पोरस के दरबार में गये थे तब पुरु सेन (पोरस) का राज्य रावलपिंडी से दिल्ली तक और चंद्र गुप्त (सैंड्रोकोटस) का राज्य सिंध, राजस्थान और मथुरा से बंगाल तक विस्तारित कर दिया गया था। जाहिर है, उत्तर भारत में चंद्र राजाओं का उदय, मद्र क्षेत्र में पुरु राजाओं का उदय और गांधार और बैक्ट्रिया पर सिकंदर के आक्रमण के कारण ईसा पूर्व १००० तक गौरवशाली कुषाण साम्राज्य का पूर्ण पतन हो गया।

## युनिट १० : चालुक्य

---

### १०.१ बदामी के प्रारंभिक चालुक्य

वाटापी या बादामी (कर्नाटक के बागलकोट जिले में) यह प्रारंभिक चालुक्य की राजधानी थी। टॉलेमी ने बादामी का उल्लेख "बदियामायोल" के रूप में किया है जो दर्शाता है कि बदामी कुछ महत्व का स्थान था। पुलकेशिन प्रथम, वातापी में चालुक्य साम्राज्य के संस्थापक, ब्रिटिश संग्रहालय ताम्रपत्र के अनुसार, अल्ल्टेम या जयसिंहा के पोते और रणराग के पुत्र थे। ऐहोल शिलालेख भी चालुक्यों की एक समान वंशावली देता है। पुलकेशिन प्रथम ने शक ४११ (इसापूर्व १७२) से शक ४६६ तक (इसापूर्व ११७) शासन किया।

यह अल्ल्टेम या ब्रिटिश संग्रहालय ताम्रपत्र से चयनित पाठ है:

**“शक-निपाब्देशवेकदासोत्तरेषु कैटस-शतेषु व्यतितेषु विभवसंवत्सरे प्रवर्तमाने, क्रते च ये,  
वैशाखोदिता-पूर्ण-पुण्यदिवसे रहो (हौ) विधौ (विधोर) मंडलम शिल्ष्टे...”**

“शक युग में ४११ वर्ष बीत गए, विभव के ज्योवियन वर्ष में और चंद्र ग्रहण के अवसर पर, वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन और चंद्रमा विशाखा नक्षत्र में”।

ईसा पूर्व ५८३ को युग मानते हुए शक ४११ वां वर्ष अर्थात् ईसा पूर्व १७३-१७२ व्यतीत हुआ। और ईसा पूर्व १७२-१७१ वर्तमान, १९ अप्रैल का दिन ईसा पूर्व १७२ पूर्णिमा का दिन था वैशाख मास का और चंद्रमा भी विशाखा नक्षत्र में था।

बादामी में उपछाया चंद्रग्रहण १९:४४ बजे से शुरू होकर २१:३२ बजे समाप्त हुआ। यदि ७८ ई. का युग था, तो १ मई ४८९ ई. को वैशाख मास की पूर्णिमा थी, लेकिन बादामी में न तो चंद्रग्रहण देखा गया और न ही विशाखा नक्षत्र में चंद्रमा।

पुलकेशिन प्रथम को "वल्लभेश्वर" के नाम से भी जाना जाता था। उन्होंने बदामी में किले का निर्माण शक ४६५ में किया था, जैसा कि बदामी शिलालेख में वर्णित है। पुलकेशिन प्रथम को दो पुत्र हुए; कीर्तिवर्मन प्रथम और मंगलीश्वर। कीर्तिवर्मन प्रथम पुलकेशिन प्रथम के उत्तराधिकारी बने। ज्येष्ठ पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम था। चालुक्य अभिलेखों के अनुसार कीर्तिवर्मन प्रथम ने अंग, वंग, कलिंग, गंगा, मगध, मदरका, केरल, कदंब आदि के शासकों को पराजित किया। उनके छोटे भाई मंगलीश्वर शक ४८९ (ईसा पूर्व ९५) में बदामी के शासक के रूप में उनके उत्तराधिकारी बने।

मंगलीश्वर के बादामी गुफा शिलालेख से चयनित पाठ यहां दिया गया है:

---

*प्रवर्द्धमान-राज्य-संवत्सरे द्वादशे शक-नृपतिराज्याभिषेक-*

*संवत्सरेषु-अतिक्रान्तेषु पञ्चसु शतेषु महा-कार्तिक-पौर्णिमास्याम*

---

५०० वर्ष शक युग में बीत गए, शासनकाल के १२ वें वर्ष में, कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन।

ईसा पूर्व ८४-८३ का वर्ष शक ५०० का बीता हुआ वर्ष था और ईसा पूर्व ८३-८२ मंगलीश्वर का १२वां वर्ष था और ईसा पूर्व १९ अक्टूबर ८३ कार्तिक मास की पूर्णिमा थी और चंद्रमा भी कृतिका नक्षत्र में था।

मंगलीश्वर ने रेवतीद्वीप (गोवा के निकट) पर भी विजय प्राप्त की। उन्होंने अपने बेटे के लिए उत्तराधिकार को सुरक्षित करने की साजिश रची, लेकिन कीर्तिवर्मन प्रथम के बेटे सत्याश्रय-पुलकेशिन द्वितीयने विद्रोह कर दिया और मंगलीश्वर और पुलकेशिन द्वितीयके बीच युद्ध में, मंगलीश्वर ने अपना जीवन खो दिया ऐसा ऐहोल शिलालेख में कहा गया है। इस युद्ध के कारण चालुक्य साम्राज्य अत्यधिक कमजोर हो गया। पुलकेशिन द्वितीयके पास कुंतला (उत्तरी कर्नाटक) और दक्षिणापथ में चालुक्यों के अधिकार को बहाल करने की बड़ी जिम्मेदारी थी। इसलिए, उन्होंने शक ५१५ (ईसा पूर्व ६९) में अपने बड़े बेटे कोवकुलिया विक्रमादित्य को सिंहासन पर बिठाने का फैसला किया और पड़ोसी राजाओं के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए व्यक्तिगत रूप से सेना का उन्होंने नेतृत्व किया। उन्होंने कदम्बों की राजधानी "वनवासी" पर

विजय प्राप्त की। उन्होंने मैसूर, लता, मौर्य, मालव और गुर्जर के गंगों को भी हराया। जैसा कि विक्रमादित्य के कूर्तकोटि अनुदान में कहा गया है, पुलकेशिन द्वितीय ने शक ५३० (ईसा पूर्व ५३) द्वारा उत्तरपथ के राजा हर्ष को हराया था; यह पुलकेशिन द्वितीय की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। उन्होंने पल्लव राजा को भी हराया और शक ५१५ और शक ५३१ (ईसा पूर्व ६९-५३) के बीच पड़ोसी राजाओं के खिलाफ १०० से अधिक युद्ध जीते और चालुक्य साम्राज्य की मजबूत नींव रखी।

उन्हें हैदराबाद ताम्रपत्रों में "समारा-सतसंघलता-पर्णपति-पराजयोपलब्ध-परमेश्वरपर्णमधेयः" के रूप में संदर्भित किया गया था, जिसका अर्थ था कि पुलकेशिन द्वितीय ने सौ युद्धों में अन्य राजाओं को हराकर "परमेश्वर" की उपाधि प्राप्त की थी। पुलकेशिन द्वितीयने अपने बड़े बेटे कोक्कुल्ला विक्रमादित्य से शक ५३२ (ईसा पूर्व ५२) में बदामी की बागडोर संभाली और उन्हें लता क्षेत्र का सुभेदार नियुक्त किया। पुलकेशिन द्वितीय के छोटे भाई और विक्रमादित्य के चाचा बुद्धवरराज को भी कोक्कुल्ला विक्रमादित्य का समर्थन करने के लिए वहां रखा गया था। बुद्धवरसराज का संजन ग्रंथ स्पष्ट रूप से इसका संकेत देता है। यह अनुदान पौष मास की अमावस्या के दिन सूर्य ग्रहण के अवसर पर जारी किया गया था लेकिन शक वर्ष का उल्लेख नहीं है। केवल एक सूर्य ग्रहण था जो पौष अमावस्या, यानी ईसा पूर्व ५ जनवरी २८ शक ५१५ और शक ६०२ (ईसा पूर्व ६९ - ईसा पूर्व १९) के बीच हुआ था। शक ५१५ कोक्कुल्ला विक्रमादित्य का पहला शासन वर्ष था जबकि शक ६०२ विक्रमादित्य प्रथम का अंतिम शासक वर्ष था। इस प्रकार, संजन अनुदान की तिथि ५ जनवरी २८ ईसा पूर्व निश्चित रूप से तय की जा सकती है। इसका अर्थ है कि कोक्कुल्ला विक्रमादित्य शक ५५५ (२८ ईसा पूर्व) में लता क्षेत्र पर शासन कर रहे थे।

यह भी माना जा सकता है कि गुर्जर में चालुक्य शासन शक ५३२ (ईसा पूर्व ५२) द्वारा स्थापित किया गया था और कोक्कुल्ला विक्रमादित्य चालुक्यों की गुजरात शाखा का पहला शासक था। वास्तव में, वह शक ५३० में जारी किए गए कूर्तकोटि अनुदान के लेखक थे, जब वह बदामी से शासन कर रहे थे। पुलकेशिन द्वितीय के सबसे छोटे पुत्र विक्रमादित्य प्रथम ने शक ५७७ और शक ६०२ (ईसा पूर्व ६ - ईसा पूर्व १९) के बीच शासन किया। इसलिए, विक्रमादित्य प्रथम कूर्तकोटि अनुदान का प्रणेता नहीं हो सकता और इस प्रकार, यह इस प्रकार है कि विक्रमादित्य प्रथम कोक्कुल्ला विक्रमादित्य का छोटा भाई था।

जे एफ फ्लीट ने कुर्तकोटि अनुदान को नकली के रूप में खारिज कर दिया क्योंकि वह शक ५३० में कुल सूर्य ग्रहण और शक ५१५ से शक ६०२ के बीच विक्रमादित्य के शासन की व्याख्या नहीं कर सके। दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने इंडोलोजिस्ट वाल्टर इलियट और डॉ बर्नेल को कुर्तकोटि अनुदान के शक वर्ष के बारे में गुमराह करने की कोशिश की। उन्होंने तर्क दिया कि यह शक ५३२ था न कि शक ५३०। मुझे संदेह है कि जे एफ फ्लीट ने कुर्तकोटि अनुदान के शक वर्ष को जानबूझकर विकृत किया क्योंकि यह सबसे मजबूत पुरालेखीय साक्ष्य, यानी, पर्याप्त सत्यापन के साथ संपूर्ण सूर्यग्रहण का विवरण देते हैं।

पुलकेशिन द्वितीय के तीन छोटे भाई थे जिनके नाम कुब्जा विष्णुवर्धन, बुद्धवरसराज और धराश्रय जयसिंहावर्मा थे। जैसा कि ऊपर कहा गया है, बुद्धवरराज गुर्जर क्षेत्र में कोक्कुल्ला विक्रमादित्य का समर्थन कर रहे थे। पुलकेशिन द्वितीय ने कुब्जा विष्णुवर्धन को नियुक्त किया, जिन्होंने बाद में तटीय आंध्र क्षेत्र के सुभेदार के रूप में वेंगी में पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना की। ऐसा प्रतीत होता है कि पुलकेशिन द्वितीय ने भी अपने भाई धराश्रय जयसिंहावर्मा को बालग्राम (बेलगाम) के पास सुभेदार नियुक्त किया था।

धराश्रय जयसिंहावर्माराजा के पुत्र त्रिभुवनश्रय नागवर्धनराज द्वारा जारी नागवर्धन का निरपान अनुदान स्पष्ट रूप से हमें पुलकेशिन द्वितीय के भाई के बारे में बताता है। पुलकेशिन द्वितीय के कम से कम छह पुत्र थे, जिनके नाम कोक्कुल्ला विक्रमादित्य, चंद्रादित्य, रणरागवर्मा, आदित्यवर्मा, विक्रमादित्य प्रथम और धराश्रय जयसिंहावर्मा थे।

जे.एफ. फ्लीट ने निरपान अनुदान को नकली घोषित कर दिया क्योंकि पुलकेशिन द्वितीय के पुत्रों में से एक का नाम धरसराय जयसिंहावर्मा था। क्या यह तथ्य है कि एक चाचा और भतीजे का एक ही नाम असामान्य, असाधारण, आपत्तिजनक या अनिश्चित हो सकता है? जे.एफ. फ्लीट ने जानबूझकर जटिल सिद्धांतों को यह साबित करने के लिए गढ़ा कि कुछ भारतीय शिलालेख नकली या कल्पित थे ताकि अन्य इंडोलॉजिस्टों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि कुछ भारतीय शिलालेख वास्तविक नहीं थे और इसलिए, उन्हें खारिज करने की आवश्यकता है। चुनिंदा शिलालेखों को नकली के रूप में खारिज करके, जे. एफ. फ्लीट प्राचीन भारत के कालक्रम को विकृत करने में सफल रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से पहले के किसी भी भारतीय शिलालेख को जे. एफ. फ्लीट द्वारा खारिज कर दिया गया था। बी

लुईस राइस और जे.एफ. फ्लीट के बीच गंगा राजवंश के कालक्रम के बारे में विवाद जे.एफ. फ्लीट की कुटिल मानसिकता को समझने के लिए काफी है।

जैसा कि ऐहोल शिलालेख में उल्लेख किया गया है पुलकेशिन द्वितीय शक ५५७ (ईसा पूर्व २६) में शासन कर रहा था। ३४ शक ५७७ (ईसा पूर्व ६) विक्रमादित्य प्रथम का पहला शासक वर्ष था। राणी विजयभट्टारिका (विक्रमादित्य प्रथम के बड़े भाई चंद्रादित्य की पत्नी) के नेरूर अनुदान और कोचरे अनुदान तकरीबन शक ५६१ और शक ५७७ में जारी किये गये। नेरूर अनुदान विजयभट्टा के ५ वें वर्ष में अश्वयुज महीने के कृष्ण पखवाड़े की दूसरी तिथि को और "विसुवा" के अवसर पर जारी किया गया था। विसुवा या विसुवत्कला का अर्थ है सयाना मेसा संक्रांति (२१ मार्च) या सयाना तुला संक्रांति (२३ सितंबर)। इसलिए, नेरूर अनुदान सयाना तुला संक्रांति पर, अश्वयुज के कृष्ण-पक्ष द्वितीया पर केवल एक तिथि, २३ सितंबर को यानी ईसा पूर्व १८ शक ५६१ से शक ५७७ के बीच जारी किया गया था। ईसा पूर्व १८ शक ५६१ से शक ५७७ के बीच। इस प्रकार, विजयभामंका का पहला शासन वर्ष ५६२ शक (ईसा पूर्व १८ शक ५६१ से शक ५७७ के बीच २२-२१ ईसा पूर्व) था। ऐसा प्रतीत होता है कि पुलकेशिन द्वितीय शक ५६१ (ईसा पूर्व २३-२२) तक जीवित था।

विजयभट्टारिका के अनुदान में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि विक्रमादित्य प्रथम चालुक्य साम्राज्य का उत्तराधिकारी था (स्व-वंशजाम लक्ष्मीमप्राप्या च परमेश्वरम निवारिता-विक्रमादित्यः)।

संभवतः, विक्रमादित्य प्रथम को पुलकेशिन द्वितीय की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिए आंतरिक संघर्षों के साथ-साथ पड़ोसी राजाओं के आक्रमणों का भी सामना करना पड़ा। संभावना है कि विक्रमादित्य प्रथम ने चालुक्यों के वर्चस्व को फिर से स्थापित करने की जिम्मेदारी ली। उन्होंने अपने बड़े भाई चंद्रादित्य की पत्नी विजयभट्टारिका को वातापी में बागडोर संभालने की अनुमति दी और उन्होंने खुद आक्रमक पड़ोसी राजाओं का मुकाबला करने के लिए सेना का नेतृत्व किया। विजयभट्टारिका ने शक ५६२ (ईसा पूर्व २२-२१) और शक ५७६ (ईसा पूर्व ८-७) के बीच शासन किया। विक्रमादित्य प्रथम शक वर्ष ५७७ (ईसा पूर्व ६) में सिंहासन पर विराजमान हुए।

विक्रमादित्य प्रथम के तालमंची (नेल्लोर) ताम्रपत्र से चयनित पाठ यहां दिया गया है:

*विदितमस्तु वोसमभिः प्रवर्द्धमान-विजयराज्य-संवत्सरे श्रावणमास-सूर्यग्रहणे*

(छठे शासन वर्ष में और श्रावण मास में सूर्य ग्रहण के अवसर पर)। ३१ जुलाई १ ईसा पूर्व नेल्लोर में सूर्य ग्रहण दिखाई दे रहा था और वह दिन श्रावण मास की अमावस्या का दिन था। विक्रमादित्य प्रथम की सवनूर ताम्रपत्र शक ५९७ (ईसा पूर्व १४) में दिनांकित हैं। शक ६०२ (ईसा पूर्व १८-१९) में विक्रमादित्य प्रथम का उत्तराधिकारी उनके पुत्र विनयादित्य ने लिया।

यहाँ विनादित्य की दयामदिन्ने प्लेटों से चयनित पाठ है:

---

*“चतुर्दशोत्तर-सत्येत्सु शक-वर्षेषु अतितेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्य संवत्सरे द्वादशे  
वर्तमाने.....आषाढपूर्णास्याम दक्षिणायन-काले”*

---

(सका ६१४ बीता हुआ, १२वाँ शासन वर्ष, महीने की पूर्णिमा का दिन, दक्षिणायन संक्रांति के अवसर पर)।

वर्तमान वर्ष ईसा पूर्व ३०-३१ है और ईसा पूर्व ३१-३२ बीत चुका है। दिनांक पुनः २२/२३ जून ईसा पूर्व ३१ के अनुरूप है। इस तिथि को शकान्त युग (ईसा पूर्व ७८) के युग की व्याख्या नहीं की जा सकती है। कीर्तिवर्मन द्वितीय के केंदूर ताम्रपत्र से चयनित पाठ यहां दिया गया है:

---

*“विदितमेवास्तु वसमाभिः द्विसप्तत्योत्तर शतच्छतेषु सकावरसेवतेत्सु प्रवर्द्धमान-  
विजयराज्य-संवत्सरे सास्थे वर्तमाने..... वैशाख पौर्णिमास्यं सोमग्रहणे”*

---

(शक ६७२ बीता हुआ, छठा शासन वर्ष, वैशाख महीने की पूर्णिमा के दिन चंद्र ग्रहण)

हालांकि बीत चुके वर्षों का उल्लेख किया गया है, ६७२ शक चालू वर्ष था। ईसा पूर्व ८८-८९ छठा शासन वर्ष था। ईसा पूर्व २४ अप्रैल ८८ वैशाख महीने की पूर्णिमा थी और चंद्र ग्रहण १८:५६ बजे दिखाई दे रहा था। विजयादित्य, विक्रमादित्य द्वितीय और कीर्तिवर्मन द्वितीय ने शक ६१९ (ईसा पूर्व ३६) से ६८० (ईसा पूर्व ९७) तक शासन किया। राष्ट्रकूट राजा दंतिदुर्ग और कृष्णराज ने कीर्तिवर्मन द्वितीय को हराया और शक ६८० (ईसा पूर्व ९७) तक चालुक्य साम्राज्य का अंत हो गया।

## १०.२ प्रारंभिक चालुक्य शक युग का कालक्रम

	शक काल (५८३ ईसा पूर्व)	ईसा पूर्व
जयसिंह	-	२२५-२०० ?
रणराग	-	२००-१७२ ?
पुलकेशिन प्रथम	४११-४६६	१७२-११७
कीर्तिवर्मन प्रथम	४६६-४८८	११७-९५
मंगलीश्वर	४८९-५०५	९४-७८
कोककुल्ला विक्रमादित्य (पुलकेशिन द्वितीय के बड़े पुत्र)	५१५-५३१	६८-५२
पुलकेशिन द्वितीय	५३१-५६१	५२-२२
विजयभट्टारिका (चंद्रादित्य की पत्नी)	५६२-५७६	२२-७
विक्रमादित्य प्रथम (पुलकेशिन द्वितीय के छोटे पुत्र)	५७७-६०१	६-१८
विनायादित्य	६०२-६१८	१९-३५



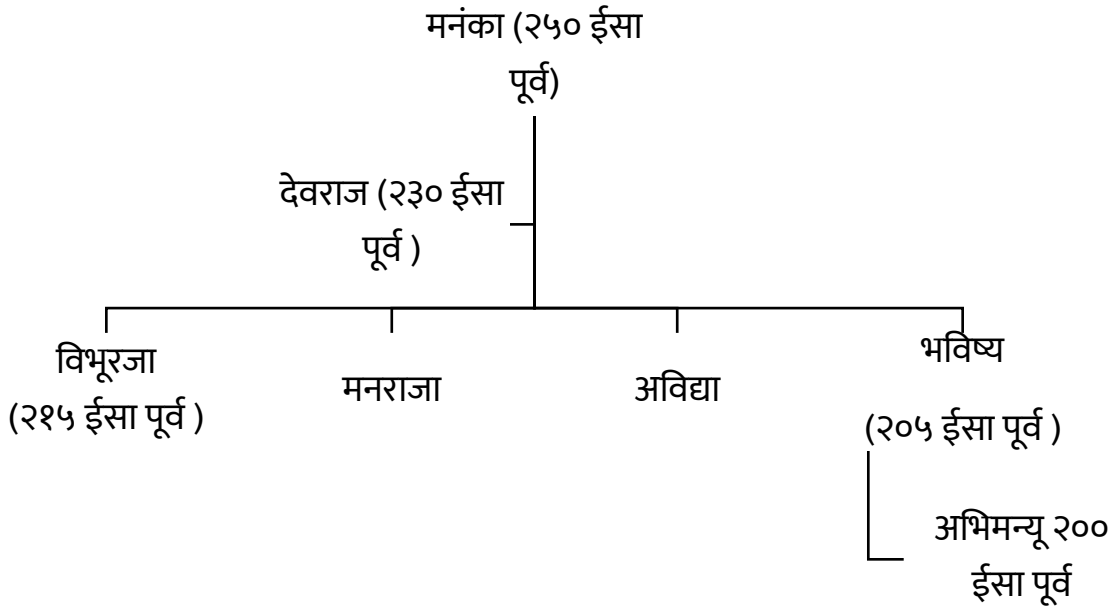
हिंदू राजा और राजत्व का विचार (MK04)

विजयादित्य	६१९-६५५	३६-७२
विक्रमादित्य द्वितीय	६५५-६६६	७२-८३
किर्तीवर्मन द्वितीय	६६६ – ६८०	८३-९७

## युनिट ११ : राष्ट्रकूट

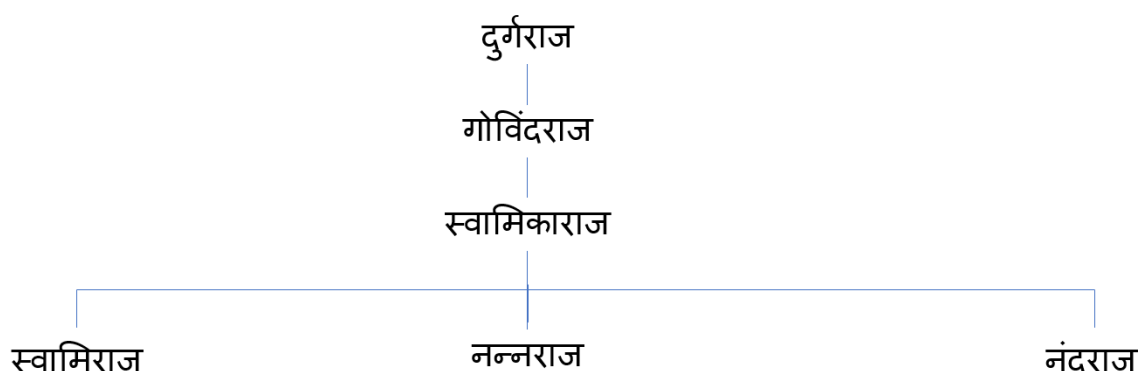
ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्रकूट अशोक के शिलालेखों में वर्णित रस्त्रिकों या रथिकों के वंशज थे। एक तमिल तिथीग्रंथ के अनुसार "कोंगु-देश-राजक्कल", सात रट्टा राजाओं ने गंगा वंश के उदय से पहले कोंगु क्षेत्र पर शासन किया था। अभिमन्यू का उदिकावाटिका अनुदान प्रारंभिक राष्ट्रकूटों का सबसे पुराना ताम्रपत्र अभिलेख उपलब्ध है। इस अनुदान का प्रतीक सिंह (शेर) है। मनंका मनपुरा (बाद में मान्यखेत या मालखेड) के प्रारंभिक राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक थे। विभुराजा की हिंगनी बेडी ताम्रपत्र और अविद्या के पांडुरंग-पल्ली अनुदान भी राष्ट्रकूटों की एक ही वंशावली से संबंधित हैं। अविद्या ने कुंतला (उत्तरी कर्नाटक) पर शासन करने का भी दावा किया। दुर्भाग्य से, ये शिलालेख या तो शासक वर्षों में दिनांकित हैं या कहीं जगह पर तिथी उपलब्ध ही नहीं है।

### ११.१ प्रारंभिक राष्ट्रकूटों की वंशावली



स्वामीराज की नागार्धन ताम्रपत्र और तिवारखेड़ा ताम्रपत्र सूचित करती हैं कि अचलपुर के प्रारंभिक राष्ट्रकूटों ने शक ५५३ (इसापूर्व ३०) के आसपास विदर्भ पर शासन किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि

चालुक्य की उत्तरी कर्नाटक की स्थापना के बाद राष्ट्रकूटों का आधार विदर्भ था। इस प्रकार मनंका, देवराज और अभिमन्यू की तिथि चालुक्य पुलकेशिन प्रथम (ईसा पूर्व १७२-११७) से पहले के रूप में तय किया जाना चाहिए। सेंद्रक राजा इंद्रानंद के गोकक ताम्रपत्र में एक राष्ट्रकूट राजा देजा महाराज का उल्लेख है। ये ताम्रपत्र अगुप्तायिका युग ८४५ बीता हुआ दिनांकित हैं। ईसा पूर्व ९५० में अगुप्तायिकायुग के युग को ध्यान में रखते हुए, जिस वर्ष इन ताम्रलेखों को जारी किया गया था, वह वर्ष ईसा पूर्व १०५ था। इस प्रकार, एक राष्ट्रकूट राजा देजा महाराज दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में शासन कर रहे थे।



नागार्धन, तिवारीखेड़ा और मुलताई ताम्रपत्रप्रारंभिक राष्ट्रकूट वंश की अचलपुर शाखा की वंशावली प्रदान करती हैं।

### प्रारंभिक राष्ट्रकूटों की अचलपुर शाखा का कालक्रम:

	शक संवत् (५८३ ईसा पूर्व)	ईसा पूर्व में
दुर्गराज	५००-५१५?	८३-६८?
गोविंदराज	५१५-५३०?	६८-५३?
स्वामीकराजा	५३०-५५०?	५३-३३?
स्वामीराज	५५०-५७३	३३-१०
नन्नराज	५७३-६१५	३०-३२
नंदराज युद्धासुर	६१५-६३२	३२-४९

## ११.२ प्रारंभिक राष्ट्रकूटों की मुख्य शाखा

एलोरा की दशावतार गुफा में के शिलालेख दंतिदुर्ग की वंशावली देता है और यह सूचित करता है कि गोविंदराजा इंद्रराज के पुत्र और दंतिवर्मा के पोते थे। गोविंदराजा के पुत्र, करकराजा उनके उत्तराधिकारी बने: करकराजा के सामंत के भिंडों अनुदान से हमें पता चलता है कि करकराजा को "प्रतापशिला" भी कहा जाता था। इंद्रराज कर्कराज के पुत्र थे। इंद्रराज ने पश्चिमी चालुक्य राजा को हराया और उनकी बेटी से शादी की। इंद्रराज के पुत्र दंतिदुर्ग, राष्ट्रकूट साम्राज्य के पहले संस्थापक थे। उन्होंने अपनी राजधानी इलापुरा (एलोरा) में दशावतार मंदिर का निर्माण कराया।

उन्होंने चालुक्य राजा वल्लभ, यानी कीर्तिवर्मन द्वितीय, कांची (पल्लव), केरल, चोल, पांड्य, श्री हर्ष, वज्रता और कर्नाटक के राजाओं को शक ६७१-६७५ (इसा ८८-९२) के बीच हराया। [कांचीसाकेरलनारधिप-चोल-पांड्या-श्री-हर्ष-वज्रता-विभेद-विधान-दक्षम, कर्नाटकम]। उन्होंने उज्जैन में गुर्जर वंश के राजाओं को हराया और उन्हें अपना "प्रतिहार" यानी द्वारपाल बनाया। उन्होंने अपने साम्राज्य को कोंकण क्षेत्र तक भी बढ़ाया।

दंतिदुर्ग की अकालिक मृत्यु के बाद, करकराजा के पुत्र और दंतिदुर्ग के चाचा कृष्णराज यानी कृष्ण प्रथम ने जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने प्रारंभिक चालुक्यों और मन्ना-नगर (मनपुरा) के राज्य को गंगा से संलग्न किया। उनके बेटे गोविंदराज द्वितीय शक ६९२ (१०९ इसा) में युवराज के रूप में नियुक्त किया। गोविंद द्वितीय ने वेंगी विष्णुराज या विष्णुवर्धन चतुर्थ के पूर्वी चालुक्य राजा को अपने अधीन कर लिया। उन्होंने और पल्लव राजा नंदिवर्मा ने गंगा राजा शिवमार द्वितीय के राज्याभिषेक में भी भूमिका निभाई।

## युनिट १२ : कलचुरि – चेदि राजवंश

चेदि और कलचुरि ऋग्वैदिक युग के प्राचीन हैहय वंश के वंशज थे। प्रतीत होता है कि चेदि और कलचुरियों ने ईसा पूर्व ४०२ के आसपास मध्य भारत में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की और एक युग की स्थापना की, जैसा कि महिष्मती शहर से जारी किए गए शुरुआती शिलालेख कलचुरी वर्ष १६७ (ईसा पूर्व २३५) के आसपास के हैं। संभवतः, महाराजा सुबंधु और उनके पूर्वज कलचुरी वंश के थे और उन्होंने कलचुरि-चेदि युग की स्थापना की थी। जैसा कि कालिदास ने अपने "ज्योतिर्विदाभरणम्" में लिखा है संभवतः, चित्रकूट के राजा विजयाभिनंदन कलचुरी-चेदि युग के संस्थापक थे।

### १२.१ वलखा के महाराजा

डॉ. मिराशी के अनुसार, वलखा के महाराजा, जो शायद कलचुरियों के सबसे शुरुआती जागीरदार थे, उन्होंने अपने शिलालेखों में कलचुरी युग का इस्तेमाल किया था। वलखा के महाराजाओं के अब तक ३५ से अधिक शिलालेख खोजे जा चुके हैं और वह २९ से ११७ वर्ष के बीच के पाए गए हैं। कुछ इतिहासकारों का मत है कि ये शिलालेख गुप्त काल के थे। ये शिलालेख कलचुरी युग के थे या गुप्त काल के यह स्थापित करना मुश्किल है। चूंकि वलखा का राज्य कलचुरी साम्राज्य के बहुत करीब था, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वलखा के महाराजाओं ने अपने शिलालेखों में कलचुरी-चेदि युग का इस्तेमाल किया था। वलखा निस्संदेह मध्य प्रदेश के धार जिले में नर्मदा नदी के करीब, वर्तमान गाँव 'बाग' है।

### वलखा के महाराजाओं की वंशावली और कालक्रम:

	कलचुरि – चेदि कालक्रम (४०२ ईसा पूर्व)	ईसा पूर्व
भट्टारका	२९-३६	३७३ - ३६६
भूलुंदा प्रथम	३७-५९	३६५ - ३४३

स्वामिदास	६०-६८	३४२ - ३३४
रुद्रदास	६६-८५	३३६ - ३१७
भूलुंदा द्वितीय	८६-१०७	३१६ - २९५
रुद्रदास द्वितीय	१०८ – ११७	२९४ – २८५
नागभट	-	-

कुछ इतिहासकारों का मत था कि महाराज सुबन्धु वल्खा के महाराजाओं के परिवार के थे। सुबन्धु के शिलालेख महिष्मती शहर से जारी किए गए थे ना की वल्खा के शहर से और **परमभट्टारक-पदानुध्यात** इसका उनमें उल्लेख नहीं है। इसलिए, यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि सुबन्धु वल्खा के परिवार से संबंधित नहीं था।

## १२.२ त्रिकूटक

त्रिकूट या तीन चोटियों वाला पर्वत; वह अपरान्त या उत्तरी कोंकण में स्थित है। त्रिकूट के चारों ओर शासन करने वाले शाही परिवार को त्रिकूटक कहा जाता था। इतिहासकारों के अनुसार, त्रिकूटक राजाओं के शिलालेख कलचुरी वर्ष २०७ से २८४ तक के थे। लेकिन, प्रतीत होता है, त्रिकूटको ने कार्तिकादि विक्रम युग (ईसा पूर्व ७१९) का उपयोग किया।

	कार्तिकादि विक्रम युग (ईसा पूर्व ७१९)	ईसा पूर्व
दहरसेन	२०७ – २४०	५१२ – ४७९
व्याघ्रसेन	२४० – २५०	४७९ – ४६९
मध्यमसेन	२५०-२७०	४६९ – ४४९

विक्रमसेन	२७०-२८४	४४९ - ४३५
-----------	---------	-----------

### कलचुरी-चेदि युग के प्रवर्तक

कलचुरी-चेदि युग के प्रवर्तक कौन थे? डॉ. मिराशी ने कहा कि अभीरा वंश के संस्थापक, अभीर राजा ईश्वरसेन ने इस युग की शुरुआत की हो सकती है। पुराणों के अनुसार, अभीर राजा सातवाहनों का उत्तराधिकारी बने और उन्होंने ६७ वर्षों तक शासन किया। ईश्वरसेन का नासिक गुफा शिलालेख उनके ९ वें शासनकाल में दिनांकित है। लेकिन कलचुरी और चेदि राजाओं के शिलालेखों में युग को "कलचुरी संवत्" या "चेदि संवत्" कहा गया है। चंद्र वंश के क्षत्रियों की प्राचीन हैहय शाखा चेदि वंशज थे। यह मान लेना सर्वथा बेतुका है कि चेदि क्षत्रिय राजाओं ने अभीरस के युग का उपयोग किया था।

इसलिए, यह मानना तर्कसंगत नहीं है कि कलचुरियों ने अभीर राजाओं के शासन काल को अपनाया और बाद में इसे एक युग में बदल दिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि चेदी राजाओं ने ईसा पूर्व ४०२ के आसपास मध्य भारत में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की और एक युग की स्थापना की। कालिदास अपने ज्योतिर्विदभरणम में कहते हैं कि युधिष्ठिर, विक्रम, शालिवाहन और विजयाभिनंदन ने कलियुग में अपने युगों की स्थापना की। युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर में शासन किया और युधिष्ठिर युग (ईसा पूर्व ३१६२) के संस्थापक बने। विक्रमादित्य प्रथम ने ईसा पूर्व ७१९-७१८ में कार्तिकादि विक्रम युग की स्थापना की थी। कालिदास के अनुसार, शालिवाहन की राजधानी सलेय पर्वत के करीब थी और विजयभिनंदन की राजधानी चित्रकूट के करीब थी।

शक युग (ईसा पूर्व ५८३) के युग का श्रेय शालिवाहन को दिया गया था। राजा विजयाभिनंदन शालिवाहन के बाद और कालिदास से पहले रहे और एक युग की स्थापना की। सभी संभावना में, विजयाभिनंदन चित्रकूट क्षेत्र के एक चेदि राजा थे और वे शायद कलचुरि-चेदि युग के संस्थापक थे, जो लगभग ईसा पूर्व ४०२ शुरू हुआ था। महिष्मती शहर से जारी सबसे पुराने शिलालेख कलचुरि वर्ष १६७

(ईसा पूर्व २३५) के आसपास के हैं। महिष्मती ऋग्वैदिक युग के दौरान हैहयस की राजधानी थी। संभवतः, कलचुरी-चेदि राजाओं ने अपनी राजधानी चित्रकूट से महिष्मती को चौथी या तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में स्थानांतरित कर दी थी। महाराजा सुबंधु ने लगभग २३५ ईसा पूर्व महिष्मती से शासन किया। बाद में, चेदि राजाओं ने अपनी राजधानी महिष्मति से दहला क्षेत्र में त्रिपुरी में स्थानांतरित कर दी।

## चेदि

चेदि ऋग्वैदिक युग के हैहयों के वंशज थे जैसा कि उन्होंने अपने शिलालेखों में दावा किया है। ऋग्वेद में एक चेदि राजा कशु का उल्लेख है। मूल रूप से, चेदि महिष्मती पर शासन करते थे और मत्स्य के पड़ोसी थे। शायद बाद में उन्होंने अपना साम्राज्य को बुंदेलखंड से बाहर विस्तारित किया। महाभारत सूचित करता है कि राजा सहज के शासनकाल के दौरान चेदि अपना राज्य हार गये। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरु वंश के उपरिचार वासु ने ऋग्वैदिक युग के दौरान चेदि राज्य पर कब्जा कर लिया था। धीरे-धीरे, महिष्मती अवंती जनपद का हिस्सा बन गई और सूक्तिमती नदी के तट पर स्थित क्षेत्र को चेदि जनपद के रूप में जाना जाने लगा।

इस प्रकार, चेदि महाभारत काल के बाद के वत्स जनपद के पड़ोसी बन गए। स्कंद पुराण का रेवा खंड सूचित करता है कि चेदि को मंडल के नाम से भी जाना जाता था। दमघोसा के पुत्र शिशुपाल महाभारत युग के दौरान चेदि राजा थे। महाभारत में चेदि राजा सुनीता और उनके पुत्रों, धृष्टकेतु और सराभ का भी उल्लेख है। पुराण हमें बताते हैं कि महाभारत काल के बाद कुल २४ या २५ चेदि राजा हुए। महापद्म नंद ने ईसा पूर्व १६६४ के आसपास चेदि साम्राज्य पर कब्जा कर लिया था। बाद में, कलचुरी-चेदि राजाओं, चेदि राजवंश के वंशजों ने ईसा पूर्व ४०२ में कलचुरी-चेदि युग की स्थापना की और ईसा पूर्व ४०२ से छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक दहला-मंडला पर शासन किया। हम पाठ १५ में कलचुरी-चेदि राजाओं के कालक्रम पर चर्चा करेंगे। बौद्ध धर्म के जातक ग्रंथों में चेतस या चेतस्त के कुछ संदर्भ हैं लेकिन चेत वज्जि जनपद के गणों में से एक था। महावीर के समकालीन राजा चेतक वैशाली के राजा थे। इसलिए, चेत और चेदि दो अलग-अलग समुदाय थे।



## यूनिट १३ : पल्लव राजवंश

---

### १३.१ उत्पत्ति

#### तोंडाईमन राजवंश की उत्पत्ति, तोंडाईमंडलम् के राजा और पल्लव :

राजा तोंडाईमन तमिलनाडु के तोंडाईमंडलम् के सबसे पुराने राजा थे। वह शिव के एक कनिष्ठ समकालीन थे और लगभग ११२५०-१११५० इ. स. पूर्व में रहते थे। सभी संभावना में, डंडा या दंडक को तमिलनाडु में तोंडाईमन कहा जाता था। रामायण के उत्तरकांड के अनुसार दंडक इक्ष्वाकु का सबसे छोटा पुत्र था। इक्ष्वाकु ने क्रूर व्यवहार के कारण दंडक को अपने राज्य से निकाल दिया। कौटिल्य अर्थशास्त्र कहता है कि भोज दंडक का एक पुत्र था जिसने एक ब्राह्मण लड़की से जबरन शादी की थी। एक अन्य कथा के अनुसार दंडक विंध्य के दक्षिण में गया और दंडकारण्य के करीब अपना राज्य स्थापित किया। वह शुक्राचार्य की एक बेटी से शादी करना चाहता था। लेकिन उसने उससे शादी करने से इनकार कर दिया। एक दिन, दंडक जबरन शुक्राचार्य के आश्रम में घुस गया और उसकी बेटी का अतिप्रसंग किया।

क्रोधित शुक्राचार्य ने अपने शिष्यों को दंडक को शासित करने का आदेश दिया। संभवतः दंडक को दंडकारण्य का अपना राज्य छोड़ना पड़ा। वह कांचीपुरम के क्षेत्र में बस गया। उस समय शिव भी कांचीपुरम के क्षेत्र में थे। शिव का विवाह कांचीपुरम के कामाक्षी अम्मल से हुआ था। तमिल किंवदंतियों के अनुसार, राजा तोंडाईमन ने चेन्नई के अवाडी के पास तिरुमुल्लिवयिल के शिव मंदिर का निर्माण किया था। उसने शिव और नंदी की सहायता से तोनादईमंडलम् में अपना राज्य स्थापित किया। परंपरागत रूप से, कांचीपुरम के क्षेत्र में राजा तोंडाईमन के वंशज राज्य करते थे।

संगम युग की कवयित्री, अववयार (१४००-१३०० इ.स. पूर्व), कंबर (कंबरामायणम् के लेखक) की समकालीन, ने अपनी कविता पुरुनानुरू में राजा तोंडाइमान इलैडिरायन का उल्लेख किया है। राजा तोंडाईमन इलैडिरायन, वेलिर राजा अथियामन के साथ संघर्ष में थे। वह पल्लवों के वंश के पूर्वज थे। कलिंगट्टुपरानी के अनुसार, एक पल्लव राजकुमार, करुणाकर तोंडाइमन ने कलिंग पर विजय प्राप्त की,

जो कुलोत्तुंगा चोल १ (४१० CE) के तहत स्थलपति के रूप में सेवा कर रहा था। जाहिर है, पल्लव इक्ष्वाकु राजा दंडक के वंशज थे।

### १३.२ पल्लव वंश

पल्लव राजा तोंडाईमन इलैडिरयण (१४००-१३०० ई.स. पूर्व) के वंशज थे। दुर्भाग्य से, पल्लव शिलालेख केवल शासक वर्षों में दिनांकित हैं। हमें पल्लव वंश के कालक्रम के निर्माण के लिए अन्य शिलालेखों के संदर्भों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह सर्वविदित है कि पल्लवों के उदय ने निचले आंध्र क्षेत्रों में इक्ष्वाकु वंश के शासन को समाप्त कर दिया। पल्लवों के प्रारंभिक शिलालेख प्राकृत में लिखे गए हैं। इस प्रकार, प्रारंभिक पल्लव शिलालेख छठी शताब्दी ई.स. पूर्व के होने चाहिए। सिंहवर्मन प्रथम पल्लवों का सबसे पहला ज्ञात शासक था और उसके संभावित समकालीन कदंब वंश के संस्थापक मयूरसरमन और गंग वंश के संस्थापक कोंगणी वर्मन थे। उसका पुत्र, शिवस्कंदवर्मन उसका उत्तराधिकारी बना।

गंग राजा माधव सिंहवर्मन का पेनुकोंडा अनुदान हमें बताता है कि पल्लव राजा सिंहवर्मन ने माधववर्मन प्रथम के पुत्र गंग राजा आर्यवर्मन का राज्याभिषेक किया और बाद में, पल्लव राजा स्कंदवर्मन ने आर्यवर्मन के पुत्र माधव सिंहवर्मन का राज्याभिषेक किया। अलवकोंडा शिलालेखों के अनुसार विष्णुगोपवर्मन बुधवर्मन के पुत्र थे। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में कांची के शासक के रूप में विष्णुगोप का उल्लेख है। अविनिता के होसकोटे अनुदान में पल्लव राजा सिंहविष्णु (सिंहा विष्णु-पल्लवधिराजजनन्या) का उल्लेख है।

---

*संवत्सरे तु द्वविमशे कांचीश-सिंहवर्मनः।*

*अष्टयग्रे शकाबदानम सिद्धमेतच्छत-त्रये॥ ३८*

---

जैन विद्वान सिंहासुरी ने पल्लव राजा सिंहावर्मन के २२ वें शासन वर्ष के दौरान शक ३८० (२३ अगस्त २०४ ई.स. पूर्व) की भाद्रपद अमावस्या पर ब्रह्माण्ड विज्ञान पर एक जैन कृति “लोकविभाग” का संस्कृत में अनुवाद किया।

‘लोकविभाग’ मूल रूप से 6वीं शताब्दी इ.स. पूर्व के आसपास जैन भिक्षु सर्वानंद द्वारा प्राकृत में लिखा गया था। दिलचस्प बात यह है कि, लोकविभाग संख्या १३१०७२००००० को उल्टे क्रम में ०००००२७०१३१ के रूप में व्यक्त करता है "पंचभ्यः खलु शून्यभ्यः परम द्वि सप्त चम्बरम एकम त्रि च रूपम च" जो संकेत करता है कि दशमलव स्थान-मूल्य प्रणाली और शून्य का उपयोग ६ वीं शताब्दी से पहले भारत में अच्छी तरह से स्थापित किया गया था। दंडिन के एक संस्कृत कार्य "अवंतीसुंदरिकाथा" के अनुसार, भारवी चालुक्य राजा विष्णुवर्धन (जयसिंह) और उसके बाद गंग राजा दुर्विनीता से मिले। बाद में, उन्होंने अपनी राजधानी कांची में पल्लव राजा सिंहविष्णु से भी मुलाकात की। विष्णुकुंडिन राजा विक्रमेन्द्र-भट्टारकवर्मन का इंद्रपालनगर ताम्रपत्र शिलालेख शक ४८८ (९५ ई.स. पूर्व) में उनके २२ वें शासनकाल में जारी किया गया था जिसमें विष्णुकुंडिन राजा ने पल्लव राजा सिम्हा पर जीत का दावा किया था। गंग राजा मारसिम्हा का मन्ने अनुदान हमें बताता है कि गंग राजा शिवमारदेव का राज्याभिषेक पल्लव राजा नंदीवर्मन और राष्ट्रकूट राजा गोविंदराज ने किया था।

इन सूचनाओं के आधार पर पल्लवों के कालक्रम का अनुमान इस प्रकार लगाया जा सकता है:

	शक युग	ई.स. पूर्व
१. सिंहवर्मन प्रथम	८३-१०८	५००-४७५
२. (शिव) स्कंदवर्मन प्रथम	१०८-१३८	४७५-४४५
३. कुमारविष्णु	१३८-१६३	४४५-४२०
(स्कंदवर्मन प्रथम का ज्येष्ठ पुत्र)		
४. सिंहवर्मन द्वितीय (का छोटा पुत्र)	१६३-१७३	४२०-४१०
स्कंदवर्मन प्रथम ने राज्याभिषेक किया		
गंग राजा आर्यवर्मन)		

५. स्कंदवर्मन द्वितीय (जिन्होंने राज्याभिषेक किया गंग राजा माधव सिंहवर्मन)	173-198	४१०-३८५
६. बुद्धवर्मन	१९८-२०३	३८५-३८०
७. विष्णुगोपवर्मन	२०३-२०८	३८०-३७५
८. वीरवर्मन	२०८-२१८	३७५-३६५
९. स्कंदवर्मन द्वितीय	२१८-२४८	३६५-३३५
१०. सिंहवर्मन III	२४८-२७८	३३५-३०५
११. विष्णुगोप (जिन्होंने युद्ध किया था समुद्रगुप्त)	२५३-२८३	३३०-३००
१२. सिंहवर्मन चतुर्थ	२८३-३२३	३००-२६०
१३. सिंहविष्णु प्रथम (समकालीन गंगा राजा अविनिता)	३२३-३५८	२६०-२२५
१५. सिंहवर्मन वी (सिंहासूरी अनुवादित "लोकविभाग" अपने २२ वें में शासक वर्ष)	३५८-४०३	२२५-१८०
१६. सिंहविष्णु द्वितीय (भारवी कांची में उनसे मिले)	४०३-४४३	१८०-१४०
१७. सिंह (जो से हार गया था)	४४३-४८८	१४०-९५

विष्णुकुंडिन राजा)

१८. नंदीवर्मन (एक वंशज

७०३-७३३

१२०-१५०

सिंहवर्मन III और

जिसने गंग का राज्याभिषेक किया राजा शिवमारदेव)

पल्लव वंश के पतन के बाद तमिलनाडु में चोल राजाओं का प्रभुत्व था। उत्तमचोल चोल वंश के अंतिम महान राजा थे। चोल-चालुक्य वंश के वंशज कुलोत्तुंगा चोडदेव प्रथम, उत्तमचोल के समकालीन थे। प्रतीत होता है, कुलोत्तुंगा चोडदेव प्रथम ने अपनी मृत्यु के बाद उत्तम चोल के राज्य पर कब्जा कर लिया।

हालांकि पांड्य राजाओं ने मदुरै में शासन करना जारी रखा, नायक राजाओं ने विजयनगर साम्राज्य की अवधि के दौरान उनकी जगह ले ली।

## युनिट १४ : चोल वंश

---

### १४.१ उत्पत्ति

वायु पुराण के अनुसार, तुर्वश के वंशज वह्नि, पांड्य, केरल (चेरा), चोल और कोला के पूर्वज थे। वह्नि के पांचवें वंशज मारुत ने पुरु वंश के राजा रैभ्य के पुत्र दुष्कृता या दुष्मंत को गोद लिया था। पांड्या, केरल, चोल और कोल्ला राजा जनपीड या अहदा के पुत्र थे, और वैवस्वत मनु और ऋषि अगस्त्य के जीवनकाल से पहले उन्होंने अपने राज्यों की स्थापना की थी। कोल्लास उत्तरी केरल के कोल्लागिरी में बस गए।

तमिल किंवदंतियों और मणिमेखलाई के अनुसार, कावेरी नदी को चोल राजा कांतन या कांतमन की प्रार्थना के जवाब में ऋषि अगस्त्य द्वारा अपने पानी के बर्तन (कमंडल) से छोड़ा गया था। कलिंगट्टुपारानी और विक्रमाचोलन उला इंगित करते हैं कि राजा कांतन चोलों के सबसे पहले ज्ञात राजा थे और ऋषि अगस्त्य और परशुराम के समकालीन थे। वह राजा टोंडिमन के समकालीन भी थे। वाडा थिरुमुल्लावैयिल की किंवदंतियों से संकेत मिलता है कि राजा तोंडाईमन शिव और मुरुगन के कनिष्ठ समकालीन थे। अतः हम मोटे तौर पर चोल राजा कांतन की तिथि लगभग 11250-11150 ईसा पूर्व निश्चित कर सकते हैं। राजा कांतन ने परशुराम के प्रकोप से बचने के लिए अपने नाजायज पुत्र काकंदन को अपना राज्य दे दिया। काकंदन ने चंपा शहर से शासन किया जिसे काकंडी, पुहार और कावेरीपट्टनम के नाम से जाना जाने लगा। संगम साहित्य एक अन्य चोल राजा तुंगेइलेरिंदा टोडिटॉट सेम्बियन का उल्लेख करता है, जो सिबी के वंशज थे जिन्होंने असुरों के किलों को नष्ट कर दिया था। उन्होंने ऋषि अगस्त्य (अगस्त्य के वंशज) के कहने पर 28 दिनों तक इंद्र उत्सव मनाने की शुरुआत की।

पुराणों और तमिल स्रोतों के अनुसार चोल पांड्य के भाई थे। जाहिर है, प्राचीन चोल पुरु या चंद्र वंश के वंशज थे। बाद में, तमिलनाडु के चोल वंश का आंध्र के इक्ष्वाकु राजाओं के साथ विलय हो गया था। इस प्रकार, कई तेलुगु चोड़ा वंश (वेलनती, रेनाती, पोटापी, मुदिगोंडा आदि) अस्तित्व में आए।

यही कारण हो सकता है कि बाद के चोलों ने अपनी उत्पत्ति का श्रेय सूर्य वंश को दिया। रामायण में चोलों के राज्य का उल्लेख है। प्रतीत होता है, चोलों के चंद्र वंश और राजा अश्मक या दंडक के वंशजों के सूर्य वंश रामायण युग के बाद मिश्रित हो गए।

परंपरागत रूप से, चोलों के तीन उपनाम थे, किल्ली, वालावन और सेम्बियन। विराचोलियम के अनुसार, सेम्बियन का अर्थ राजा सिबी का वंशज है। संभवतः, सेम्बियन या सिबी के वंशज भी तमिलनाडु में बस गए और चोल वंश के चंद्र वंश बन गए।

### ईसा पूर्व

१. चोल - चोलों के पूर्वज और पांड्य के छोटे भाई	११४००
२. राजा कांतन चोल	११२५०-१११५०
३. काकंदन	१११५०-१११००
४. तुंगेयलेरिंडा तोडित्तोत सेम्बियन	१०८००

## १४.२ चोलों का कालक्रम

मणिमेखलाई और तमिल किंवदंतियों के अनुसार, कावेरी नदी को चोल राजा कांतन, या कांतमन की प्रार्थना के जवाब में ऋषि अगस्त्य द्वारा अपने जल पात्र (कमंडल) से छोड़ा गया था। कलिंगट्टुपारानी और विक्रमाचोलन उला इंगित करते हैं कि राजा कांतन चोलों के सबसे पहले ज्ञात राजा थे और ऋषि अगस्त्य और परशुराम के समकालीन थे। वह राजा टोंडिमन के समकालीन भी थे। वाडा थिरुमुल्लाइवायिल की किंवदंतियों से संकेत मिलता है कि राजा तोंडाईमन शिव और मुरुगन के कनिष्ठ समकालीन थे।

अतः हम मोटे तौर पर चोल राजा कांतन की तिथि लगभग ११२५०-१११५० ईसा पूर्व निश्चित कर सकते हैं। राजा कांतन ने परशुराम से बचने के लिए अपना राज्य अपने नाजायज पुत्र काकंदन को दे दिया।

काकंदन ने चंपा शहर से शासन किया, जिसे काकंडी, पुहार और कावेरीपट्टनम के नाम से जाना जाने लगा। संगम साहित्य एक अन्य चोल राजा, तुंगेयलेरिंडा टोडिटोट सेम्बियन, शिवी के वंशज का उल्लेख करता है, जिसने असुरों के किलों को नष्ट कर दिया था। उन्होंने ऋषि अगस्त्य (अगस्त्य के वंशज) के कहने पर अट्ठाईस दिनों तक इंद्र उत्सव मनाने की शुरुआत की।

पुराणों और तमिल स्रोतों के अनुसार, चोल पांड्य के भाई थे। जाहिर है, प्राचीन चोल पुरु या चंद्र वंश के वंशज थे। बाद में, तमिलनाडु के चोल वंश को आंध्र के इक्ष्वाकु राजाओं के साथ मिला दिया गया था। इस प्रकार, कई तेलुगु चोड़ा वंश (वेलनती, रेनाती, पोट्टापी, मुदिगोंडा और अधिक) अस्तित्व में आए। यही कारण हो सकता है कि बाद के चोलों ने सूर्य वंश से अपनी उत्पत्ति का दावा किया। वीरा राजेंद्र चोल के चरला प्लेट और कन्याकुमारी शिलालेख ब्रह्मा से विजयालय तक निम्नलिखित कालानुक्रमिक सूची देते हैं:

१. ब्रह्मा
२. मार्च
३. कश्यप
४. विवस्वान्
५. इक्ष्वाकु
६. विकुक्षी
७. पूर्वजय
८. ककुस्थ
९. पृथु
१०. कुवलस्व
११. मांधाता
१२. मुचुकुंद
१३. हरिश्चन्द्र



- १४.सगर
- १५.भगीरथ
१६. ऋतुपर्ण
१७. दिलीप
- १८.राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न
१९. चोल
- २०.राजकेसरी
- २१.परकेसरी
- २२.मृत्युजित्
- २३.वीरसेन
- २४.चित्रा
- २५.पुष्पकेतु
- २६.केतुमाल
२७. समुद्रजित
- २८.क्षमा
- २९.नृमृदा
- ३०.मनोरथ
- ३१.पेरुवासी
- ३२.करिकाल
- ३३.वल्लभ
- ३४.जगदेकमल्ल
- ३५.व्यालभयंकर
- ३६.विजयालय, चोल वंश के बाद के संस्थापक

रामायण में चोलों के राज्य का उल्लेख है। इसलिए, राजा चोल को श्री राम के वंशज के रूप में स्थापित करना कालानुक्रमिक रूप से बेतुका है। प्रतीत होता है, चोलों के चंद्र वंश और राजा अश्मक या राजा दंडक के वंशजों के सूर्य वंश को रामायण काल के बाद मिला दिया गया था।

परंपरागत रूप से, चोलों के तीन उपनाम थे: किल्ली, वालावन और सेम्बियन। वीरचोलियम के अनुसार, सेम्बियन का अर्थ राजा शिवी का वंशज है। संभवतः, सेम्बियन या शिवी के वंशज भी तमिलनाडु में बस गए और चंद्र वंशी होने के कारण चोलों की वंशावली बन गए। प्राचीन तमिल स्रोतों में १२२ चोल राजाओं के नामों का उल्लेख है जिन्होंने लगभग ५०००-१०२० ईसा पूर्व शासन किया था।

### ईसा पूर्व

चोल - चोलों के पूर्वज और

पांड्य के छोटे भाई

११४००

राजा कांतन चोल

११२५०-१११५०

काकंदन

१११५०-१११००

तुंगेयलेरिंडा तोडित्तोत सेम्बियन

१०८००

मनु नीति चोलन

६०००

१२२ प्राचीन चोल राजा

५०००-१०२०

कालभ्रस

१०२०-७२०

२६ चोल राजा

७०० BCE - ४३५ CE

विजयालय (१५०-१८० CE) के उदय से पहले, तंजावुर में मुत्तरयार वंश का शासन था। तंजावुर शहर मुत्तरयार राजाओं की राजधानी था। तंजावुर शहर का नाम तंजय (धनंजय या अर्जुन) के नाम से लिया गया है। परंपरागत रूप से यह माना जाता है कि मुत्तरयार उत्तर से आए थे। प्रतीत होता है, आंध्र प्रदेश के सूर्यवंशी चोल, जिन्हें मुत्तरयार के नाम से जाना जाता है, ने पल्लवों के सहयोगियों के रूप में लगभग ६००-५०० ईसा पूर्व चोल साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। चोलों की एक अन्य शाखा के वंशज विजयालय ने मुत्तरयार वंश के अंतिम राजा एलंगो मुत्तरयार से चोल साम्राज्य पर विजय प्राप्त की।

## युनिट १५ : काकतीय राजवंश

---

### १५.१ काकतीयों का मूल उगम

एकाम्रनाथ के अनुसार काकतीय चंद्रवंशीय थे। काकतीयों की वंशावली नीचे दिये गये क्रम अनुसार है।

१. ब्रह्मा
२. अनि
३. चंद्र
४. बुध
५. पुरुहूता (पुरुखा)
६. नहुष
७. तपशील नहीं मिले।
८. भरत
९. तपशील नहीं मिले।
१०. अर्जुन (महाभारत युग)
११. अभिमन्यू
१२. परिक्षित
१३. जनमेजय
१४. सातनिका
१५. क्षेमंकारा
१६. सोमेंद्र
१७. उत्तुंगभुजा

राजा उत्तुंगभुज ने गोदावरी नदी के किनारे बसे शहर धर्मपुरी प्रस्थान किया और अपना राज्य प्रस्थापित किया। उसका पुत्र नंद था। राजा नंद ने नंदगिरी को अपनी राजधानी बनायी। राजा नंद को सुमती नामक कन्या और विजयपाला नामक पुत्र था। सुमती के पुत्र का नाम 'वृषसेन' था और विजयपाला के पुत्र का नाम 'अग्निवर्ण' था। विजयपाल की मृत्यु कम उम्र में ही हो गयी। नंद राजा ने अपने राज्य के दो हिस्से किये और वृषसेन और अग्निवर्ण का राज्याभिषेक करवाया।

वृषसेन के वंशज 'वृष्टी वंश' के रूप में जाने जाने लगे। वृष्टी वंश के अनेक राजाओं ने वृषसेन के बाद उत्कर्ष पाया।

लगता है की दुर्जय ( पहली शताब्दी ईसापूर्व) वृषसेन का वंशज था। उसका वंश काकतीय वंश से पहचाना गया। कन्नडदेव ने २७५-३०० सीई के दरम्यान कंदर शहर को अपनी राजधानी बनायी। उसका पुत्र सोमराज उसका उत्तराधिकारी बना। माधववर्मा का जन्म राजा सोमराज और श्रीयाल देवी से हुआ था।

### **माधववर्मा (३२४ सीई )**

एकाम्रनाथ राजा माधववर्मा के राज्याभिषेक से राजा प्रतापरुद्र के मृत्यु तक की काकतीय वंश की पूरी कालगणना, देते हैं।

माधववर्मा ने तरण संवत्सर में सिंहासन ग्रहण किया और प्रतापरुद्र की मृत्यु रुधिरोद्धरी संवत्सर में हुई। उन्होंने स्पष्ट रूप से विवरण दिया है की माधववर्मा के राज्याभिषेक से प्रतापरुद्र के मृत्यु तक १००० साल बीत चुके थे। और एक शिलालेख से ज्ञात होता है माधववर्माने २९१ (३६९ सीई) में सिंहासन ग्रहण किया। और दुसरा शिलालेख इस तारीख को शकांत २३६ (३१४ सी ई) दर्शाता है। परंतु, तरण संवत्सर २४६ में था ( ३२४ सी.ई) प्रतापरुद्र की मृत्यु रुधिरोद्धरी संवत्सर में हुई थी। याने शकांत १२४५ (१३२३- १३२४ सी.ई)

इस प्रकार से काकतीयों ने शकांत २४६ (३२४ सी ई) से शकांत १२४५ (१३२३ - १३२४ सीई) तक १००० साल राज्य किया।

एकाम्रनाथ के अनुसार माधव वर्मा ने मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, श्रवण नक्षत्र गुरुवार शकांत २४६ में सिंहासन ग्रहण किया। ये तारीख ८ नोव्हेंबर ३२४ सी ई से मेल खाती है। माधववर्मा के वंशजों की राजधानी अनुमकोंडा या एकशिलानगरी थी। 'सिध्देश्वर चरित' से माधव वर्मा का काल शक २३० के आसपास का मालूम होता है।

### अनुमकोंडा के काकतीय राजाओं की पारंपरिक कालक्रमणा:

शकांत काल	कालखंड	सीई
१. माधववर्मा और उसके वंशज	२४६-३६६	३२४-४४४
२. पद्मसेन और उसके वंशज	३६६-४४४	४४४-५२२
३. वेण्णमराजा और उसके वंशज	४४४-५३४	५२२-६१२
४. पोरीकी वेण्णमराज और उसके वंशज	५३४-६०३	६१२-६८१
५. गुंडमराज और उसके वंशज	६०३-६७३	६८१-७५१
६. एरुकुदेवराजा के राजप्रतिनिधी के रूप में कुंतलीदेवी	६७३-६८२	७५१-८२५
७. एरुकुदेवराजा	६७३-७४७	७५१-८२५
८. भुवनैकमा	७४७-७७३	८२५-८५१
९. त्रिभुवनैकमल और उसके वंशज	७७३-८४७	८५१-९२५

एकाम्रनाथ के अनुसार भुवनैकमल्ल ने विजयनगर के तुलुव राजा वीर नरसिंहराय को हराया। भुवनैकमल्ल ने वीर नरसिंहराज की बहन श्री रंगमादेवी से विवाह रचाया। वीर नरसिंहराम को

वैकटनाथ नामक पुत्र था। वैकटनाथ प्रतिशोध लेने के लिये हनुमकोड़ा के उपर आक्रमण करना चाहता था परंतु अंतिमतः भुवनेकमल्ल ने अपनी बेटी पांचाली का ब्याह बैकटनाथ से किया।

कालगणना के अनुसार विजयनगर के राजा वीर नरसिंह भुवनेकमल्ल समकालीन थे।

वीर नरसिंह के शिलालेख की तारीख शक १४२४ – १४३२ (८४१-८४९ सी. ई) मिलती है। प्रत्यक्ष में एकाम्रनाथ का मुख्य उद्देश राजा प्रतापरूद्र का इतिहास कथन करना था। तथापि वे ३२४ सी. ई. काकतीय वंशीय प्रमुख राजाओं की संक्षिप्त कहानी बताते हैं। उन्होंने माधव वर्मा का कार्यकाल १२० वर्ष बताया है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है की माधव वर्मा ने १२० साल राज्यशासन चलाया।

ऐसा दिखाई देता है की माधववर्मा और उसके अज्ञात वंशजों ने १२० या वर्ष राज किया। माधववर्मा के १२० वर्षों के बाद राजा पद्मसेनने राज सिंहासन ग्रहण किया। इस तरह से, एकाम्रनाथ द्वारा दिया गया काकतीय राजाओं का कार्यकाल कुछ नहीं बल्की १००० वर्षों का काकतीय राजाओं का कालानुक्रमिक निरंतरता का एकत्रित विवरण है।

त्रिभुवनमल्ल के शासन के बाद ; प्रतापरूद्र चरित में कहा गया है की प्रोलरराज प्रथम ने शुभकृत संवत्सर में रोहिणी नक्षत्र, कृतिका कृष्ण पक्ष के द्वितीय चरण में ओरुंगुल (वारंगल) शहर की स्थापना की। यह तारीख २२ ऑक्टोबर, १०६२ सीई निकल जाती है। राजा प्रोला द्वितीय को दो पुत्र थे। रुद्रदेव और महादेव रुद्रदेव ने अपने पिताजी का कत्ल किया और राज सिंहासन पर कब्जा किया। रुद्रदेव के राज्यकाल के बाद उनके छोटे भाई महादेव राजा बने। देवगिरी के राजाओं के साथ हुए युद्ध में महादेव मारा गया। रुद्रदेव का पुत्र गणपति, महादेव का उत्तराधिकारी बना। गणपति ने देवगिरी के राजा का पराभव किया और उसकी पुत्री रुद्रम्मा महादेवी के साथ विवाह किया।

राजा गणपती को मुम्मम्मा नामक सिर्फ एक ही बेटी थी। गणपती के मृत्यु पश्चात उनकी पत्नी रुद्रम्मादेवी ने राज्यकारभार संभाला। गणपती की पुत्री मुम्मम्मा ने प्रतापरूद्र नामक पुत्र को आनंद संवत्सर, चैत्र शुक्ल पंचमी, गुरुवार, रोहिणी नक्षत्र के मुहूर्तपर जन्म दिया। तब रवि, मंगळ और गुरु (बृहस्पति) उच्च के थे और शनि स्वगृही थे। यह तारीख ११ एप्रिल १२५७ सीई है।

एकाम्रनाथ दर्शाता है की प्रतापरुद्र ने १२०५ शकांत में राज्यसिंहासन ग्रहण किया हालही में प्राप्त हुए चंदुपतल शिलालेख के अनुसार रुद्रम्मादेवी की मृत्यु शकत १२११, विरोधी संवत्सर मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में बारहवी तिथी पर हो गयी थी।

यह तारीख २५ नोवेंबर १२८९ सीई निकाल आती है। प्रतापचंद ने विशालाक्षी से विवाह किया; उसे दो पुत्र विरुपाक्ष और वीरभद्र थे। प्रतापरुद्र को येन्नमदेव नामक एक भाई था। राजा प्रतापरुद्र ने राजा कटक और राजा पंडया को पराभूत किया। उसने अपने राज्य का रामेश्वरम तक विस्तार किया। विजयनगर को राजा नरसिंहराय और उनका भतिजा नरसिंहदेव प्रतापरुद्र के समकालीन थे। उसने महाराष्ट्र और 'गुजराथ के परसीराजू को (एक फारसी राजा) अपने अधीन किया। एकाम्रनाथ स्पष्ट रूप से कहते हैं की, मालेखान दिल्ली का सुलतान था और प्रतापरुद्र का समकालीन था। मालेखान ने शायद के १३१०-१३३० के दरम्यान दिल्ली पर राज्य किया।

दिल्ली सुलतान मालेखान ने काकतीय राज्य पर आक्रमण करने के लिये सैन्य भेजा। उसी वक्त राजा कटक ने भी एकशीला नगरी (वारंगल ) पर हमला चढ़ाया। प्रतापरुद्र ने विजयनगर के राजा नरपती राय से साहाय्यता माँगी। नरपतीराय ने कटक राजा मुकुंदसुंदर को पराभूत किया। पद्मनायक राजाओं और भोजरेडी इ. ने प्रतापरुद्र की साहाय्यता की।

उल्लखखान ने प्रतापरुद्र को युद्ध के मैदान में बंदी बना लिया है। (रुधिरोगरी संवत्सर, अश्वयुज शुक्ल द्वितीया गुरुवार याने ४ सप्टेंबर, १३२३ सीई के दिन) और उसे दिल्ली सुलतान के दरबार में भेज दिया। बाद में दिल्ली सुलतान की माँ को सलाह पर प्रतापरुद्र को छोड़ दिया गया। तदपश्चात प्रतापरुद्र दिल्ली से काशी यात्रा पर निकल पड़ा। उसने मणिकर्णिका घाट पर गंगास्नान किया और विश्वनाथ मंदिर में पूजा की। एकशीलानगरी में वापस पहुँचने के बाद अपने पुत्र वीरभद्र का राज्याभिषेक किया। अपनी पुत्री रुद्र महादेवी का नरपतीराय के साथ विवाह रचाया। प्रतापरुद्र और उसकी पत्नी विशालाक्षी, दोनों की माघ शुक्ल सप्तमी रुधिरौदरी संवत्सर में मृत्यु हो गयी। (२ फेब्रुवारी, १३२४ सी ई )

एकाम्रनाथ के अनुसार तेलगु कवी तिकण्णा सोमयाजी का काकतीय राजा गणपतीदेवा, रुद्रम्मादेवी और प्रतापरुद्र का समकालीन था। हम सामान्यतः तिकण्णा सोमयाजी का काल १२२५-१३०५ सी ई निश्चित कर सकते हैं। सकवेल्ली मल्लिकार्जुन भट्ट, पालकुर्ती सोमनाथ, रंगनाथ,



कृष्णम्माचारी और भास्कर प्रतापरुद्र के समकालीन थे। एकाम्रनाथ खुद पालकृती सोमनाथ का शिष्य था। एकाम्रनाथ हमें ये भी बताते हैं की तेलगु कवयित्री मोल्ला प्रतापरुद्र की समकालीन थी। तिकण्णा की कृपा से मोल्ला प्रतापरुद्र के राजदरबार में मुख्य कवयित्री बनी। उसने तेलगु भाषा में रामायण लिखा जो मोल्ला रामायण के नाम से जाना जाता है। उसने एक लेख भी 'वाचन कवित्वम' में लिखा। महान कवी पोतना, जिन्होंने ने भागवत पुराण तेलगु में लिखा, से प्रेरणा की थी। उसने पोतना के बहनोई श्रीनाथ का भी उल्लेख किया।

श्रीनाथ के दादाजी कमलनाथ काकतीय राजा सार्वभौम के समकालीन थे। वह विजयनगर साम्राज्य के सामंत राजा तेलुगुराय के समकालीन थे शंभुराया के पुत्र तेलुगुराम का शिलालेख शक १५३० का मिलता है, और उसके पिताजी का शिलालेख १३४८ शक का मिलता है। प्रमाणों के अनुसार तेलुगुराय ने अपने पिता के बाद शक १३५० से उत्तराधिकार संभाला। तेलुगुराय के और भी शिलालेख शक १३६०, १३६४ और १३६६ हूँ की तारीख में मिलते हैं। तेलुगुराय का पुत्र तिरुमलाथा देवा का शिलालेख शक १४०५ का है। कवी मोल्ला ; काकतीय राजा प्रतापरुद्र द्वितीय के समकालीन (शकांत १२०५-१२४५) श्रीनाथ का संदर्भ देते हैं तो तेलुगुराय के शिलालेख शक युग को सिद्ध करते हैं इसमें कोई शक नहीं है ( ५८३ ईसापूर्व) इसप्रकार हम साधारणरूप में श्रीनाथ का जीवनकाल शक १३१० - १४०० (७२७-८१७ सीई) के आसपास निर्धारित कर सकते हैं। श्रीनाथ ने विजयनगर के राजा देवराय द्वितीय के दरबार में भेंट दी और कवी सार्वभौम गौड डिंडिमभट्ट को पराभूत किया।

वारंगल के उत्तरीय काकतीय राजाओं की कालगणना एकाम्रनाथ आगे देते हैं।

### शकांत काल (७८ सीई)

१. प्रोल राजा	८९२-९६४
२. रुद्र महाराज	९६४ - १०५२
३. महादेव	१०५२ - १०५९
४. गणपतीराजा	१०५२ - ११२७

५. रुद्रम्मा महादेवी	११२७- १२०५
६. प्रतापरुद्र	१२०५ १२८९

ऐसा प्रतीत होता है की किसी नकल उतारनेवाले ने गलती से काकतीय राजाओं के जीवन काल को ही उनके राज्य शासन काल मान लिया है। दुर्भाग्यवश हमारे पास एकाम्रनाथ के प्रतापरुद्र चरित के सिर्फ एक दो शिलालेख या पांडुलिपियाँ है।

लेकिन बाद के काकतीय राजाओं का कालक्रम इन शिलालेखीय प्रमाणों के आधार पर सत्यतापूर्वक स्थापित किया जा सकता है।

## १५.२ काकतीय राजाओं के शिलालेख

आज तक चारसौ से जादा काकतीय शिलालेख प्राप्त हुए हैं। में आय सी एच आर ने २०११ में 'वारंगल के काकतीयों के शिलालेख' नामक एक संदर्भ ग्रंथ प्रकाशित किया है जिसमें ३६७ शिलालेख है। बहुसंख्य शिलालेख शकांत युग (७८ सीई) से संबंधित है। लेकिन कुछ काकतीय शिलालेख शक युग (५८३ ईसापूर्व) काल के है।

इतिकाल शिलालेख काकतीय राजा गुंडाराज हरिहरदेवराज के बारे में है जो शक १०७१ (१०६१ ?) याने ४८७-४८८ सी ई में राज्यशासन करता था। यह शिलालेख कृत्तिका अमावास्या गुरुवार को हुए सूर्यग्रहण का संदर्भ देता है। शक १०७१ विभव संवत्सर यह तारीख १ नोव्हेंबर ४८७० सीई निकलती है। कृत्तिका अमावस्या पर हुए सूर्यग्रहण का शकांत १०७१ या १०६१ में नहीं दिया जा सकता।

नळगोंडा जिले में अनमला ग्राम से प्राप्त एक शिलालेख में भी शक १०५० के सूर्यग्रहण का संदर्भ मिलता है। सूर्यग्रहण ८ मे ४६८ सीई के दिन हुआ था।

कुछ शिलालेख काकतीय राजा बेटा और प्रोला या प्रोलारासा शक युग और चालुक्य विक्रम युग का संदर्भ देते है और त्रैलोक्यमल्ल, त्रिभुवनमल्ल और भूलोकमल्ल जैसे चालुक्य राजाओं के नाम देते हैं। बेटा और प्रोला चालुक्य राजा कल्याण के सामंत थे। निःशंकता से ये शिलालेख शक युग ५८३

ईसापूर्व से संबंध रखते हैं। पोलालारसा का सानिगरम शिलालेख में शक १०५० में हुए कीलक संवत्सर, अश्वयुज अमावस्या रविवार को हुए सूर्यग्रहण का तपशील मिलता है। यह तारीख १ नोव्हेंबर, ४६८ सीई निकलती है। बेटा के काङ्गीपेट शिलालेख ये नोंद करता है की कृतिका अमावस्या शक १०१२ रविवार को सूर्यग्रहण हुआ था। यर तारीख शायद १२ डिसेंबर ४२९ सी ई निकलती है।

काकतीय शिलालेखों का वर्गीकरण करने का और एक संदर्भ है। चूंकि ओगल्लु या वारोगल शहर की स्थापना १०६२ सी ई में हुई थी इसलिये निःसंदेहता पूर्वक उनका संदर्भ शकांतयुग काल से है।

काकतीय शिलालेखों की सटीक तारीखों को तार्किक रूप से स्थापित करने के लिए और व्यापक शोध की आवश्यकता है। शिलालेखीय प्रमाणों के आधार पर वारंगल के काकतीय राजाओं का कालक्रम हम पुनर्निधारित कर सकते हैं।

राजाओं के नाम	सी.ई. में
१. बेटा प्रथम	१०२५-१०५२
२. प्रोला प्रथम	१०५२-१०७६
३. बेटा द्वितीय	१०७६-११०८
४. प्रोला द्वितीय	११०८-११५७
५. रुद्रदेव	११५८-११९५
६. महादेव	११९६-११९९
७. गणपतिदेवा	११९९-१२६२
८. रुद्रम्मा देवी	१२६२-१२८६
९. प्रतापरुद्र	१२८६-१३२४

## युनिट १६ : विजयनगर साम्राज्य

---

### १६.१ विजयनगर साम्राज्य का उदय :

आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में पाया गया हरिहर प्रथम का कपालुरु ग्रँट विजयनगर साम्राज्य का सबसे पुराना ज्ञात ताम्रपटलेख है जो शक १२५८ का है।

चिकबल्लापुर के बागेपल्ली में पाया गया, येरागुंडी ग्रँट भी कपालुरु ग्रँट से साधर्म्य रखता है और उसिका - शक भी १२५८ ही है।

‘नृप शकस्य वत्सरात’ इस में युग का संदर्भ स्पष्ट रूप से शक युग (५८३ ईसा पूर्व) को दर्शाता है ना की शकांत युग (७८ सी ई) इसलिये दोनों ग्रँट; कपालुरु ग्रँट और येरागुंडी ग्रँट एकही तारीख रंगित करते हैं जो ८ एप्रिल, ६७५ सी ई याने *धात्री संवत्सर, वैशाख शुक्ल सप्तमी, पुण्य नक्षत्र और हरी लग्न*।

यह गंभीर चिंतन का मुद्दा है की एहेम इतिहासज्ञोंने शकांत युग (७८ सी ई) को ध्यान में लेते हुए यह तारीख १८ एप्रिल, १३३६ सी ई निकाली है। परिणामस्वरूप इतिहासज्ञोंने ये निष्कर्ष निकाला है की विजयनगर साम्राज्य शकांत १२५८ में स्थापित हुआ था याने की १३३६ सी ई।

रोचक बात यह है की कपालुरु ग्रँट और येरागुंडी ग्रँट ने निम्नलिखित सत्यता रेकॉर्ड कर रखी है हो इतिहासज्ञोद्वारा अनदेखी रह गयी थी।

- हरीहर प्रथम के पूर्वज सुप्रसिद्ध यादव वंश से थे। यह बहुत सुपरिचित सत्य है की द्वारका शहर के डूब जाने के बाद यादव वंश के अनेक प्रतिष्ठित घरानों ने दक्षिण भारत की तरफ प्रयाण किया था।
- ये ग्रँट हमें बताती है की बुक्का प्रथम और उसका पुत्र संगमा प्रथम राजा थे और उनकी राजधानी ‘कुंजरकोणपुरी’ थी जिसे अनेगुंडी नाम से भी जाना जाता है। सच बात यह है की संगमा प्रथम ने सूत्रमधाम, अंग और कलिंग को जीत लिया था और बहुत सारे सामंतों को भी। इस तरह हम ये निष्कर्ष निकालते हैं की संगमा प्रथम उसके राजवंश का संस्थापक था।

- ये ग्रँट हमें तपशील देते हैं राजा हरिहर प्रथम और विद्यारण्य की मुलाकात कैसे हुई थी। राजा हरिहर प्रथम विद्यारण्य से तब मिला था जब विद्यारण्य एक शिकार पर चले थे। इससे स्पष्ट होता है की विद्यारण्य को मिलने से पहले ही हरिहर राजा था।
- इन ग्रँट में रस्तेमाल किय शब्द; आदिदेस और उवाच (लिट-लकार में विद्यारण्य के लिये) यह दर्शाते हैं की शायद विद्यारण्य की मृत्यु शक १२५८ से पहले १० या १५ साल हुई होगी याने की ६७५ सी ई। जिससे यह दर्शित होता है की, येरागुंडी ग्रँट बताती है की येरागुंडी अग्रहार का नाम हरिहर प्रथम ने 'विद्यारण्यपुरा' रखा था जिससे यह दर्शित होता है की विद्यारण्य की मौत तब तक हुई होगी क्यों की सामान्यतः अग्रहारों को महान व्यक्तियों की याद में उनके नाम दिये जाते थे।
- यह उल्लेख भी मिलता है की अपने शिकार यात्रा के दौरान हरिहर प्रथम एक खरखोश को देखकर चकित रह गया जो उसका पीछा करते हुए कुत्तों के खिलाफ हो कर निडरता से उनके सामने गया।

हरिहर प्रथम ने ये किस्सा विद्यारण्य यती को बताया। तब विद्यारण्य यती मुस्कुराये और उन्होंने हरिहर प्रथम को तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर विद्यानगर नामक नये शहर स्थापित करने की सलाह दी जिसे नौ प्रवेश द्वार हो। 'कुंजरकोणपुरी' तुंगभद्रा नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित थी। इसके अनुसार हरिहर प्रथम ने एक भव्य नगर 'विद्यानगर' का निर्माण किया और तत् सासन = विद्यारण्य के धर्म सिंहासन को स्थापना की। यही वजह है की शृंगेरी मठ के शंकराचार्य को 'कर्नाटक राज्य प्रतिष्ठापनाचार्य' की उपाधी थी। और एक शिलालेख में उल्लेख मिलता है की विजयनगर का 'रत्न सिंहासन' पहले विद्यारण्य के लिये बनाया गया था (विद्यारण्य कृत तस्यम्)।

कुछ इतिहासकारोंने अनुमान लगाया की विद्यारण्य ने विद्यानगर का निर्माण किया : रस आधारपर की उन्होंने विद्यारण्य कृतम - को तृतीया तत्पुरुष जैसे लिया। प्रत्यक्षात यह चतुर्थी तत्पुरुष समास है ना की तृतीय तत्पुरुष समास (विद्यारण्य के लिये)।

विद्यानगर शहर को विद्याशंकर के नाम पर जाना जाता है ना की विद्यारण्य के नाम से। ये बिल्कुल गलत है की विद्यारण्य ने हरिहर प्रथम से नये नगर निर्माण करने और उसका नाम खुद के नाम से रखने के लिये कहा।

- यह ग्रँटस् ये भी सूचित करती है की हरिहर प्रथम ने शायद विद्यानगर में विद्याशंकर का अप्रतिम मंदिर बनवाया।
- यह ग्रँटस् स्पष्ट रूप से यह बताती है की हरिहर प्रथम ने कुंजरकोणपुरी से अपने राज्यशासन की शुरुआत की। विद्यारण्य से मिलने के बाद हरिहर प्रथम ने 'विद्यानगर' शहर के निर्माण का आदेश दिया। 'विद्यानगर' शहर के निर्माण में 15 से 20 वर्ष का समय लगा होगा इसमें कोई शक नहीं।

यह ग्रँट विद्यानगर की राजधानी से ६७५ सी ई में दि गयी (शक १२५८) थी। इसका ये अर्थ निकलता है की विद्यानगरी का निर्माण का लगभग पुरा हो गया था और हरिहरने उसकी राजधानी कुंजरकोणपुरी से विद्यानगर में स्थलांतरित की थी।

- कपालुरु ताम्रपट लेख नेल्लोर जिले मे स्थित एक अग्रहार से संबंधित है जिससे ये स्पष्ट होता है की हरिहर प्रथम का राज्य आंध्र प्रदेश के सागरी तटों तक फैला हुआ था।
- कपालुरु और येरागुंडी ग्रँटस् हरिहर प्रथम द्वारा तैयार किये गये १६ ग्रँटस् में से दो है ; ८ एप्रिल ६७५ सी ई के तारीख पर या उस से पहले बनाये गये थे। दुर्भाग्यवश उन सोलह में से सिर्फ दो आज उपलब्ध है।

उपर उल्लेखित पुरालेखा प्रमाणों से ये सिद्ध होता है की हरिहर प्रथम ने विद्यारण्य की सलाह मानते हुए विद्यानगर शहर का निर्माण किया। उसके उपरांत बुक्का द्वितीय ने प्राचीन शहर हस्तिनावती या हस्तिनापूर शहर के नजदीक प्राचीन शहर का पुनर्निर्माण किया और संस्कृत में नाम दिया विजयनगर और कन्नड में हम्पा/हम्पी। धीरे धीरे दो शहर आपस में मिल गये।

दुर्भाग्य से पुरालेख प्रमाणों के होने के बावजूद इतिहासज्ञोंने विजयनगर साम्राज्य के उगम के बारे में अनेक कपोलकल्पित सिद्धांत प्रसारित किये हैं।

जहाँ तक विजयनगर शहर के निर्माण के शुरुवात की तारीख का संबंध है; कपालुरु और येरागुंडी ग्रँट्स में पाय तपशील से अनुसार कम से कम १५-२० साल पहले होनी चाहिये याने की शक १२५८ (६७५ सी ई)

इसलिये हम विजयनगर / विद्यानगर शहर का स्थापना काल ६५५-६६० सी ई निश्चित कर सकते हैं।

## युनिट १७ : यादव राजवंश

---

खानदेश (महाराष्ट्र के जलगाँव, धुले, नंदुरबार और मध्यप्रदेश का बुन्हाणपूर जिला) में पाए गए गोवाना तीन (III) का शिलालेख शक १०७५ में दिनांकित है।

स्पष्ट रूप से इसका संबंध शक युग से शक-भूपाल-काल ५८३ ईसापूर्व दर्शाता है न की, शकांत युग (७८ सीई)। इसलिये यह शिलालेख ४९१-४९२ सीई याने शक १०७५ में लिखा गया था।

खानदेश में चालीसगाँव के नजीक पटना में पाया गया शिलालेख यादव राजा सिंघन के शासन काल में (शक ११२८/५४४-५४५ सीई) गोवाना III के पुत्र सोईदेव और हेमादिदेव द्वारा लिखा गया। यह शिलालेख श्रावण मास की पौर्णिमा तिथी पर; जब चंद्रग्रहण था, लिखा गया था।

शक ११२८ वर्तमान या बीता हुआ मानते हुए, यह तिथी ६ सितंबर ५४५ सीई होनी चाहिये। महिना श्रावण नहीं बल्कि अश्विन होना चाहिये जिसे शिलालेख के मूल लेखन से सत्यापित करना जरूरी है।

दिलचस्प बात यह है की पटना के शिलालेख में यादव राजा सिंहघन के मुख्य ज्योतिषी चांगदेव का उल्लेख है। चांगदेव सुप्रसिद्ध भास्काराचार्य के पोते थे जिनका जन्म शक १०३६ (४५२-४५३ सीई) में हुआ था। (*रस गुण पूर्ण मही सम शक नृप समार*)

अल बरुनी (१०३० सीई) ने भास्काराचार्य और उनके द्वारा लिखी किताब 'करणकुतूहल' का उल्लेख सौ वर्षों से अधिक समय से उनके अपने देश में ज्ञात खगोल विज्ञान के कार्य के रूप में किया है। यह सबूत है कि भास्काराचार्य का जन्म अल बरुनी से बहुत पहले हुआ है।

सारंगदेव ने यादव राजा सिंघाना के शासनकाल के दौरान "संगीतरत्न" ग्रंथ रचा था। इसमें यादव राजा भिल्लमा, सिंघाना और जैत्र शहर का उल्लेख आता है। राजा भिल्लमा का पुत्र जयतुगी को 'जैत्रपाल' की उपाधी दी गई है जिसका अर्थ है की जैत्र शहर पर राज करनेवाला राजा।



शिलाहार अपराजिता के जंजिर अनुदान (सेट १ और २: को शकांत ९१५ में जारी किया गया) में खानदेश का उल्लेख “भिल्लमिया देश” ऐसा आता है। (*आ लातदेशाद भूवी भिल्लमिया देसम विधायाविधीमात्र यस्य*)

खानदेश को भिल्लमिया देश के नाम से जाना जाता था क्यों की भिल्लमा राजा ने यादव साम्राज्य की छठी शताब्दी इस्वी में स्थापना की थी। भिल्लमा एक/प्रथम यादव साम्राज्य की छठी शताब्दी इसवी में स्थापना की थी। भिल्लमा एक/प्रथम यादव साम्राज्य की छठी शताब्दी में स्थापना करनेवाले और पहले राजा थे। उन्हो ने शक ११०७ से शक १११४ (५२३-५३ सीई) तक राज किया। उसके पुत्र जैतुगी या जैयपाल प्रथम ने उसके बाद शक १११४ से ११२४ (५३०-५४० सीई) शासन किया।

महान यादव राजा सिंधाना, जैत्रपाल प्रथम का पुत्र, उसने ४५ साल तक शासन किया। (शक ११२४ से ११६९; ५४०-५८५ सीई) उसने राजा बल्लाल, (आंध्र के राजा) राजा कक्कल (ब्रह्मागिरी के राजा) को पराभूत किया और शिलाहार के राज भोज को कारावास में डाला। यादव राजा रामचंद्र के पुरुषोत्तम पुरी अनुदान से पता चलता है की कृष्ण, सिंधन के पौत्र और जैत्रपाल द्वितीय के पुत्र, शक ११६९ में राजा बने (५८५-५८६ सीई) कृष्ण ने गुर्जर, माळवा, चोल और कौशल के राजाओं को अपने अधीन कर लिया था ऐसा प्रतीत होता है।

कृष्ण के मृत्यु के बाद उनके छोटे भाई महादेव सिंहासन पर बैठे। महादेव के कालेगाव ग्रंट के अनुसार शक ११८२ में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया के दिन महादेव का राज्याभिषेक हुआ (५९९-६०० सीई) २९/३० जुलै सीई)

महादेव के बाद उनके पुत्र अम्मान ने राज किया लेकिन पुरुषोत्तमपुरी की ग्रंट से मालूम होता है की कृष्ण का पुत्र रामचंद्र ने बल का प्रयोग कर के अम्मान से राज्य छीन लिया। रामचंद्र ने ४० से भी जादा साल (शक ११९३; ६०९-६१० सी ई से शक १२३२; ६४९-६५० सीई तक) शासन किया।

### १७.१ यादव साम्राज्य का कालक्रम :

	शक काल (५८३ बीसीई)	सीई
भिल्लिमा	११०७-१११४	५२३-५३० सीई
जैत्रपाल प्रथम/जैतुगी	१११४ -११२४	५३०-५४० सीई
सिंघाना	११२४-११६९	५४१-५८५ सीई
कृष्णा	११६९-११८२	५८५-५९९ सीई
महादेव	११८३-११९२	५९९-६०९ सीई
अम्माना	११९२-११९३	६०९-६१० सीई
रामचन्द्र	११९३ -१२३३	६१०-६५० सीई

पुरुषोत्तमपुरी ग्रँट हमें कहता है कि रामचंद्र यादव वंश के महान शासक थे। रामचंद्र ने एक पल में ही महान व्यापक देश दहल के राजा को जीत लिया और भांडागर देश के राजा को हराया। राजा वज्रकारा को वश किया और राजा गोप और पल्ली राजा को पराभूत किया। कान्यकुब्ज के राजा को भी उसने हराया, महिमा के राजा को जीत लिया और बल से शक्तिशाली राजा संगमा को कब्जे में लिया और खेता के शासक का नाश किया।

उन्होंने टोल के बारे में पारंपरिक नियमों को निरस्त किया, सभी अग्रहारों को करों से मुक्त कर दिया, वाराणसी को म्लेच्छों से मुक्त किया और सारंगधर के लिये एक सुवर्णमंदिर का निर्माण किया। रामचंद्र ने खुद प्रौढ प्रताप चक्रवर्ती और महाराजाधिराज होने का दावा किया।

पुरुषोत्तमपुरी ग्रँट भाद्रपद महिने की शुक्ल पक्ष की ग्यारहवीं तिथी शक १२३२ (६४६-६५० सीई) की ओर निर्देश करते हैं। यह तारीख २३/२४ ऑगस्ट ६४९ सीई से मेल खाती है।

संयुक्त शब्द 'कालातीत' जो यहाँ लिखा गया है; सप्तमी तत्पुरुष प्रयोग है ना की द्वितीय तत्पुरुष। इसलिये हमें इसका अनुवाद शक राजा के युग में १२३२ वर्ष बीतने के रूप में करना चाहिये न की शक राजा के युग के अंत से १२३२ वर्ष के रूप में।

यादव शिलालेखों में उल्लेखित सूर्य ग्रहणों का सत्यापन योग्य विषय इस प्रकार है।

## १७.२ शिलालेख

**भिल्लमा के सामंत का निंबल शिलालेख :** भिल्लमा का तीसरा प्रतिगामी वर्ष शक १११० (५२६-५२७ सीई) भाद्रपद, सूर्यग्रहण और संक्रमण (तुला संक्रांती) की अमावस्या का दिन तिथी। तारीख २२ सप्टेंबर ५२६ सीई से मेल खाती है।

**जैतुगी के सामंत का देवूर शिलालेख :** शक ११३६ (५५४-५५५) सीई चैत्र मास की अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण तारीख 19 मार्च 554 सीई से मेल खाती है।

**जैतुगी के सामंत का देवांगव अभिलेख :** शक ११२१ (५३७-५३८ सी ई) माघ मास की अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण तारीख १५ फरवरी, ५३८ सीई से मेल खाती है।

**सिंधाना के खिद्रापुर शिलालेख :** शक ११३६ (५५४-५५५ सीई) चैत्र मास की अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण तारीख १९ मार्च सी ई से मेल खाती है।

**कृष्ण का जेट्टिगी शिलालेख :** शक ११७८ (५९४-५९५ सीई), पौष मास की अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण तारीख १६ जनवरी, ५९५ सीई से मेल खाती है।

**महादेव का हुलगुर शिलालेख :** शक ११८९ (६०६-६०७ सीई) ज्येष्ठ महिने की अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण तिथी ११ जून ६०६ सी ई से मेल खाती है।

शुरुआती राजाओं का कार्यकाल रामचंद्र के मृत्यु के बाद समाप्त हो गया। बाद में ऐसा दिखाई देता है की यादव राष्ट्रकूटों के सामंत बन गये। भिल्लमा के शकांत ९९१ में लिखित कलास-

भद्रुका शिलालेख और सेऊनाचंद्र द्वितीय के ग्रँट में शकांत ९९१ (१०६९ सीई) में लिखित शिलालेख से इस बात का सही रूप से निर्देश होता है।

यह भी प्रतीत होता है की यादवों के परिवार की एक शाखा यादव-राष्ट्रकूट परिवार की मिश्र शाखा के रूप में विकसित हुई। सेजचंद्र ॥ बेसिन ग्रँट हमें ये भी बताती है की यादवों ने पश्चिम के चालुक्यों के साथ भी वैवाहिक रिश्ते जोड़े थे।

मॅकेंज़ी ने एकत्रित किये हुए पांडुलिपीयों में १८ यादव राजाओं की सूची मिलती है जिन्होंने शकांत ७३० से १०१३ (८०८ सीई से १०९१ सी ई) तक शासन किया था।

इस सूची का और संशोधन और अभ्यास होना जरूरी है।

शकांत ११७६ (१२५४ सीई) में कन्नडा के मेथी शिलालेख से समझता है की एक यादव राजा कन्नडा पर १२५४ सीई के आसपास शासन कर रहा था।

## Reference List:

**1. Glorious Epoch**

by S. D. Kulkarni, Bhishma Prakashan

**2. The\_Chronology\_of\_India\_From\_Mahabharata Vol 1**

by Vedveer Arya

**3. The\_Chronology\_of\_India\_From\_Mahabharata Vol 2**

by Vedveer Arya

**4. Economic History of India**

by S. D. Kulkarni, Bhishma Prakashan

**5. Puranas**

by S. D. Kulkarni, Bhishma Prakashan

**6. Hindu Civilization**

by Sudhakar Raje